इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ

एम टी टी-020

अनुवाद प्रक्रिया

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

प्रो. मैनेजर पाण्डेय
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. गंगा प्रसाद विमल
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. सी.पी. शिवदासन
पूर्व प्रोफेसर
रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ इंगलिश, बंगलौर

प्रो. हरीश नारंग
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. चमन लाल
पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

प्रो. हरिमोहन शर्मा
हिंदी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. रामबक्ष
अध्यक्ष भारतीय भाषा केंद्र
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

डॉ. पूरन चंद टंडन
हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

श्री कुमार विक्रम
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

प्रो. जवरीमल पारख
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

प्रो. रीतारानी पालीवाल
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

संकाय सदस्य,
अनुवाद अध्ययन
एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय

डॉ. देवशंकर नवीन

डॉ. जगदीश शर्मा

डॉ. मनजीत बरूआ

डॉ. हरीश कुमार सेठी

डॉ. ज्योति चावला

कार्यक्रम समन्वयक	पाठ्यक्रम समन्वयक	पाठ्यक्रम संपादक
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय डॉ. जगदीश शर्मा अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू	डॉ. जगदीश शर्मा एसोसिएट प्रोफेसर अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू	प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी प्रोफेसर केंद्रीय हिन्दी संस्थान, दिल्ली

पाठ लेखन

डॉ. सुरेश सिंहल, एसोसिएट प्रोफेसर, वैश्य कॉलेज रोहतक, हरियाणा	इकाई 1
डॉ. सी. अन्नपूर्णा, एसोसिएट प्रोफेसर, अनुवाद प्रौद्योगिक विभाग महात्मा गाँधी अ.हि.वि.वि. वर्धा	इकाई 2
डॉ. पूरनचंद टंडन, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	इकाई 3
डॉ. कुसुम अग्रवाल, पूर्व सहायक निदेशक, के. अ. ब्यूरो, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली	इकाई 4, 5
डॉ. सी. अन्नपूर्णा, वर्धा, एवं डॉ. जगदीश शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, अ. अ. प्र. वि., इग्नू	इकाई 6
श्री सुशान्त सुप्रिय, संयुक्त निदेशक (निर्वचन), लोकसभा, नई दिल्ली एवं डॉ. जगदीश शर्मा	इकाई 7
डॉ. गोविंद स्वरूप गुप्त, पुनर्लेखन, डॉ. जगदीश शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, अ. अ. प्र. वि., इग्नू	इकाई 8
डॉ. गोविन्द स्वरूप गुप्त, पुनर्लेखन, डॉ. जगदीश शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, अ. अ. प्र. वि., इग्नू	इकाई 9
डॉ. मंजीत बरुआ, असिस्टेंट प्रोफेसर, जे.एन.यू. इकाई पुनर्लेखन प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी	
प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी, प्रोफेसर, जे.एन.यू. इकाई पुनर्लेखन प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी	इकाई 10
प्रो. ठाकुर दास, प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान, नई दिल्ली	इकाई 11
डॉ. हरीश कुमार सेठी, असिस्टेंट प्रोफसेर अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू	इकाई 12
श्री करुणेश अरोड़ा, संयुक्त निदेशक, प्रगत संगणन विकास केंद्र, नोएडा, डॉ. अनिल ठाकुर, असिस्टेंट प्रोफेसर, काशी हिंदू त्रिवविद्यालय, बनारस	इकाई 13

(सुश्री. आरती अनुपम और चन्दन कुमार, : 3 इकाइयों हेतु अनुवाद सहयोग)

सामग्री उत्पादन

श्री वाई. एन. शर्मा सहायक कुलसचिव, एमपीडीडी, इग्नू, नई दिल्ली	श्री सुधीर कुमार अनुभाग अधिकारी, एमपीडीडी, इग्नू, नई दिल्ली

मई, 2015

© *इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2015*

ISBN: 978-81-266-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य के किसी भी अंश को किसी भी रूप में कापीराइट धारक से लिखित में अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ या किसी अन्य माध्यम से पुनरूपादित न किया जाए।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय पाठ्यक्रमों पर और कोई अन्य सूचना मैदान गढ़ी, नई दिल्ली-110068 स्थित विश्वविद्यालय के कार्यालय या इग्नू की सरकारी वेबसाइट www.ignou.ac.in से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली की ओर से डॉ राजेन्द्र प्रसाद पाण्डे, निदेशक, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ एवं रजिस्ट्रार, एमपीपीडी, इग्नू, नई दिल्ली द्वारा मुद्रित और प्रकाशित।

लेजर टाईपिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, वी-166, सैक्टर-ए, भगवती विहार, उत्तम नगर, (नजदीक सेक्टर 2, द्वारका), नई दिल्ली-110059

मुद्रक :

विषय सूची

खंड 1	**अनुवाद प्रक्रिया-1**		**7**
	इकाई 1	अनुवाद की प्रक्रिया एवँ प्रविधि	9
	इकाई 2	अनुवाद के प्रकार	37
	इकाई 3	अनुवाद की सीमाएँ और अननुवाद्यता	63
खंड 2	**अनुवाद प्रक्रिया-2**		**69**
	इकाई 4	अनुवाद पुनरीक्षण (Vetting of Translation)	71
	इकाई 5	अनुवाद मूल्यांकन (Evaluation of Translation)	88
	इकाई 6	अनुवाद समीक्षा (Criticism of Translation)	99
खंड 3	**अनुवाद की विधाएँ**		**115**
	इकाई 7	निर्वचन : संकल्पना, प्रक्रिया और प्रकार	117
	इकाई 8	सारानुवाद और संक्षिप्तानुवाद	136
	इकाई 9	अनुसृजन और अनुवाद	148
	इकाई 10	रूपांतरण और अनुवाद	162
	इकाई 11	डबिंग और सब-टाइटलिंग की प्रक्रिया और अनुवाद	
खंड 4	**मशीनी अनुवाद**		**177**
	इकाई-12	मशीनी अनुवाद : स्वरूप एवं विकास	179
	इकाई 13	मशीनी अनुवाद : पद्धतियाँ और प्रकार	193
	इकाई 14	मशीनी अनुवाद : प्रक्रिया एवं चुनौतियाँ	216

पाठ्यक्रम परिचय

अनुवाद अध्ययन में एम.ए. कार्यक्रम के पाठ्यक्रम संख्या दस से उन्नीस तक अनुवाद पर सैद्धांतिक, ऐतिहासिक, भाषावैज्ञानिक, व्यावहारिक अनुवाद तथा अनुवाद प्रकार और अनुवाद संबंधी साधनों पर चर्चा के उपरांत अनुवाद की व्यावहारिक प्रक्रिया पर भी चर्चा करना अपेक्षित है। इस कार्यक्रम का यह ग्यारहवाँ पाठ्यक्रम 'अनुवाद प्रक्रिया' शीर्षक से विद्यार्थियों को अनुवाद की प्रक्रिया एवं पद्धति, अनुवाद प्रकारों, अनुवाद की सीमाओं तथा अनुवाद में मूल्यांकन संबंधी साधनों एवं प्रक्रियाओं से परिचित कराएगा। इस पाठ्क्रम का उद्देश्य यह भी है कि अनुवाद अध्ययन से शिक्षार्थी अनुवाद की कुछ विशिष्ट विधाओं से अवगत हो सकें ताकि वे अनुवाद करते समय अनुवाद की विशिष्टताओं के अनुरूप दृष्टिकोण अपना सकें। इस कार्यक्रम में विशेष प्रविष्टि के रूप में मशीनी अनुवाद को भी संयोजित किया गया जो अनुवाद की एक महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकी अनुप्राणित अनुवाद विधा के रूप में स्थापित हो रहा है।

एक समन्वित प्रयास के रूप में यह कार्यक्रम शिक्षार्थियों को पिछले पाठ्यक्रमों से संचित जानकारी एवं बोधन को व्यावहारिक अनुवाद प्रक्रिया में परखने का मौका देगा। चार क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में चार खंड हैं जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :

खंड 1 अनुवाद प्रक्रिया-1 : इस खंड में तीन इकाइयाँ समाहित हैं। अनुवाद प्रक्रिया एवं प्रविधि के अंतर्गत अनुवाद की विभिन्न प्रक्रियाओं एवं प्रविधियों का व्यावहारिक अनुवाद के संदर्भ में परिचय दिया गया है। इसके अतिरिक्त अनुवाद प्रकारों के वर्गीकरण की रूपरेखा एवं आधार विस्तार से विवेचित किए गए हैं। अनुवाद की सीमाओं एवं अननुवाद्यता की स्थितियों की पहचान एवं उनके लिए अनुवादक द्वारा अपनाई जाने वाली कार्यनीतियों पर भी चर्चा की गई है। ऐसी आशा है कि शिक्षार्थी इस खंड को अपने अनुवाद कर्म के क्रम में एक आवश्यक साधन स्वरूप उपयोगी पाएँगे।

खंड 2 अनुवाद प्रक्रिया-2 : अनुवाद की पूर्णता तथा अनुवाद के गुणात्मक आयाम के कौन से चरण हैं तथा कौन-कौन से ऐसे मानक हैं जिन्हें पूरा करने पर ही अनुवाद एक पूर्ण एवं गुणात्मक उत्पाद का स्वरूप ग्रहण कर सकता है; ऐसे सभी चरणों एवं मानकों पर अनुवाद प्रक्रिया-2 शीर्षक के अंतर्गत चर्चा की गई है। इनमें अनुवाद पुनरीक्षण, अनुवाद मूल्यांकन तथा अनुवाद समीक्षा पर आधारित तीन इकाइयाँ हैं जो विस्तार से शिक्षार्थियों को अनुवाद के इन महत्वपूर्ण मानक उपागमों पर चर्चा का अवसर देंगी। अनुवाद अध्ययन के शिक्षार्थियों के लिए यह खंड इस दृष्टि से भी उपयोगी होगा कि वे अभ्यास के दौरान स्वयं यह जान सकेंगे कि उनका अनुवाद किन-किन परीक्षण और मानकता की कसौटियों से गुजरता है। इससे वे पर्याय चयन, भाषा प्रयुक्ति, संरचना एवं वाक्य गठन और प्रोक्ति आदि का अनुवाद करते समय ध्यान में रखेंगे।

खंड 3 अनुवाद की विधाएँ : पिछले कुछ पाठ्यक्रमों के साथ-साथ इस पाठ्यक्रम के खंड एक में आप विशेष रूप से अनुवाद प्रकारों तथा अनुवाद के व्यावहारिक प्रयोजन क्षेत्रों पर अध्ययन कर चुके हैं। तथापि इस खंड में अनुवाद की कुछ ऐसी विधाओं पर सामग्री प्रस्तुत की जा रही है जो अपने विशिष्ट प्रयोज्य क्षेत्रों के कारण विशेष अध्ययन की अपेक्षा रखती हैं। इस खंड में आप निर्वचन, सारानुवाद, अनुसृजन एवं रूपांतरण तथा डबिंग और सब-टाइटलिंग की प्रक्रिया तथा अनुवाद जैसी महत्वपूर्ण अनुवाद विधाओं पर अध्ययन करेंगे। ये विधाएँ कुछ मायनों में साहित्यिक व साहित्येतर दोनों ही प्रकार के अनुवाद पर लागू होती हैं। इस दृष्टि से व्यावहारिक अनुवाद में शिक्षार्थी जान सकेंगे कि इन विधाओं की जनकारी से वे अपने अनुवाद कर्म के क्षेत्र विशेष की जटिलताओं को पहचान सकेंगे और अपनी प्राथमिकताओं और रुचि के अनुसार क्षेत्र का चयन भी कर सकते हैं। साथ ही उन्हें अनुवाद के विशेष प्रयोजन क्षेत्रों की जानकारी भी मिलेगी।

खंड 4 मशीनी अनुवाद : एम.टी.टी-020 पाठ्यक्रम का यह अंतिम खंड है। इस खंड को विशेष प्रयोजन से इस पाठ्यक्रम में समन्वित किया गया है। आपने इस कार्यक्रम में अध्ययन के दौरान पाया होगा कि अनुवाद कर्म में अनेक साधनों का प्रयोग होता है, जिनमें अनुवादक की अपनी योग्यता, दक्षता, कौशल एवं ज्ञान के अलावा कंप्यूटर

साधित ऑफ-लाइन या ऑन-लाइन साधन भी शामिल होते हैं। इन्हीं साधनों पर चर्चा क्रम में कंप्यूटर तथा उससे जुड़ी अनेक प्रणालियों का उल्लेख भी किया गया है। वैश्विक बहुभाषिकता के आलोक में अनुवाद की विशाल माँग के सामने उपलब्ध अनुवाद सेवा की अल्पता के परिणामस्वरूप आज मशीन द्वारा अनुवाद कार्य को सुगमित, सहायित और संवर्धित करने के साथ स्वयं मशीन द्वारा अनुवाद किए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। अतः इस खंड में हमने तीन इकाइयों को शामिल किया है जिनमें मशीनी अनुवाद का स्वरूप, मशीनी अनुवाद की विकास यात्रा, मशीनी अनुवाद की पद्धतियों, प्रकारों आदि पर विचार किया गया है। उपलब्ध सामग्री के अध्ययन पर यह अनुभव किया गया कि मशीनी अनुवाद पर पूर्ण आश्रितता अभी नहीं हो सकती, क्योंकि इसके परिणाम अभी तक आंशिक रूप से सामने आ रहे हैं। अतः इस क्षेत्र की समस्याओं एवं संभावनाओं पर एक और इकाई सम्मिलित की गई है। इससे एक संतुलित विचार परिदृश्य शिक्षार्थियों के समक्ष बन सकेगा। संक्षेप में यह खंड मशीनी अनुवाद विषय पर एक निबंध संग्रह जैसा ही है जिसमें अलग-अलग मत, पुनरावृत्ति तथा विभिन्न आयामी विचार पटल दिखाई देंगे। यह खंड अनुवाद अध्ययन के अध्यवसायी छात्रों को भी इस विषय पर अलग-अलग विचारों के परिप्रेक्ष्य में विमर्श का अवसर देगा और यदि कुछ छात्र इस विषय से व्यावसायिक रूप से संबद्ध होंगे तो उनकी प्रतिपुष्टि का भी विद्यापीठ को इंतजार रहेगा जिसका हम स्वागत करेंगे।

Blank Page

खंड

1

अनुवाद प्रक्रिया-1

इकाई 1
अनुवाद की प्रक्रिया एवं प्रविधि 9

इकाई 2
अनुवाद के प्रकार 37

इकाई 3
अनुवाद की सीमाएँ और अननुवाद्यता 69

खण्ड-1 अनुवाद प्रक्रिया-1

खंड परिचय

अनुवाद अध्ययन के एम.ए. कार्यक्रम के ग्यारहवें पाठ्यक्रम का पहला खंड **'अनुवाद प्रक्रिया-1'** शिक्षार्थियों के समक्ष है। 'अनुवाद प्रक्रिया' नामक पाठ्यक्रम का यह प्रथम खंड अनुवाद प्रक्रिया एवं प्रविधि, अनुवाद प्रकार और अनुवाद में सीमाओं तथा अननुवाद्यता जैसे अनुवाद के प्रक्रियात्मक पक्षों से संबंधित हैं। इस खंड में तीन इकाइयाँ हैं जिनमें क्रमवार अनुवाद की विभिन्न दृष्टियों, सोपानों, प्रविधियों के साथ अनुवाद के प्रकारों पर प्रक्रियात्मक परिप्रेक्ष्य में प्रकाश डाला गया है। इन सभी पक्षों पर चर्चाक्रम में आप अनुभव करेंगे कि अनुवाद एक चुनौतीपूर्ण कार्य है तथा लगभग सभी प्रकार के अनुवाद में अननुवाद्यता के तत्व उपस्थित रहते हैं। खंड की तीन इकाइयों का क्रमशः परिचय इस प्रकार है :

इकाई 1 'अनुवाद की प्रक्रिया एवं प्रविधि' : इस इकाई का उद्देश्य शिक्षार्थियों को अनुवाद प्रक्रिया संबंधी विभिन्न दृष्टियों से परिचित कराना है ताकि वे अनुवाद कार्य यानि अनुवाद व्यापार की प्रक्रियात्मक संकल्पना को भलीभाँति समझ सकें। इसके अलावा इस इकाई में शिक्षार्थी अनुवाद प्रक्रिया के अलग-अलग सोपानों के बारे में जानेंगे। अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न प्रारूपों से संबंधित सिद्धांतों से भी आप रू-ब-रू होंगे। संक्षेप में यह इकाई शिक्षार्थियों को अनुवाद प्रक्रिया को तत्वतः समझने में सहायक होगी।

इकाई 2 'अनुवाद के प्रकार' : इकाई एक में अनुवाद प्रक्रिया पर गौर करने और अनुवाद संबंधी विभिन्न प्रक्रियात्मक सोपानों एवं प्रारूपों की जानकारी हासिल करने के उपरांत शिक्षार्थी अनुवाद वर्गीकरण के विभिन्न आधारों पर इस इकाई में चर्चा करेंगे। अनुवाद भाषाविज्ञान का एक महत्वपूर्ण अंग है, अतः अनुवाद वर्गीकरण के व्यावहारिक और वैज्ञानिक आधार हैं। शिक्षार्थी इस इकाई के अध्ययन के उपरांत अनुवाद प्रकारों के माध्यम, प्रक्रिया तथा पाठ संबंधी आधारों के साथ-साथ पाठ की विधा एवं प्रकृति संबंधी आयामों पर भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

इकाई 3 'अनुवाद की सीमाएँ और अननुवाद्यता' : अनुवाद प्रक्रिया और प्रविधि तथा अनुवाद के प्रकारों पर चर्चा के आलोक में आपने यह अनुभव किया होगा कि अनुवाद करना वास्तव में बहु-आयामी चुनौतियों से जूझना है। पाठ की भाषिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक तथा प्रोक्तिपरक प्रकृति उसे लक्ष्यपाठ (लक्ष्यभाषा) में अंतरित करने में बाधाएँ उपस्थित करती हैं। अलग-अलग संदर्भों में ये सीमाएँ कैसे अननुवाद्यता की स्थिति की निर्मिति करती हैं तथा इन्हें सफलतापूर्वक कैसे सुलझाया जा सकता है, यह भी आप इस इकाई में चर्चा के दौरान जान पाएँगे।

प्रथम खंड की इन तीनों इकाइयों में प्रस्तुत विषयवस्तु का उद्देश्य शिक्षार्थियों को व्यावहारिक रूप से अनुवाद जैसे श्रम-साध्य उद्यम हेतु तैयार करना है और अनुवाद साधना में आने वाली चुनौतियों के प्रति व्यावहारिक समाधान अन्वेषण के लिए प्रेरित करना है।

इकाई 1 अनुवाद की प्रक्रिया एवं प्रविधि

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद और अनुवादक

1.3 अनुवाद-दृष्टि

1.4 अनुवाद प्रक्रिया और अन्य सिद्धांत

- 1.4.1 प्रतीक सिद्धांत और अनुवाद प्रक्रिया
- 1.4.2 संप्रेषण सिद्धांत और अनुवाद प्रक्रिया
- 1.4.3 प्रतीकांतरण-भूमिका सिद्धांत

1.5 अनुवाद प्रक्रिया : विभिन्न प्रारूप

- 1.5.1 नाइडा द्वारा प्रतिपादित अनुवाद प्रक्रिया का प्रारूप
- 1.5.2 न्यूमार्क द्वारा प्रतिपादित अनुवाद प्रक्रिया का प्रारूप
- 1.5.3 बाथगेट द्वारा प्रतिपादित अनुवाद प्रक्रिया का प्रारूप

1.6 अनुवाद-अनुवादक का व्यापार क्षेत्र

- 1.6.1 पाठक की भूमिका
- 1.6.2 द्विभाषिक की भूमिका
- 1.6.3 रचयिता की भूमिका

1.7 अनुवाद प्रक्रिया : विभिन्न सोपान

- 1.7.1 विश्लेषण-पाठक की भूमिका एवं अर्थ ग्रहण/बोधन की प्रक्रिया
- 1.7.2 अंतरण-द्विभाषिक की भूमिका एवं अर्थांतरण/संक्रमण की प्रक्रिया
- 1.7.3 पुनर्गठन-रचयिता की भूमिका एवं अर्थसंप्रेषण या अभिव्यक्ति की प्रक्रिया

1.8 सारांश

1.9 अभ्यास के लिए प्रश्न

1.10 शब्दावली

1.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- अनुवाद प्रक्रिया को समझने की दृष्टियों से अवगत हो सकेंगे;
- अनुवाद का व्यापार-क्षेत्र क्या है अर्थात् अनुवाद कार्य क्या होता है यह बता सकेंगे;
- अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों की चर्चा कर सकेंगे;
- अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न प्रारूपों की जानकारी हासिल कर सकेंगे; तथा
- अनुवाद प्रविधि के विभिन्न प्रारूपों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

एम.टी.टी. पाठ्यक्रम-20 की यह प्रथम इकाई है। इससे पूर्व आप अनुवाद के सिद्धांत, परंपरा, भाषाविज्ञान, अनुवाद के क्षेत्र, अनुवाद और सांस्कृतिक अंतरण तथा कोशविज्ञान आदि विभिन्न विषयों पर अध्ययन कर चुके हैं। प्रस्तुत

इकाई में अनुवाद प्रक्रिया पर चर्चा की जाएगी जिसके अंतर्गत अनुवाद की प्रविधि, प्रकार तथा अनुवाद के विभिन्न प्रायोगिक पक्षों पर प्रकाश डाला जाएगा। एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद के संदर्भ में अनुवाद-प्रक्रिया का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। अनुवाद की सफलता-असफलता इस बात पर भी निर्भर करती है कि अनुवादक ने अनुवाद-प्रक्रिया के विभिन्न आयामों का किस सीमा तक चिंतन-मनन किया है। अनुवाद सिर्फ एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत कर देना मात्र नहीं है। इसकी सफलता के लिए अनुवादक को अनेक आधारभूत तत्वों को ध्यान में रखना पड़ता है। यही आधारभूत तत्व अनुवाद को संभव बनाते हैं। इन आयामों से होकर अनुवाद करना ही अनुवाद की प्रक्रिया कहलाती है। एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में संप्रेषण को हम पुनर्प्रस्तुतीकरण, यथावत् प्रस्तुतिकरण, भाव-गत संप्रेषण, कलात्मक संप्रेषण, शब्दगत संप्रेषण अथवा अर्थ का तात्विक संप्रेषण इत्यादि कितने ही नामों अथवा वर्गों में रखकर देखते और समझते हैं। अनुवाद करते समय उनमें से कौन-सा पक्ष कितना संप्रेष्य है, यदि इस बात को छोड़ दिया जाए तो सभी प्रकार के संप्रेषण में एक सामान्य बात यही बची रहती है कि अनुवादक को हर स्थिति में स्रोतभाषा से लक्ष्यभाषा में यह संप्रेषण करना होता है। मनुष्य के व्यवहार, चिंतन अथवा बाह्य आकार प्रकार में बहुत-सी समानताएँ हैं, परन्तु दो भिन्न भाषाओं में यह समानता नहीं के बराबर होती है, या फिर यथास्थिति इसका अनुपात बदलता रहता है। स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा कालगत संदर्भ में पुरानी और नई भी हो सकती है। दोनों भाषाएँ सर्वथा भिन्न संस्कृति, सभ्यता, इतिहास और परपंराओं को लेकर विकसित हुई हो सकती हैं और प्रायः होती हैं। दोनों भाषाएँ शब्द-सामर्थ्य की दृष्टि से अधिक अथवा कम समृद्ध हो सकती हैं। दोनों भाषाओं के व्याकरण भिन्न हो सकते हैं। दोनों की प्रकृति और शिल्पगत विधान भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। अतः अनुवादक के समक्ष जब स्रोतभाषा बनाम लक्ष्यभाषा का प्रश्न उपस्थित होता है तो उस प्रश्न में सभी समस्याएँ निहित रहती हैं। इन सबका उत्तर यह है कि बिना अर्थ और शिल्प को क्षति पहुँचाए उसका सफलतापूर्वक संप्रेषण अंतरण कर दिया जाए। यही अनुवाद की सफलता भी है। किंतु यह इतना सरल कार्य नहीं है, क्योंकि अनुवाद के कर्म में अनुवादक को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिनका समाधान अनुवाद-प्रक्रिया के विभिन्न आयामों से होकर गुजरने पर ही संभव हो पाता है। अतः अनुवाद-प्रक्रिया की भूमिका अनुवाद-व्यापार के संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

अनुवाद प्रक्रिया के संबंध में विद्वानों ने अपने अपने मत व्यक्त किए हैं। विभिन्न सिद्धांतों के साथ, अनुवाद की प्रकृति तथा परिभाषा के सहारे भी अनुवाद प्रक्रिया का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया जा सकता है। वास्तव में अनुवाद की प्रक्रिया दो भाषाओं के संप्रेषण व्यापार पर निर्भर रहती है, क्योंकि भाषाओं की प्रकृति, उनकी रचना पद्धति, व्याकरणिक विधान आदि एक दूसरे से भिन्न और भाषा सापेक्ष होते हैं। इसी वजह से भाषाओं के आपसी संप्रेषण में और भाषांतरण में दुविधा की स्थिति रहती है। इस स्तर पर अनुवादक को सावधानी बरतनी पड़ती है।

1.2 अनुवाद प्रक्रिया, अनुवाद और अनुवादक

अनुवाद प्रक्रिया एक संश्लिष्ट प्रक्रिया है। इसमें क्रिया व्यापार का स्वरूप दोहरा होता है। कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार अनुवाद प्रक्रिया से तात्पर्य अनुवाद की विधि अथवा प्रविधि से है जिसमें एक भाषा से दूसरी भाषा में संदेश और संरचना का अंतरण होता है। संदेश लक्ष्य है और संरचना माध्यम है तथा अंतरण प्रक्रिया। इन तीनों आयामों का कार्य व्यापार अनुवाद प्रक्रिया कहलाता है।

कुछ विद्वान अनुवाद की प्रकृति को दृष्टि में रखकर उसे विज्ञान के रूप में देखते हैं। कुछ उसे संप्रेषण-व्यापार के साथ जोड़कर देखते हैं। विज्ञान मानने वाले विद्वानों में नाइडा का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है। कुछ विद्वान अनुवाद को कला मानते हैं तो कुछ इसे शिल्प की श्रेणी में रखते हैं। अनुवाद को कला मानने वाले विद्वान सर्जनात्मक व्यापार के आधार पर अनुवाद को कला मानते हैं तो प्रशिक्षण और अभ्यास पर आधारित होकर कौशल भी मानते हैं। कौशल की दृष्टि से अनुवादक सर्जक साहित्यकार या तर्कप्रवण वैज्ञानिक नहीं है क्योंकि प्रशिक्षण द्वारा अनुवाद कार्य किसी सीमा तक सीखा जा सकता है।

अनुवाद को निश्चित विधान मानने वाली दृष्टि अनुवादक से यह अपेक्षा रखती है कि उसमें साहित्यकार की सर्जनात्मक प्रतिभा, वैज्ञानिक की तर्क शक्ति तथा शिल्पगत दक्षता आदि गुण होना आवश्यक है।

वस्तुतः अनुवादक में साहित्यकार जैसी सर्जनात्मक प्रतिभा, तार्किक शक्ति, कला जैसी अनुभूति तथा शिल्पगत दक्षता होनी चाहिए, क्योंकि अनुवाद एक संश्लिष्ट प्रक्रिया होने के कारण उसके विभिन्न चरणों पर अनुवादक को अलग-अलग भूमिकाएँ निभानी पड़ती है, जैसे-वैज्ञानिक के रूप में अनुवादक स्रोतभाषा पाठ में निहित अर्थ को समझने के लिए विश्लेषण करता है। कवि की भाँति संश्लिष्ट अभिव्यक्ति के लिए समानार्थी अभिव्यंजना पैदा करता है, और शिल्पकार की भाँति उसे मूलपाठ की संवेदना को यथासंभव सुरक्षित रखने के लिए लक्ष्य भाषा में प्रतिस्थापना करनी पड़ती है।

1.3 अनुवाद-दृष्टि

अनुवाद दृष्टि से तात्पर्य 'उत्पाद' अर्थात् अनुवाद कार्य को संपन्न करने में की गई विभिन्न प्रक्रियाओं का विश्लेषण एवं मनन से है। इस प्रक्रिया में स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के विशेष गुणों के साथ-साथ अर्थ-अंतरण में भाषिक, व्याकरणिक एवं पारिवेशिक कारकों का अवगाहन किया जाता है। सामान्यतः अनुवाद कार्य में की गई इस प्रक्रिया को पाठपरक और प्रक्रियापरक दो दृष्टियों से देखा जा सकता है :

पाठपरक दृष्टि

प्रथमतः पाठपरक दृष्टि के अंतर्गत मूलरचना और अनूदित रचना के बीच पाए जाने वाले संबंधों की प्रकृति पर ध्यान दिया जाता है। इसमें यह देखा जाता है कि संदेश, बनावट और भाषिक बुनावट की दृष्टि से अनूदित रचना, मूलरचना से कितनी मिलती-जुलती है, अर्थात् उन दोनों में कितनी निकटता और समतुल्यता है। पाठपरक दृष्टि में अनुवाद के अंतर्गत दोनों रचनाओं का अध्ययन करते हुए देखा जाता है कि :

1. अनुवाद कितना सफल है;
2. अनूदित पाठ, मूलरचना के कितना समतुल्य है;
3. मूल कृति में निहित संदेश/विषयवस्तु को अनूदित पाठ में किस हद तक संप्रेषित किया जा सका है;
4. मूलपाठ और अनूदित पाठ की भाषिक संरचना में कितना समन्वय है।

वस्तुतः पाठपरक दृष्टि प्रक्रिया दृष्टि की तुलना में कुछ सीमा तक स्थूल होती है। कुछ अनुवाद-चिंतक पाठपरक दृष्टि अनुवाद (अनूदित रचना) को एक बनी-बनाई वस्तु के रूप में देखते हैं और फिर उस पर चर्चा करते हैं। परिणामस्वरूप, वे इसे गंभीरता से नहीं लेते जबकि अनुवाद भाषा-व्यापार की एक सृजनात्मक प्रक्रिया भी है। इसके अतिरिक्त अनुवाद को भाषा-व्यापार की एक संश्लिष्ट प्रक्रिया भी कहा जा सकता है, क्योंकि यह प्रक्रिया मूल कृति पर अनुवाद की भावात्मक प्रतिक्रिया से प्रारंभ होकर अनूदित कृति के रचना-विधान तक फैली होती है।

प्रक्रियापरक दृष्टि

दूसरी ओर प्रक्रियापरक दृष्टि इससे भिन्न है क्योंकि इसके अंतर्गत मूल रचना के संदेश/विषयवस्तु और भाषिक संरचना पर ही ध्यान नहीं दिया जाता बल्कि अनुवाद को उन प्रसंगों एवं समस्याओं के संदर्भ में भी जाँचा-परखा जाता है जिनका सामना अनुवादक को सफल अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए करना पड़ता है। स्पष्टतः अनुवादक को स्रोत भाषा की रचना के अर्थग्रहण से लेकर लक्ष्यभाषा में अर्थांतरण करने और सममूल्य/समतुल्य पाठ के रूप में उसका अर्थ-संप्रेषण करने जैसी कठिन प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों से गुजरते हुए अनेक स्थूल एवं सूक्ष्म समस्याओं का सामना और समाधान करना पड़ता है। प्रक्रियापरक दृष्टि के अंतर्गत अनूदित रचना को मूल रचना के सममूल्य एक स्वतंत्र रचना के रूप में देखा जाता है। इतना ही नहीं, मूलपाठ और अनूदित पाठ को सममूल्य/समतुल्य बनाने के लिए जिस अनुवाद प्रक्रिया को अपनाया जाता है उसे प्रक्रिया के परिणाम के रूप में भी देखा जाता है। प्रक्रियापरक दृष्टि अनुवाद में दोनों रचनाओं का सूक्ष्म अध्ययन-विश्लेषण करते हुए देखा जा सकता है कि :

(1) दोनों पाठों के बीच भिन्नता होने के क्या कारण हैं;

(2) भिन्नता का आधार क्या-क्या है;

(3) भिन्नता की व्याख्या की गई है या नहीं;

(4) भिन्नता के लिए जिम्मेदार प्रसंगों का निर्धारण किया गया है अथवा नहीं;

(5) अनुवादक की विभिन्न भूमिकाओं पर प्रकाश डाला गया है या नहीं;

उपर्युक्त दोनों अनुवाद दृष्टियों में वर्णित अनुवाद व्यापार के बिंदुओं तथा उनसे संबंधित कारणों से स्पष्ट है कि पाठपरक दृष्टि की तुलना में प्रक्रियापरक दृष्टि अधिक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है।

1.4 अनुवाद प्रक्रिया और अन्य सिद्धांत

1.4.1 प्रतीक सिद्धांत और अनुवाद प्रक्रिया

प्रतीक सिद्धांत का प्रतिपादन प्रतीकशास्त्री पीयर्स द्वारा किया गया है। प्रतीक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद प्रतीकांतरण है। पीयर्स ने प्रतीक को वह वस्तु माना है जो किसी व्याख्याता के लिए अन्य वस्तु के स्थान पर प्रयुक्त होती है। उदाहरण के लिए शिवलिंग एक प्रतीक है। वह मात्र पत्थर न हो कर भक्त के लिए वह कुछ विशेष संदर्भों में भगवान शिव के स्थान पर प्रयुक्त होता है। इसमें व्याख्याता या प्रयोक्ता के सामाजिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक जैसे कई संदर्भ जुड़े होते हैं। इस संदर्भ पर आधारित होते हुए सस्यूर ने समाज के भीतर के प्रतीकों के जीवंत पक्षों और उसके प्रकार्यात्मक संदर्भों का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टि अपनाने पर बल दिया। उन्होंने भाषा को भी प्रतीक व्यवस्था कहा है। इस व्यवस्था में तीन इकाइयों का संबंध महत्वपूर्ण होता है। अर्थात् संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और संकेतन प्रतीक।

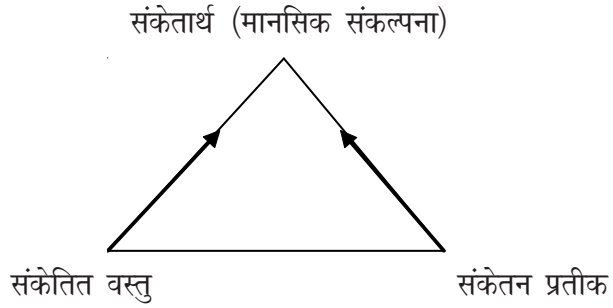

आरेख 1.0

संकेतित वस्तु का संबंध बाह्य जगत की वास्तविक और यथार्थ वस्तुओं से है। जैसे शेर, घोड़ा, पेड़। संकेतार्थ; से अभिप्राय प्रयोक्ता से है। व्यक्ति के मन में स्थित मानसिक संकल्पना अथवा बिंब है। संकेतन प्रतीक इस संकेतार्थ को भाषिक ध्वनियों के माध्यम से अभिव्यक्ति देने वाली इकाई है। जो विशेष संदर्भो में प्रयुक्त होता है। संकेतित वस्तु, संकेतार्थ और संकेतन प्रतीक के बीच में सरल संबंध होता है। किंतु संकेतित वस्तु और संकेतन प्रतीक के बीच में संबंध सीधा न होकर आरोपित होता है। उदाहरण कलम् अंग्रेजी में Pen और हिंदी में पेन तथा कलम पंजाबी में पैन तथा तेलुगु में कलमु, पेन्नू आदि अभिव्यक्तियाँ है। प्रकल्पना पर विचार करते हुए ऐसे विज्ञान की संकल्पना की थी जिसमें समाज द्वारा अपनाए गए प्रतीक तथा उसके प्रकार्यात्मक संदर्भों का अध्ययन हो सके। उन्होंने उसे ग्रीक शब्द Semion के आधार पर Semiology प्रतीक विज्ञान नाम दिया था। इनके अनुसार कथ्य तथा अभिव्यक्ति का समन्वित रूप ही प्रतीक है, जिसका आधार मनोविज्ञान है, जो संकल्पना को रूपाकार करता है।

रोमन याकोब्सन ने भी प्रतीक व्यवस्था के आधार पर अनुवाद को देखने का प्रयास किया है। वे मानते कि हर है भाषा अपनी संरचना के अनुसार अभिव्यक्ति को अर्थ प्रदान करती है।

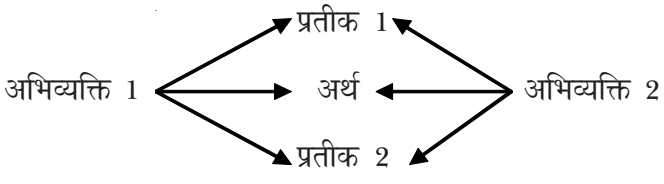

आरेख 1.1

दोनों भाषाओं की प्रतीक व्यवस्था अर्थ को समान रूप से अभिव्यक्त कर सकती है। यहाँ हम भाषा की परिभाषा को याद कर सकते हैं कि ध्वनि प्रतीकों की यादृच्छिक व्यवस्था भाषा कहलाती है। ध्वनि और भाषा अभिव्यक्ति परस्पर जुड़े होते हैं। ध्वनि और अभिव्यक्ति को अलग करके देख नहीं सकते। भाषिक प्रतीक में निहित संकेतार्थ की समतुल्यता को ही अनुवादक को साधना पड़ता है। अभिव्यक्ति एक को अभिव्यक्ति दो में अंतरित करते समय अनुवादक को समतुल्यता सिद्धांत का सहारा लेना पड़ता है। उदाहरण के लिए हिंदी भाषा में 'गाय' अंग्रेजी में (Cow) काऊ, पंजाबी में गाँ, तेलुगु में 'आवु', संस्कृत में 'धेनु' प्रयोग होता है। ये सभी धारणाएँ एक वस्तु के लिए प्रयुक्त हैं, जो उन भाषा-भाषियों के लिए रूढ़ हो चुकी हैं। जो यह भाषा नहीं जानते, उन्हे 'आवु' या काऊ से कोई मतलब नहीं है। उसके लिए यह कुछ ध्वनि क्रम मात्र ही है। किसी भी भाषा की ध्वनियाँ उस भाषा-भाषी के लिए प्रतीक के रूप में प्रयुक्त होती हैं। वास्तव में उच्चरित या लिखित रूप में गाय, बिल्ली या लड़की आदि शब्द स्वयं में प्रतीकात्मक भाषिक अभिव्यक्तियाँ हैं, जो वास्तविक वस्तु के स्थान पर प्रयोग में आते हैं। रोमन याकोब्सन ने प्रतीक व्यवस्था के आधार पर अनुवाद को तीन भिन्न रूपों में देखा है।

1. **अन्वयांतर/अंतरभाषिक :** जहाँ एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था के द्वारा उद्घाटित अर्थ का उसी भाषा की अन्य प्रतीक व्यवस्था के रूप में अंतरण किया जाए उसे अंतःभाषिक अनुवाद भी कहते हैं। जैसे-हिंदी की उर्दू शैली में अथवा खड़ी बोली में अंतरण करना।
2. **भाषांतर/अंतरभाषिक :** इसमें एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा उद्घाटित अर्थ को दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा अंतरण किया जाता है। इसे अंतरभाषिक अनुवाद भी कहते हैं। जैसे-हिंदी-अंग्रेजी में, हिंदी से अन्य भारतीय भाषाओं में।
3. **प्रतीकांतर/अंतर प्रतीकात्मक :** मूलपाठ के प्रतीक का अर्थ भाषेनर प्रतीक द्वारा प्रस्तुत किया जाता है तो उसे प्रतीकांतर या अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद कहा जाता है; जैसे-कहानी या उपन्यास का फिल्मांकन, लिखित नाटक का मंचन इत्यादि।

1.4.2 संप्रेषण सिद्धांत और अनुवाद प्रक्रिया

कोई भी भाषा प्रयोक्ता और संप्रेषक अनुवादक होता है, चाहे वह लेखक हो या पाठक, एकभाषी हो या द्विभाषी, वक्ता हो या श्रोता उनमें अनुवाद की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। इसका तात्पर्य यह हैं कि लेखक या एकभाषी या वक्ता अपने विचारों को पहले भाषा में कोडीकृत करता है और उसे लिखित या मौखिक अभिव्यक्ति देता है। यह अभिव्यक्ति भावों तथा विचारों का भाषा में रूपांतरण है। यहाँ भाषा कूट (Code) होती है। इसमें व्यक्त विचारों को श्रोता/पाठक कोडबद्ध संदेश को रूपांतरित करके ग्रहण करता है। भाषायी संप्रेषण का तंत्र ही कोडीकरण और विकोडीकरण की प्रक्रिया से जुड़ा है। अनुवादक दूसरी भाषा में अर्थात् एकभाषी या लेखक द्वारा व्यक्त कोड को विकोडीकृत करता है तथा उनमें निहित संदेशों को ग्रहण करता है। और फिर दूसरी भाषा लक्ष्यभाषा में पाठ को पुनः कोडीकृत करता है। अर्थात् मूल संदेश को लक्ष्यभाषा में अंतरित करता है। इस प्रकार पाठकों तक अनूदित सामग्री पहुँचती है।

नाइडा और अन्य विद्वानों ने अनुवाद को विज्ञान के रूप में स्थापित करते हुए संप्रेषण व्यापार का विवेचन अनुवाद प्रक्रिया के संदर्भ में किया है, जिसमें वे अनुवाद को इसके व्यापक संदर्भ से जोड़ते हुए संप्रेषण व्यापार की एक उपश्रेणी कहते हैं। जैसे -

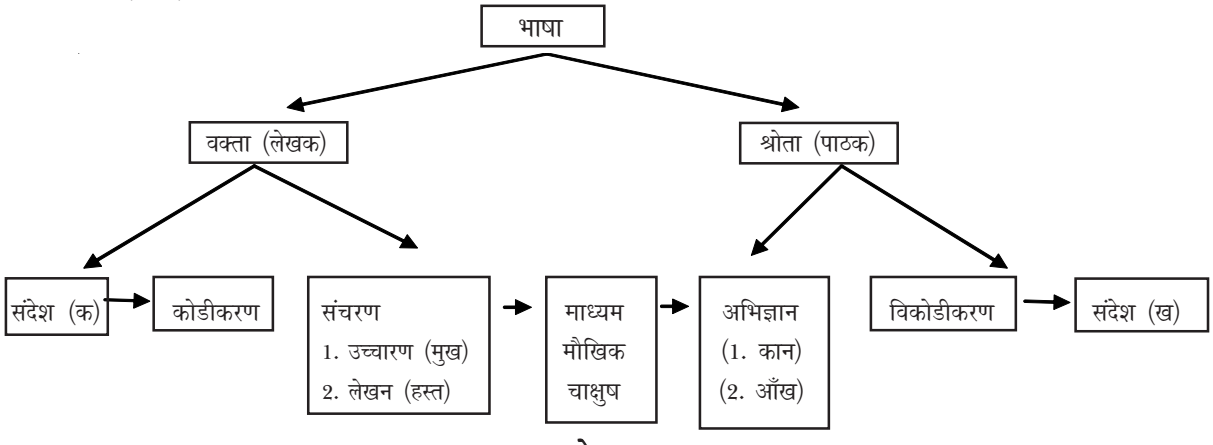

आरेख 1.2

प्रक्रिया में विकोडीकरण और कोडीकरण की संकल्पना के आधार पर अनुवाद प्रक्रिया को भी देखा जा सकता है। अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक पहले स्रोत पाठ का विकोडीकरण करता है और बाद में कोडीकरण के माध्यम से अर्थ की पुर्नरचना लक्ष्य पाठ के रूप में करता है। कृष्ण कुमार गोस्वामी ने निम्नलिखित आरेख में इस प्रकार समझाया है -

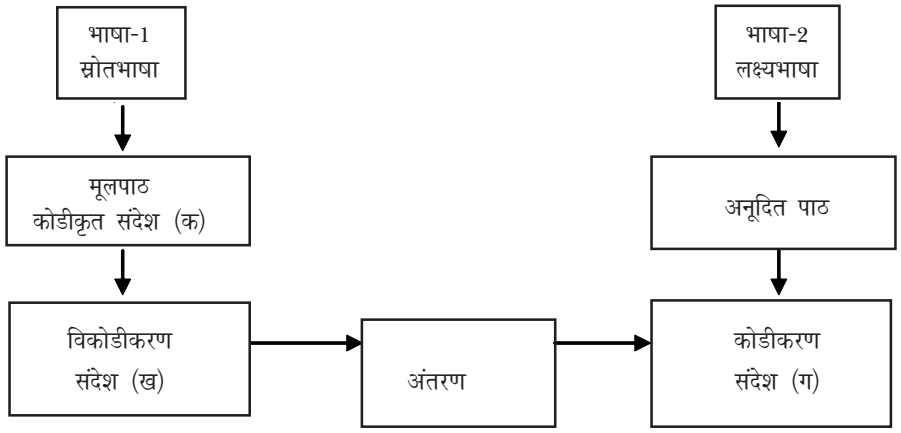

आरेख 1.3

अनुवाद करते समय दो भाषाओं का संप्रेषण व्यापार ही प्रमुख रहता है। इसलिए इस पूरे व्यापार में दो प्रकार के प्रेषक (लेखक), संदेश (पाठ), ग्रहीता (पाठक) की संकल्पना निहित है। इस प्रकार की प्रक्रिया को समझाने के लिए विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने प्रारूप प्रस्तुत किए हैं। इन विद्वानों में नाइडा, न्यूमार्क, बाथगेट और रोजरबेल प्रमुख हैं। इन पर हमने पहले इसी इकाई में चर्चा कर ली है।

1.4.3 प्रतीकांतरण-भूमिका सिद्धांत

अनुवाद के चिंतन में इस प्रारूप के प्रतिपादन का श्रेय दो भारतीय विद्वानों रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी को जाता है। उन्होंने पाठ को भाषिक प्रतीक रूप में देखने का प्रयास किया है। वे मानते हैं कि अनुवादक को दो प्रकार के पाठों का सामना करना पड़ता है। अनुवादक सबसे पहले मूलकृति से टकराता है और पाठक के रूप में मूलपाठ को पढ़ता है तथा विश्लेषण कर कथ्य अथवा मर्म को पकड़ने का प्रयास करता है। अनुवादक केवल पाठक ही नहीं अपितु द्विभाषिक की भूमिका के रूप में वह कथ्य को लक्ष्यभाषा में बाँधने का प्रयत्न भी करता है। इसलिए उसे भाषा तथा लक्ष्यभाषा दोनों की व्याकरणिक संरचनाओं, सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और अन्य विधागत शैलियों से जूझना पड़ता है। तभी वह सुपाठ्य, सुबोध और संप्रेषणीय लक्ष्यपाठ का निर्माण करता है। इस प्रकार अनुवादक एक रचयिता की भूमिका भी निभाता है।

इस प्रक्रिया में यह स्पष्ट हो जाता है कि रवींद्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी अनुवाद प्रक्रिया में संदेश को प्रतीक के रूप में भी देखते हैं, और संदेश का अंतरण वास्तव में प्रतीकांतरण ही है जिसमें संकेत, संकेतित, संकेतन और संकेतार्थ आदि उपस्थित रहते हैं। कथ्य, अर्थ-व्यापार और लक्ष्यार्थ आदि में व्यापार प्रक्रिया संपन्न होती है। श्रीवास्तव और गोस्वामी अनुवादक द्वारा तीन भूमिकाओं के संपादन की बात करते हैं। अनुवादक विश्लेषण के रूप में पाठक, अंतरण के स्तर पर अर्थांतरण प्रकार्य हेतु द्विभाषिक तथा संप्रेषण हेतु पुनर्रचना के स्तर पर लेखक की भूमिका निभाता है। श्रीवास्तव और गोस्वामी ने अपने सिद्धांत को इस प्रकार आरेख में प्रस्तुत किया है :

प्रक्रिया	**अनुवादक की भूमिका**	**प्रकार्य**
विश्लेषण	पाठक (मूलपाठ)	अर्थग्रहण
अंतरण	द्विभाषिक	अर्थांतरण
पुनर्रचना	लेखक (अनूदित पाठ)	अर्थ संप्रेषण

अनुवादक की इस स्तर पर बहु-आयामी भूमिका है। अनुवाद व्यापार के विभिन्न स्तरों पर अनुवादक द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ, यथा अर्थग्रहण, अर्थांतरण और संप्रेषण की समस्या अनुवादक की भूमिका को चुनौतीपूर्ण बना देती हैं। इस समस्त भूमिका समस्या प्रारूप को श्रीवास्तव और गोस्वामी ने इस प्रकार समझाया है :

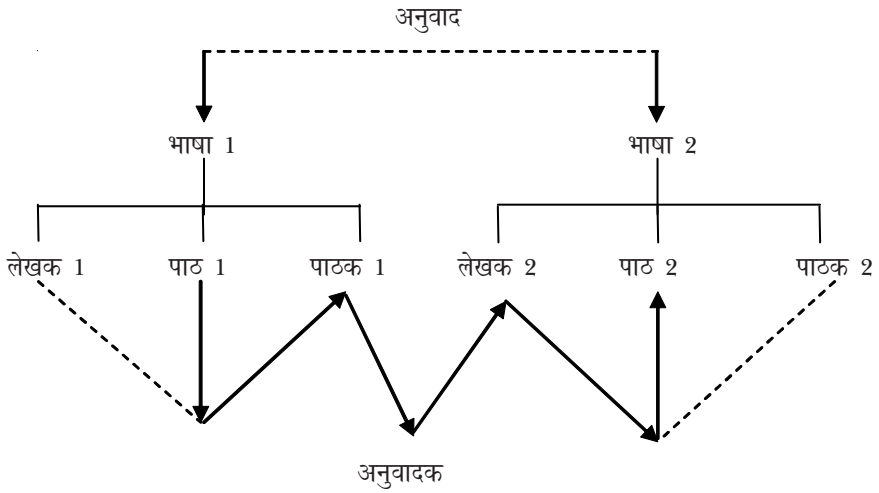

आरेख 1.4

इस प्रक्रिया में अनुवादक की सजगता महत्वपूर्ण होती है, तभी वह विभिन्न समस्याओं के प्रति समुचित समाधान पा सकता है।

अनुवाद प्रक्रिया के संदर्भ में सुरेश कुमार का विचार है कि अनुवाद मूलपाठ के बोधन तथा लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति, वास्तव में इन दो ध्रुवों के बीच निरंतर होते रहने वाली प्रक्रिया है जो सीधी और प्रत्यक्ष न होकर परोक्ष है। वह मध्यवर्ती स्थिति जिसके जरिए यह प्रक्रिया संपन्न होती है एक वैचारिक संज्ञानात्मक संरचना है जो मूलपाठ के बोधन से निष्पन्न होती है तथा इसमें लक्ष्यभाषागत अभिव्यक्ति के बीज निहित रहते हैं।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अनुवाद प्रक्रिया सही अर्थों में भाषिक प्रक्रम के साथ-साथ एक मनोभाषिक गतिविधि भी है जिसमें विभिन्न स्तरों पर अनुवादक अलग-अलग भूमिका निभाता है और एक प्रकार से वह मूलभाषा पाठ में अंतर्निहित संदेश को यथासंभव निकटतम और समान रूप में अभिव्यक्त होने की क्षमता निर्मित करता है, जो कथ्य अथवा संदेश की व्याख्या करने जैसा ही है।

1.5 अनुवाद प्रक्रिया : विभिन्न प्रारूप

उपर्युक्त चर्चा के अतंर्गत आपने अनुवाद प्रक्रिया से संबंधित द्विभाषिक संप्रेषण-व्यापार पर विचार करते हुए अनुवादक की विभिन्न भूमिकाओं के बारे में जानकारी हासिल की। आइए अब हम अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न प्रारूपों पर चर्चा करते हैं। यूँ तो विभिन्न अनुवाद चिंतकों ने अपने-अपने प्रारूप प्रस्तुत किए हैं, किंतु प्रमुख रूप से नाइडा, न्यूमार्क एवं बाथगेट के प्रारूप ही महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यहाँ हम इन तीनों विद्वानों द्वारा प्रतिपादित विभिन्न प्रारूपों पर संक्षिप्त चर्चा करेंगे।

1.5.1 नाइडा द्वारा प्रतिपदित अनुवाद प्रक्रिया का प्रारूप

सर्वप्रथम हम नाइडा द्वारा दिए गए अनुवाद प्रक्रिया संबंधी प्रारूप पर विचार करेंगे। नाइडा अनुवाद को एक वैज्ञानिक तकनीक मानते हैं। नाइडा ने अनुवाद प्रक्रिया के तीन चरण माने हैं :

1. विश्लेषण
2. अंतरण और
3. पुनर्गठन

नाइडा द्वारा प्रतिपादित इन तीनों चरणों को निम्नलिखित आरेख द्वारा दर्शाया जा सकता है :

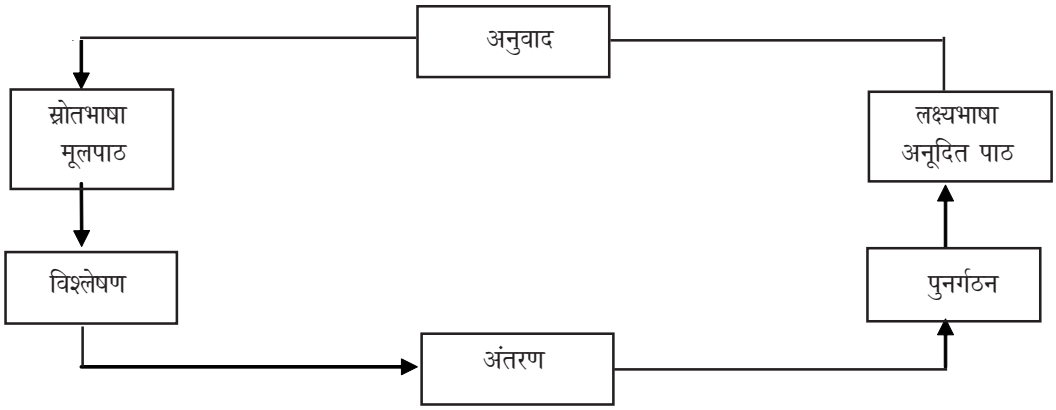

आरेख 1.5

नाइडा द्वारा सुझाए गए अनुवाद प्रक्रिया के इन तीनों सोपानों में एक निश्चित क्रमबद्धता देखने को मिलती है। स्रोत भाषा में पहले से ही रचित मूलपाठ के संदेश/कथ्य के अर्थ को भलीभाँति ग्रहण करने के लिए अनुवादक सर्वप्रथम मूलपाठ का विभिन्न दृष्टिकोणों से विश्लेषण करता है। चूँकि यह मूलपाठ भाषाबद्ध होता है इसलिए इसमें निहित संदेश को भाषिक संरचना के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है। यही कारण है कि नाइडा मूलपाठ के विश्लेषण के लिए भाषा सिद्धांत तथा उसमें अपनाई जाने वाली विश्लेषण तकनीक के उपयोग पर अधिक बल देते हैं। इस संदर्भ में नाइडा का कहना है कि प्रत्येक भाषिक संरचना के दो स्तर होते हैं - आभ्यंतर तथा बाह्य। प्रथम प्रकार की संरचना भाषा के सार्वभौम पक्ष से संबंधित होती है जबकि दूसरे प्रकार की संरचना भाषा-विशेष की विशिष्ट व्याकरणिक व्यवस्था के साथ रहती है। आभ्यंतर संरचना (Deep Structure) के स्तर पर मूलपाठ का संदेश स्रोत भाषा और लक्ष्यभाषा के लिए समान-रूप होता है जबकि बाह्य संरचना (Surface Structure) के स्तर पर समान संदेश को अभिव्यक्त करने के लिए दो भाषाएँ, दो भिन्न-भिन्न अभिव्यक्ति-प्रणालियों का प्रयोग करती हैं। नाइडा मानते हैं कि अनुवाद गहन स्तर पर स्थित समानधर्मी संदेश के परिणामस्वरूप ही संभव हो पाता है। इसलिए अनुवादक के लिए यह जरूरी हो जाता है कि वह बाह्य स्तर पर स्थित भाषिक संरचना का विश्लेषण करते हुए तथा उसके गहन स्तर पर स्थित संदेश को समझते हुए मूलपाठ का अर्थग्रहण करें।

नाइडा द्वारा इन दोनों स्थितियों को समझने के लिए प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूपों की सहायता ली जा सकती है। प्रत्यक्ष प्रक्रिया के प्रारूप के अनुसार पर्याय मूलपाठ की बाह्य संरचना के स्तर पर उपलब्ध होते हैं। इसमें अनुवादक मूलपाठ के संदेश को सीधे लक्ष्यभाषा में ले जाता है और वह इन दोनों स्थितियों में मूलपाठ और अनूदित पाठ की बाह्य संरचना के स्तर पर ही रहता है। दूसरी ओर, परोक्ष प्रक्रिया के अंतर्गत अनुवादक पाठ की बाह्य संरचना तक सीमित न रहकर आवश्यकतानुसार पाठ की अभ्यंतर संरचना में भी जाता है और फिर लक्ष्यभाषा में उपयुक्त अनुवाद पर्याय प्रस्तुत करता है। प्रत्यक्ष प्रक्रिया में अनुवाद कार्य प्रायः पाठ की बाह्य संरचना के स्तर पर ही हो जाता है, जबकि परोक्ष प्रक्रिया में वह प्रायः पाठ की आभ्यंतर संरचना के माध्यम से संभव हो पाता है। नाइडा प्रत्यक्ष प्रक्रिया की अपेक्षा परोक्ष प्रक्रिया पर अधिक जोर देते हैं।

नाइडा द्वारा सुझाए गए अनुवाद प्रक्रिया के तीनों सोपानों में अनुवादक सर्वप्रथम स्रोतभाषा के पाठ का विश्लेषण करता है। वह मूलपाठ का विषयगत अर्थगत तथा भाषागत अर्थग्रहण करता है। इसके लिए वह भाषा-सिद्धांत पर आधारित भाषा-विश्लेषण की तकनीकों का सही प्रयोग करता है। मूलपाठ के संदेश का विषयगत एवं भाषागत/शैलीगत विश्लेषण के द्वारा अर्थबोध/अर्थग्रहण हो जाने के बाद संदेश का लक्ष्यभाषा में संक्रमण/अंतरण होता है जिसके अंतर्गत दोनों भाषाओं के बीच विभिन्न स्तरों पर परस्पर समन्वय स्थापित किया जाता है। इसके पश्चात् अनुवादक मूल संदेश का लक्ष्यभाषा में पुनर्गठन/समायोजन करता है। यह इसलिए किया जाता है ताकि मूल संदेश लक्ष्यभाषा के पाठक के लिए बोधगम्य, रोचक एवं सुस्पष्ट बन सके। इस सोपान से गुजरने के बाद ही स्रोतभाषा की कोई मूल रचना अनूदित रचना के रूप में सफल अनुवाद की श्रेणी में रखी जा सकती है।

1.5.2 न्यूमार्क द्वारा प्रतिपादित अनुवाद प्रक्रिया का प्रारूप

नाइडा के अनुवाद प्रक्रिया के प्रारूप पर विचार करने के बाद अब हम न्यूमार्क द्वारा प्रस्तुत अनुवाद प्रक्रिया के प्रारूप पर विचार करेंगे। नाइडा की भाँति ही न्यूमार्क ने भी अनुवाद प्रक्रिया के कुछ सोपान सुझाए हैं। यद्यपि नाइडा

एवं न्यूमार्क की दृष्टि में कालभेद के संदर्भ में कुछ अंतर है, फिर भी मूलतः उनमें काफी समानता देखने को मिलती है। चूँकि नाइडा के समय में बाइबिल के ऐसे अनुवादों की अधिकता थी जो अर्थग्रहण के उद्देश्य से भाषा की व्याकरणिक संरचना से संबंधित थे। इसलिए उनकी दृष्टि वहीं तक प्रभावित एवं सीमित रही। नाइडा का चिंतन-क्षेत्र मूल अर्थ को समझने, विभिन्न प्रकार की भाषाओं में निहित संदेश के अर्थ को व्याकरणिक संरचना के संदर्भ में लक्ष्यभाषा में संप्रेषित करने संबंधी समस्याओं का विश्लेषण करने तथा उनका यथासंभव समाधान प्रस्तुत करने तक ही सीमित रहा। इसलिए नाइडा ने अनुवाद संबंधी भाषा सिद्धांत में व्याकरणिक संरचना के विश्लेषण को ही अधिक महत्व दिया है। अतः नाइडा के अनुवाद प्रक्रिया संबंधी चिंतन में वह व्यापकता दिखाई नहीं देती जो न्यूमार्क के चिंतन में दिखाई देती है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इन दोनों विद्वानों की अनुवाद प्रक्रिया संबंधी संकल्पना में एक ओर यदि समानता है तो दूसरी ओर कुछ असमानता भी है। न्यूमार्क ने अनुवाद प्रक्रिया की दो स्थितियों पर प्रकाश डालते हुए मूलपाठ और अनूदित पाठ के सह संबंध को दो स्तरों पर स्थापित करने का प्रयास किया है :

(क) मूलपाठ और अनूदित पाठ का अंतरक्रमिक अनुवाद, अर्थात् शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद, और

(ख) मूलपाठ का अर्थबोधन और अनूदित पाठ में उसका अभिव्यक्तिकरण

इन दोनों स्थितियों को निम्न प्रस्तुत आरेख से समझा जा सकता है :

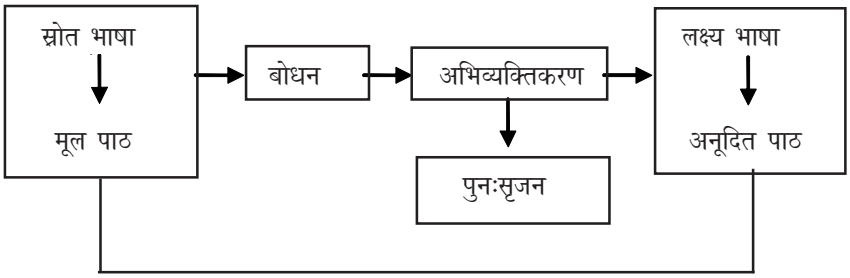

अंतरक्रमिक अनुवाद (शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद)

आरेख 1.6

नाइडा ने जिस सोपान को 'विश्लेषण' का सोपान कहा है, न्यूमार्क ने उसे 'बोधन' की संज्ञा दी है। न्यूमार्क द्वारा प्रस्तुत 'बोधन' की संकल्पना नाइडा की 'विश्लेषण' संकल्पना से इस अर्थ में ज्यादा महत्वपूर्ण हैं कि इसमें मूलपाठ के विश्लेषण से प्राप्त अर्थ के साथ-साथ अनुवादक द्वारा मूलपाठ की व्याख्या का अंश भी विद्यमान रहता है। किसी भी भाषिक पाठ में ऐसी अनेक उक्तियाँ मौजूद होती हैं जो अनुवाद द्वारा की जाने वाली व्याख्यात्मक टिप्पणी की माँग करती हैं। इनके अभाव में मूलपाठ का अर्थ न तो पारदर्शी बन पाता है और न ही बोधगम्य। नाइडा की तुलना में न्यूमार्क की अनुवाद प्रक्रिया संबंधी संकल्पना आधुनिक, व्यापक एवं व्यावहारिक प्रतीत होती है। यही कारण हैं कि उन्होंने 'बोधन' एवं 'अभिव्यक्तीकरण' जैसे सोपानों का सुझाव दिया है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि न्यूमार्क स्रोत भाषा और लक्ष्यभाषा के पाठों में अनुवाद संबंध स्पष्ट करना चाहते हैं जो कि तुलना एवं व्यतिरेक के संदर्भ में संभव हो पाता है।

1.5.3 बाथगेट द्वारा प्रतिपादित अनुवाद प्रक्रिया का प्रारूप

नाइडा और न्यूमार्क द्वारा प्रस्तुत अनुवाद प्रक्रिया संबंधी प्रारूपों पर विचार करने के बाद अब हम बाथगेट द्वारा प्रस्तावित प्रारूप पर विचार करेंगे। नाइडा ने जहाँ अनुवाद प्रक्रिया के तीन सोपान और न्यूमार्क ने दो सोपान सुझाए हैं, वहीं बाथगेट ने सात सोपानों की चर्चा की है। इससे यह स्पष्ट होता है कि बाथगेट अनुवाद प्रक्रिया को एक अधिक व्यावहारिक एवं व्यापक आयाम देना चाहते हैं। एक प्रकार से देखा जाए तो बाथगेट ने नाइडा और न्यूमार्क द्वारा सुझाए गए सोपानों (विश्लेषण- संक्रमण/ अंतरण-पुर्नगठन तथा बोधन-अभिव्यक्तिकरण) का भी समावेश कर दिया है। बाथगेट ने अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपान इस प्रकार दर्शाए हैं :

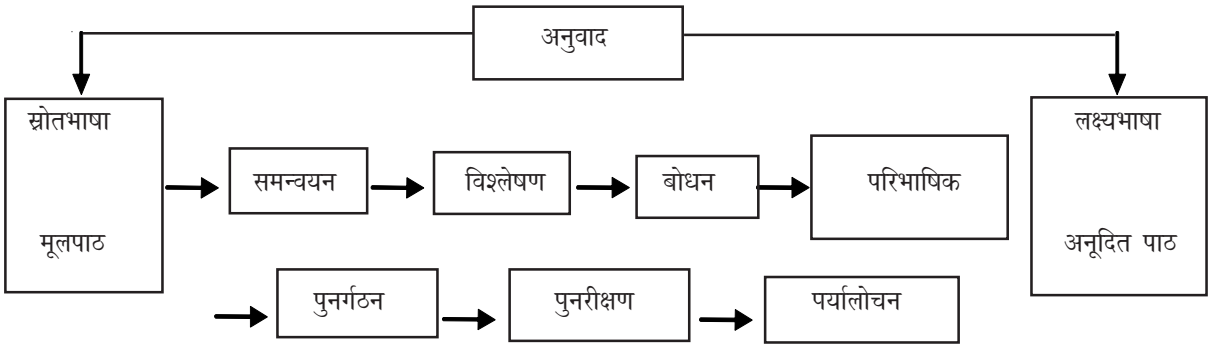

(बाथगेट द्वारा प्रस्तावित अनुवाद प्रक्रिया संबंधी प्रारूप)

आरेख 1.7

इन सोपानों में विश्लेषण, बोधन, अभिव्यक्ति, पुर्नगठन के सोपान पूर्ववत हैं। डा. सुरेश कुमार के अनुसार इन सोपानों में ''पर्यालोचन के सोपान को छोड़कर शेष सब में अतिव्याप्ति का अवकाश है (जो असंगत नहीं है) परन्तु सैद्धांतिक स्तर पर इनके अपेक्षाकृत स्वतंत्र अस्तित्व को मान्यता प्रदान की गई है''। इन सभी सोपानों का संक्षिप्त स्पष्टीकरण/विवरण यहाँ दिए जा रहे हैं :

1. समन्वयन

यह सोपान विश्लेषण और बोधन से पहले की स्थिति है। जिसमें अनुवादक स्रोतभाषा के पाठ को जाँचता-परखता है और उसके विषय, भाषा एवं शिल्प की जानकारी प्राप्त करता है ताकि उसका विश्लेषण करने में उसे सुविधा रहे। इसी सोपान के अंतर्गत अनुवादक मूल लेखक से मानसिक स्तर पर तादात्म्य स्थापित करने का प्रयास करता है। इस सोपान को मूलभाषा की रचना का पाठ-पठन भी कहा जा सकता है। वस्तुतः यह अनुवाद कार्य में प्रवृत होने संबंधी अनुवादक की तैयारी ही है।

2. विश्लेषण

अनुवाद प्रक्रिया के इस सोपान के अंतर्गत अनुवादक को पाठक के रूप में स्रोतभाषा के मूलपाठ का अर्थग्रहण करना होता है जिसके लिए उसे पाठ का विश्लेषण करना पड़ता है। यह विश्लेषण विषय-वस्तु के स्तर पर तथा भाषा के स्तर पर किया जाता है। दरअसल, पाठ एक ऐसी पूर्ण भाषिक इकाई है जिसमें कथ्य (संदेश) और अभिव्यक्ति (शैली) संश्लिष्ट रहते हैं। इसलिए अनुवादक को अर्थग्रहण के लिए पाठ के अभिव्यक्त पक्ष का विश्लेषण करना आवश्यक हो जाता है।

3. बोधन

इस सोपान का उददे्श्य भी लगभग विश्लेषण जैसा ही है। अनुवादक का उद्देश्य इस सोपान के अंतर्गत मूलपाठ का अर्थबोधन/अर्थग्रहण ही है। इसमें विश्लेषण करने से प्राप्त अर्थ के साथ-साथ अनुवादक द्वारा मूलपाठ की व्याख्या का अंश भी सम्मिलित रहता है।

4. परिभाषिक अभिव्यक्तीकरण

इस सोपान के अंतर्गत दो प्रमुख उद्देश्य दिखाई देते हैं। प्रथम मूलपाठ में निहित संदेश का अर्थग्रहण करने और उसे स्पष्ट करने के लिए महत्वपूर्ण अंशों पर ध्यान देना, और दूसरे, इन अंशों के अनुवाद पर्यायों के निर्धारण में विशेष सतर्कता बरतना।

5. पुनर्गठन

स्रोतभाषा की सामग्री को लक्ष्यभाषा में संप्रेषित करने के लिए उसका पुनर्गठन किया जाता है। यह पुनर्गठन लक्ष्यभाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए और लक्ष्यभाषा पाठक को ध्यान में रखते हुए किया जाता है ताकि पाठक को किसी भी स्तर पर समस्या का सामना न करना पड़े। इसलिए यह पुनर्गठन/पुनर्विन्यास लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति के स्तर पर किया जाता है।

6. पुनरीक्षण

बाथगेट द्वारा प्रस्तावित अनुवाद प्रक्रिया के इस सोपान के अंतर्गत लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति के स्तर पर सफल अनुवाद के प्रायः सभी गुणों को एक साथ ले आना अनुवादक का कर्तव्य होता है। इस सोपान पर

पहुँचने के बाद अनूदित पाठ की पूर्णरूपेण जाँच-पड़ताल की जाती है और विभिन्न प्रकार की अशुद्धियों को दूर किया जाता है। विषयवस्तु की स्पष्टता, व्याकरण संबंधी बोधगम्यता, भाषा की स्वाभाविकता, भाषा की विभिन्न जटिल प्रयुक्तियों का सही प्रयोग आदि कुछ ऐसे आवश्यक पहलू हैं, जिनका पुनरीक्षण करना महत्वपूर्ण होता है। पुनरीक्षण, मूल्यांकन और समीक्षा पर हम इस पाठ्यक्रम के खंड दो में विस्तृत चर्चा करेंगे।

7. पर्यालोचन

पर्यालोचन के सोपान पर विषयगत प्रामाणिकता को परखा जाता है। कुछ ऐसे विषय हैं जिनकी विषयगत अवधारणाओं- संकल्पनाओं को स्पष्ट करना बहुत जरूरी होता है। उदाहरण के लिए दर्शन, भाषाविज्ञान, विधि-कानून, प्रौद्योगिकी, मनोविज्ञान आदि ऐसे विषय हैं जिनमें विषयगत स्पष्टता सफल अनुवाद के लिए आवश्यक है। इसके लिए अनुवादक उस विषय के विशेषज्ञ से परामर्श कर सकता है। पर्यालोचन का चरण प्रक्रियात्मक न होकर अनुवाद विमर्श का चरण है।

नाइडा विश्लेषण नामक सोपान पर भाषा के दो महत्वपूर्ण पक्षों-शब्दार्थ और व्याकरण के गहन विश्लेषण पर अत्यधिक बल देते हैं। शब्दार्थ के अंतर्गत वे वाच्यार्थ और लक्ष्य-व्यंग्यार्थ के वर्णनात्मक विश्लेषण पर जोर देते हैं। व्याकरण के अंतर्गत न केवल वाक्यों, उपवाक्यों, पदबंधों आदि का विश्लेषण ही किया जाता है अपितु विभिन्न प्रकार की शाब्दिक संरचनाओं से भी अनेक प्रकार के अर्थ ध्वनित होते हैं। न्यूमार्क ने विश्लेषण के इस सोपान को 'बोधन' का नाम दिया है। जिसमें विभिन्न भाषिक संरचनाओं के विश्लेषण द्वारा अर्थ की प्रतीति होती है। न्यूमार्क इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए शब्दार्थ विज्ञान को अत्यधिक महत्व देते हैं। बाथगेट ने इस सोपान को 'विश्लेषण' और 'बोधन' की संज्ञा दी है। इस प्रक्रिया से पूर्व बाथगेट ने 'समन्वयन' के सोपान के माध्यम से अनुवादक द्वारा की जाने वाली मानसिक तैयारी के साथ-साथ मूल लेखक से तादात्म्य स्थापित करने की ओर संकेत किया है।

1.6 अनुवाद-अनुवादक का व्यापार क्षेत्र

इस प्रकार अनुवाद एक श्रमसाध्य शृंखला-कर्म है जिसमें एक भाषा की रचना के संदेश/विषयवस्तु का यथासम्भव समतुल्य और सहज अभिव्यक्ति द्वारा कथ्य एवं शैली के स्तर पर दूसरी भाषा में संप्रेषण किया जाता है। वस्तुतः अनुवाद दो भाषाओं के संप्रेषण-व्यापार की अपेक्षा रखता है। पहली भाषा (स्रोत भाषा) का संबंध मूल लेखक की रचना से होता है और दूसरी भाषा (लक्ष्यभाषा) का संबंध अनुवादक के द्वारा अनूदित रचना से होता है। अतः अनुवाद-व्यापार दो भाषाओं के संप्रेषण-व्यापार से संबंधित है। इस अनुवाद व्यापार में अनुवादक को दो भिन्न भाषाओं के पाठों से रू-ब-रू होना पड़ता है, जिन्हें मूलपाठ और अनूदित पाठ कहा जाता है। चूँकि अनुवाद-प्रक्रिया में दो भाषाओं का संप्रेषण-व्यापार अपेक्षित होता है, इसलिए इसमें दो प्रकार के लेखक, संदेश/पाठ एवं पाठक की संकल्पना निहित रहती है हालांकि पाठ/संदेश का एक समान होना आवश्यक है। इसे निम्न आरेख से समझा जा सकता है :

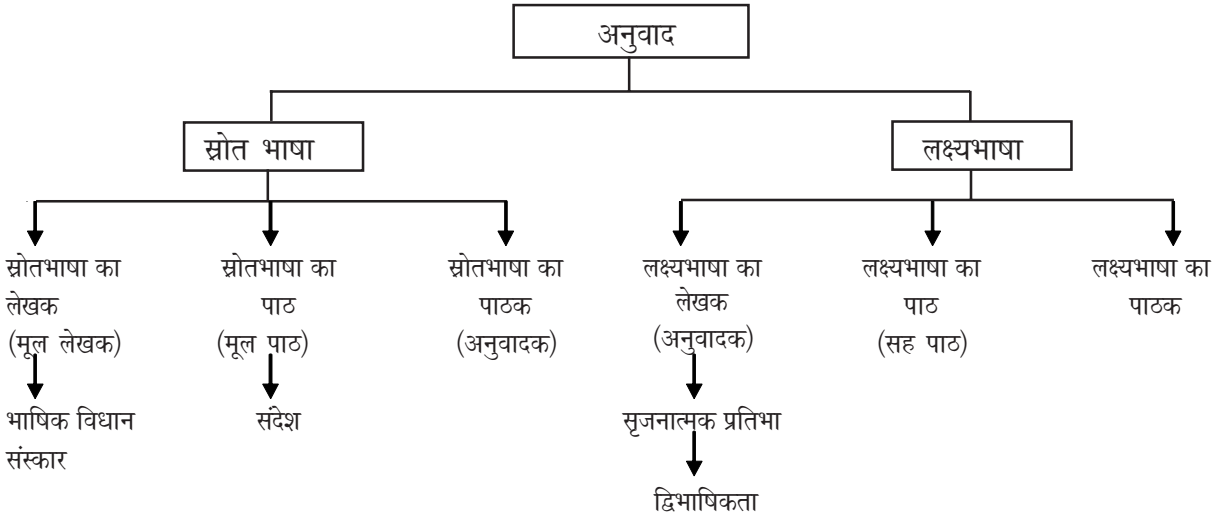

आरेख 1.8

उपर्युक्त आरेख से स्पष्ट है कि अनुवादक को अनुवाद प्रक्रिया से संबंधित द्विभाषिक संप्रेषण-व्यापार से गुजरते हुए दोहरी भूमिका का निर्वाह करना पड़ता है :

(क) स्रोतभाषा के पाठ के पाठक की भूमिका और लक्ष्यभाषा के पाठ के लेखक की भूमिका निभाना;

(ख) पाठक के रूप में मूल लेखक और लेखक के रूप में अनूदित पाठ के पाठक से तादात्म्य स्थापित करना;

(ग) पाठक (अनुवादक) के रूप में स्रोत भाषा के पाठ के भाषिक विधान और उसके संस्कार तथा लेखक के रूप में लक्ष्यभाषा के पाठ के सृजनात्मक कौशल का पर्याप्त ज्ञान रखना आवश्यक होता है।

इन तथ्यों के आलोक में हमें यह विदित होता है कि अनुवादक स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के मध्य एकाधिक भूमिकाओं को निभाता है, जिसमें भाषाओं की संरचना, व्याकरण, परिवेशीय तत्वों आदि को समझना तथा उनमें अर्थांतरण को सहज रूप से व्यवस्थित करना सम्मिलित रहता है।

1.6.1 पाठक की भूमिका

मूलपाठ अर्थात् मूल कृति का लेखक कोई दूसरा (अनुवादक से इतर) होता है और मूलपाठ के लेखन के समय उसका पाठक वर्ग भी कोई दूसरा ही होता है। अनुवादक मूल रचना के लेखक से परिचित हो भी सकता है और नहीं भी। एक पाठक के रूप में सबसे पहले अनुवादक का साक्षात्कार मूल रचना से ही होता है। इसका सर्वप्रथम दायित्व पाठक के रूप में मूल रचना में निहित संदेश/विषय वस्तु को समझना, उसका सही अर्थ-ग्रहण करना होता है। अनुवादक को मूल लेखक के मंतव्य और मूल कृति के संपूर्ण कलेवर को जानने-समझने के लिए काफ़ी गहरे उतरना पड़ता है। मूल लेखक और कृति के प्रति अपनी निष्ठा को सहेजना और संवारना पड़ता है। एक पाठक के रूप में पहले मूलपाठ के लेखक की रचना को आत्मसात् करता है, उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक या किसी अन्य पृष्ठभूमि से स्वंय को जोड़ता है और स्वंय पाठक बनकर सम्प्रेष्य पाठ की उपयुक्तता को जाँचता-परखता है।

1.6.2 द्विभाषिक की भूमिका

मूल रचना के पाठक की भूमिका निभाने और उसके संदेश का सही अर्थ ग्रहण करने के बाद अनुवादक लेखक द्विभाषिक की भूमिका निभाता है और संदेश का लक्ष्यभाषा में भाषांतरण करता है। मूल रचना के संदेश को भलीभाँति समझने के बाद उसे लक्ष्यभाषा में बाँधता है। किंतु यह कार्य इतना आसान नहीं है क्योंकि प्रत्येक भाषा एक विशेष प्रकार के परिवेश में पनपती है और उसकी अपनी अनेक निजी विशेषताएँ होती है। आवश्यक नहीं है कि सभी विशेषताएँ स्रोतभाषा की अभिव्यक्ति के पूर्णतया समान ही हों, और लक्ष्यभाषा में अभिव्यक्ति उपलब्ध हो ही जाए। भाषांतरण के क्षणों में मूल संदेश से जो अर्थ निकलता है वह लक्ष्यभाषा की अभिव्यक्ति से निकलने वाले अर्थ की तुलना में या तो विस्तृत होता है, या संकुचित होता है, या फिर उससे थोड़ा भिन्न भी हो सकता है। इस पूरी प्रक्रिया में अनुवादक को द्विभाषिक की भूमिका निभानी पड़ती है।

1.6.3 रचयिता की भूमिका

अर्थ यदि विस्तृत या संकुचित हो तो परिवेषगत अभिव्यक्तियाँ अनुवादक को विशेष साधन स्वरूप द्विभाषिए की भूमिका से प्राप्त होती हैं। अनुवाद प्रक्रिया के अंतर्गत मूलपाठ के अर्थग्रहण और अर्थांतरण के पश्चात् अनुवादक को लक्ष्यपाठ के पुनर्गठन के स्तर पर रचयिता (लेखक) की भूमिका निभानी पड़ती है। इसमें उसे स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा का समायोजन करते हुए लक्ष्यभाषा का पुनर्गठन करना होता है। लक्ष्यभाषा का यह पुनर्गठित रूप कहलाता है। यह पुनर्गठित रूप तभी सफल माना जाता है जब यह मूलपाठ का सहपाठ बनकर आए। इस स्थिति में अनुवादक स्वयं को पाठक की भूमिका में प्रस्तुत करता है और फिर अनूदित पाठ का विश्लेषण करते हुए उसका समायोजन एवं पुनर्गठन करता है। उसे अनूदित पाठ को अनेक स्तरों पर विभिन्न कसौटियों से जाँचना-परखना पड़ता है। लक्ष्यभाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए स्रोतभाषा की सामग्री को प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रक्रिया में अनूदित पाठ को पाठक के लिए सहज, स्पष्ट एवं बोधगम्य बनाया जाता है। समायोजन एवं पुर्नगठन के इस कार्य को भली भाँति न किए जाने पर अनुवाद सफलता की श्रेणी में नही रखा जा सकेगा। इसे सुचारू रूप से करने के लिए अनुवादक का दोनों भाषाओं की संरचना, व्याकरण, शैली, संस्कार आदि से सुपरिचित होना अति आवश्यक होता है।

1.7 अनुवाद प्रक्रिया : विभिन्न सोपान

अब तक आप विभिन्न विद्वानों-नाइडा, न्यूमार्क, बाथगेट और याकोब्सन तथा श्रीवास्तव एवं गोस्वामी द्वारा अनुवाद प्रक्रिया के संदर्भ में प्रस्तावित प्रारूपों से भलीभाँति अवगत हो चुके हैं। स्पष्टतः विद्वानों ने अपनी-अपनी दृष्टि के अनुरूप विभिन्न प्रारूपों पर चर्चा की है। इन प्रारूपों के माध्यम से अनुवाद प्रक्रिया के सोपानों की भी चर्चा की है। यद्यपि सोपानों की संख्या को लेकर विद्वानों में मतभेद है, फिर भी प्रमुखतया तीन सोपान ऐसे कहे जा सकते हैं जिनसे गुजरना किसी भी अनुवादक के लिए आवश्यक है। इन सोपानों पर विस्तृत चर्चा करने से पहले अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न भूमिकाओं, विभिन्न सोपानों से होकर गुजरने की प्रक्रियाओं तथा विभिन्न स्तरों पर समस्याओं के समाधानों से संक्षिप्त रूप से अवगत होना आवश्यक है। इन तीनों स्थितियों को निम्न आरेखों से समझा जा सकता है :

(क) अनुवादक द्वारा विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन

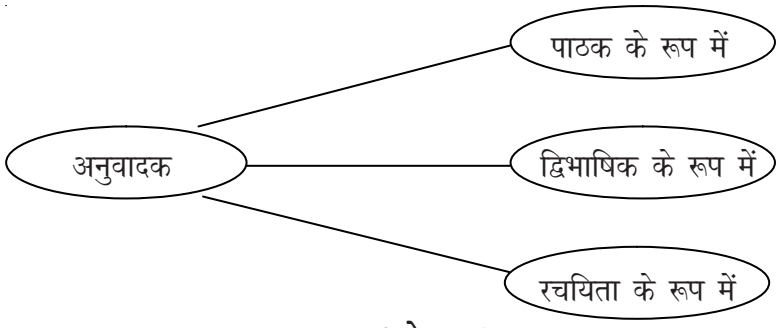

आरेख 1.9

(ख) अनुवादक द्वारा विभिन्न स्तरों पर समस्याओं का निराकरण

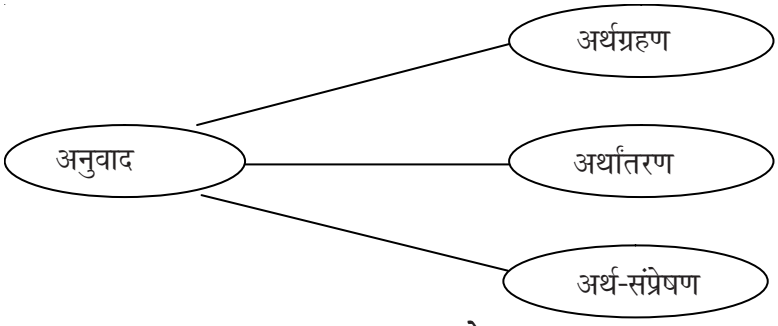

आरेख 1.10

(ग) अनुवादक द्वारा अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों की यात्रा

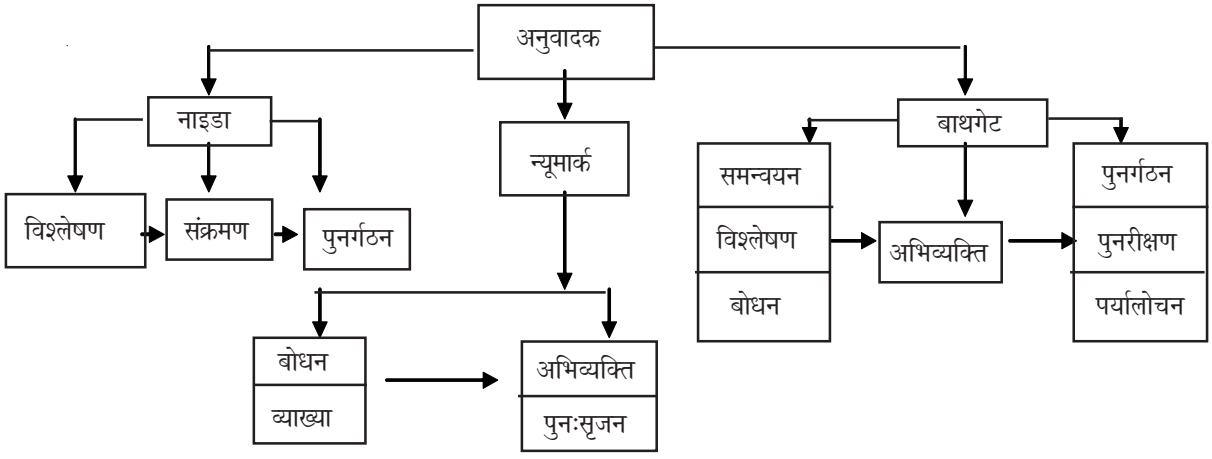

आरेख 1.11

अब हम अनुवाद प्रक्रिया के तीन मुख्य सोपानों पर विस्तृत चर्चा करेंगे :

1.7.1 विश्लेषण-पाठक की भूमिका एवं अर्थग्रहण/बोधन की प्रक्रिया

अनुवादक द्वारा की जाने वाली अनुवाद प्रक्रिया संबंधी यात्रा का यह प्रथम सोपान है। यहाँ अनुवादक को पाठक के रूप में स्रोतभाषा के पाठ का अर्थग्रहण करने हेतु उसका विश्लेषण करना होता है। यह विश्लेषण भाषा के स्तर पर तथा विषयवस्तु के स्तर पर किया जाता है। स्रोतभाषा का पाठ एक ऐसी पूर्ण भाषिक इकाई है जिसमें कथ्य और अभिव्यक्ति/शैली संश्लिष्ट रूप में विद्यमान रहता है इसलिए अनुवादक को मूलपाठ में निहित संदेश के अर्थग्रहण के लिए पाठ का शैलीपरक विश्लेषण करना होता हैं। विश्लेषण अभिव्यक्ति के विभिन्न स्तरों पर किया जाता है; जैसे- शब्द-संस्कार, विभिन्न अर्थ-प्रकार, वाक्य-विन्यास, शब्द-शक्ति आदि के स्तरों पर।

(क) भाषा के स्तर पर विश्लेषण

इसके अंतर्गत अनुवादक भाषिक अभिव्यक्तियों के विश्लेषण के द्वारा स्रोतभाषा के पाठ के अर्थ को भलीभाँति ग्रहण करता है। एक सजग पाठक के रूप में अनुवादक मूल लेखक द्वारा अभिव्यक्त कथ्य/संदेश में निहित शब्दार्थ एवं भाषिक संरचनाओं के बहुआयामी प्रयोगों का विश्लेषण करता है और उनके द्वारा संप्रेषित की जा रही स्थूल एवं सूक्ष्म अर्थच्छवियों को यथासंभव पकड़ने का प्रयास करता है। यह प्रक्रिया निम्नलिखित स्तरों पर की जाती है।

(1) लक्षणापरक एवं व्यंजनापरक अभिव्यक्तियों के स्तर पर

अनुवादक मूलपाठ का सही अर्थ ग्रहण करने के लिए लक्षणापरक एवं व्यंजनापरक अभिव्यक्तियों का विश्लेषण करता है। किसी एक शब्द का अभिधात्मक, लक्षणात्मक एवं व्यंजनात्मक प्रयोग अर्थ की विभिन्नता दिखाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि अनुवादक भाषिक अभिव्यक्ति के अनुसार ही अर्थग्रहण करे, अन्यथा अर्थ-परिवर्तन हो सकता है। वास्तव में भाषाओं की प्रकृतिगत भिन्नता के कारण यह कार्य अत्यधिक कठिन हो जाता है। उदाहरण के लिए, 'पानी' शब्द के विभिन्न भाषिक प्रयोग भिन्न-भिन्न अर्थों की प्रतीति कराते हैं। इनमें अर्थ की सूक्ष्मता का अंतर निहित रहता है।

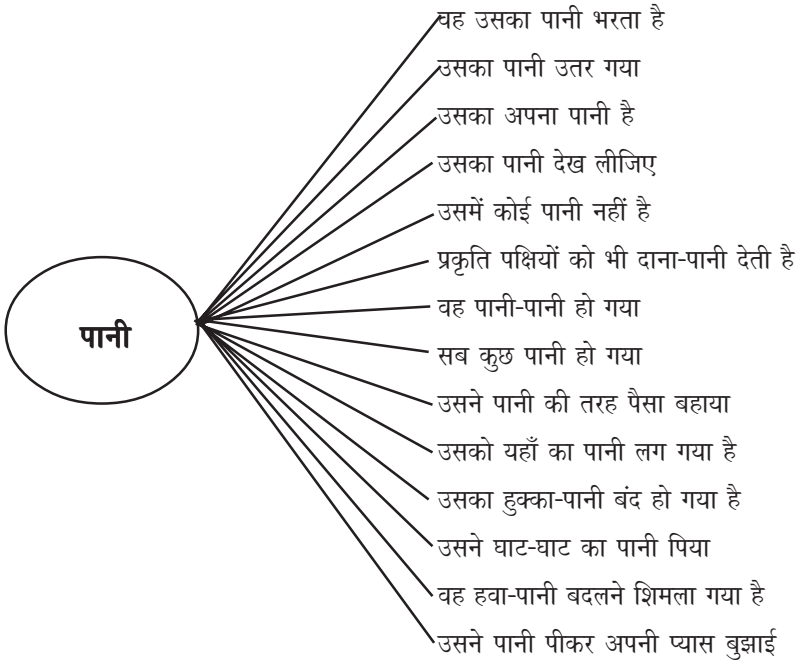

आरेख 1.12

स्पष्ट है कि अंतिम वाक्य को छोड़कर सभी वाक्यों में लक्षणा एवं व्यंजना उद्धत व्यंग्यार्थ ध्वनित हो रहा है। यदि अनुवादक इन वाक्यों में निहित व्यंग्यार्थ को नहीं पकड़ पाएगा तो वह लक्ष्यभाषा में उनके विशिष्ट अर्थ के सौंदर्य को ध्वनित नहीं कर पाएगा। यदि वह इनके अभिधात्मक अर्थ तक ही सीमित रहता है तो मूलार्थ का सौंदर्य नष्ट

हो जाएगा। उदाहरण के लिए प्रथम वाक्य- 'वह उसका पानी भरता है' में व्यक्ति का किसी के आधीन होने का भाव, दासता अथवा नौकरी-चाकरी का भाव निहित है। इसके स्थान पर इसका शब्दानुवाद - He fetches water for him - करने पर अभिव्यक्त का समस्त सौंदर्य समाप्त हो जाता है। 'उसका अपना पानी है' - वाक्य में 'पानी' व्यक्ति के मान-सम्मान के अर्थ को ध्वनित करता है। इस अर्थ को ग्रहण न कर पाने की स्थिति मे यदि इसका अनुवाद- 'He has his own water' - कर दिया जाए तो सोचिए क्या स्थिति होगी? इसी प्रकार 'दाना-पानी', 'पानी-पानी', 'पानी होना', 'पानी की तरह बहाना', 'पानी लगना', 'हुक्का-पानी', 'घाट-घाट का पानी पीना', 'हवा-पानी' जैसी भाषिक अभिव्यक्तियों में क्रमशः 'खुराक/भोजन', 'शर्मिंदा होना/लजाना', 'नष्ट होना', 'व्यर्थ में लुटाना', 'अनुकूल होना/रास आना', 'सामाजिक बहिष्कार करना', 'विभिन्न स्थानों के भ्रमण का अनुभव होना', 'जलवायु परिवर्तन करना' जैसे अर्थ ध्वनित हो रहे हैं। यदि अनुवादक इन अर्थछवियों के सौंदर्य को पकड़े बिना नीचे दिए गए रूप में अभिधात्मक अनुवाद करता है तो यह उसकी असफलता ही कहलाएगी; जैसे-

दाना-पानी _____ seed and water

पानी-पानी _____ water and water

पानी होना _____ to be water

पानी की तरह बहाना _____ to shed like water

पानी लगना _____ to suit water

हुक्का-पानी _____ to smoke and water

घाट-घाट का पानी पीना ____ to drink water of different river band

हवा-पानी _____ air and water

ऐसी भाषिक अभिव्यक्तियों के व्यंग्यार्थ को समझने के लिए अनुवादक को सतर्कता बरतनी होगी।

(2) सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के स्तर पर

प्रत्येक संस्कृति की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं और उन विशेषताओं के अनुरूप ही उस संस्कृति की भाषा में कुछ विशिष्ट शब्दावली एवं अभिव्यक्तियाँ भी होती हैं। इनमें निहित अर्थ को समझना अनुवादक के लिए प्रायः कठिन कार्य होता है। थोड़ी-सी भी असावधानी होते ही अर्थ-विशेष अनुवादक से छूट सकता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी-भाषी एवं हिंदी-भाषी समाज में अभिवादन-व्यवस्था की अपनी विशिष्टता है। अंग्रेजी में इसका प्रयोग समय के संदर्भ में किया जाता है, किंतु हिंदी में सामाजिक संस्कारों एवं स्तर-भेद के संदर्भ में होता है। अंग्रजी में 'Good morning', 'Good evening', 'Good after-noon', 'Good night', 'Bye-Bye', का प्रयोग बिना सामाजिक स्तर-भेद तथा संस्कार-भेद के किया जाता है, किंतु हिंदी में ऐसा नहीं है। अपनों से बड़ों के लिए 'प्रणाम' या 'पाँव लागूँ', अपनों के बराबर वालों के लिए 'नमस्कार', 'नमस्ते', 'राम-राम', 'जय राधे' और अपनों से छोटों के लिए 'चिरंजीव भव', 'आयुष्मान भव', 'जीते रहो', जैसी अभिव्यक्तियों का प्रयोग किया जाता है जिनमें प्रातः दोपहर या सायं जैसा कोई समय सूचक भाव नहीं रहता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रत्येक भाषा और उसकी सामाजिक-सांस्कृतिक अभिवादन-परंपराओं के अनुसार किसी भी संदेश को विशिष्टता प्रदान करती हैं जिसका निर्वाह अनुवाद में किया जाना चाहिए।

इसी संदर्भ में अनुवादक को ऐसी अभिव्यक्तियों का भी अर्थग्रहण करना पड़ता है जो अलग-अलग देशों मे सामाजिक-भौगोलिक परिस्थितियों के कारण अलग-अलग अर्थ की सूचक होती हैं, जैसे 'Orange' को भारत में 'संतरा' कहते हैं किंतु अमेरीका में इसे 'मुसम्मी' (नारंगी) कहा जाता है। वहाँ 'संतरा' को 'मंदारिन' कहते हैं। भारत में 'चप्पल' और 'सैंडिल' के भिन्न अर्थ हैं जबकि अमेरीका में दोनों को ही 'सैंडिल' कहा जाता है। इंग्लैण्ड और अमेरिका की अंग्रेजी में भी अर्थ के स्तर पर अनेक अंतर हैं, जैसे इंग्लैण्ड और भारत की अंग्रेजी में 'बुशर्ट', 'होस्टल', 'फ्लैट', 'बाथरूम', 'अटैची', 'कर्ड', 'ट्रेन', 'लिफ्ट', 'पेट्रोल', आदि शब्द प्रचलित हैं, किंतु अमेरीका की अंग्रेजी में इन्हें क्रमशः 'शर्ट', 'डॉम', 'अपार्टमैंट', 'रेस्टरूम', 'सूटकेस', 'योगर्ट', 'लोकोमोटिव', 'एलिवेटर/एसकेलेटर',

'गैसोलिन' कहा जाता है। अतः अनुवादक को इस प्रकार की सामाजिक-सांस्कृतिक शब्दावली का विश्लेषण करते हुए सही अर्थग्रहण करना चाहिए।

(3) मुहावरों के स्तर पर

मूलपाठ के विश्लेषण के सोपान पर अनुवादक से स्रोतभाषा के मुहावरों तथा लोकोक्तियों का गहन विश्लेषण अपेक्षित होता है। ऐसा न होने पर मुहावरों का शाब्दिक अर्थ ही सामने होता है और सूक्ष्म एवं अभिप्रेत अर्थ पीछे छूट जाता है। इससे विशिष्ट अर्थ का सौंदर्य नष्ट हो जाता है और अभिव्यक्ति का पैनापन भी समाप्त हो जाता है। इससे वह विशिष्ट अभिव्यक्ति अपना प्रभाव खो बैठती है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित मुहावरेदार अभिव्यक्तियाँ देखी जा सकती हैं- 'मेरा सिर चक्कर खा रहा है।' का शाब्दिक अर्थ के संदर्भ में अंग्रेजी अनुवाद होगा 'My head is eating circles'। इसी प्रकार 'वह पानी-पानी हो गया', 'मेरा दिल बाग-बाग हो गया', 'अब अपनी लड़की के हाथ पीले कर दो' का शाब्दिक अर्थ लेते हुए क्रमशः अनुवाद इस प्रकार होगा- 'He became water-water', 'My heart became garden-garden', 'Now make your girls hands yellow'। इसके विपरीत इन अभिव्यक्तियों के व्यंग्यार्थ (अभीष्ट अर्थ) के समस्त सौंदर्य की रक्षा करते हुए ही अर्थग्रहण किया जाना चाहिए। इस दृष्टि से इनका अनुवाद क्रमशः इस प्रकार होना चाहिए- 'I am feeling giddy', 'He was quite ashamed of himself', 'I felt extremely happy', 'Now get your daughter married'।

(4) अंलकारों के स्तर पर

मूलपाठ के विश्लेषण एवं बोधन के संदर्भ में विभिन्न अलंकारों का भी सूक्ष्म विश्लेषण किया जाना चाहिए विशेष रूप से श्लेष, यमक, उपमा, रूपक, आदि अनेक ऐसे अलंकार है कि यदि इनका गहन विश्लेषण न किया जाए तो अर्थ विशेष की संप्राप्ति असंभव है। उदाहरण के लिए, शेक्सपीयर के नाटक 'हैमलैट' की निम्न पंक्ति देखी जा सकती है, जिसे पोलोनियम से बात करते हुए हैमलेट ने कहा है- 'That brute of his pilled the Capital a calf these' प्रस्तुत पंक्ति में तीन स्थलों पर श्लेष अलंकार का प्रयोग हुआ है-'brute', 'capital' और 'calf.' इनमें से 'brute' का प्रयोग 'brutus' नामक योद्धा को संकेतिक करता है और साथ ही उसकी बर्बरता को भी, 'capital का प्रयोग 'राज्य' के अर्थ के साथ-साथ 'उत्तराधिकारी' के अर्थ को भी व्यंजित करता है; और 'calf' शब्द (बछड़े) 'जानवर' के अर्थ को ध्वनित करने के साथ-साथ 'राजकुमार' के अर्थ की ओर भी संकेत करता है। प्रसाद की पंक्ति (आँसू) - 'तुम सुमन नोचते, सुनते करते जानी-अनजानी'- में 'सुमन' दो अर्थो में प्रस्तुत हुआ है- 'फूल' और 'हृदय'।

श्लेष की भाँति ही यमक में भी ऐसी ही समस्या सामने आती है। बिहारी के प्रसिद्ध दोहे – 'कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय' में और विद्यापति के दोहे – 'तू मोहन के उरबसी है उरबसी समान' में एक ही शब्द का एकाधिकार बार प्रयोग करके उसमें अर्थगत भिन्नता को लक्षित किया गया है। ऐसी स्थिति में भी अनुवादक को ध्यानपूर्वक विश्लेषण करके अर्थग्रहण करना होता है।

उपमा के अनुवाद के संदर्भ में उपमान-उपमेय का भलीभाँति विश्लेषण करना आवश्यक होता है जिससे दोनों भाषाओं में वे समान अर्थ को संप्रेषित कर सकें। समानार्थक उपमान उपलब्ध न होने की स्थिति में लक्ष्यभाषा में स्रोतभाषा के उपमान का निकटार्थ उपमान खोजना चाहिए जब तक अनुवादक मूलपाठ का विश्लेषण करके सही अर्थग्रहण नहीं करेगा, तब तक वह न तो समानार्थक उपमानों और न ही निकटार्थ उपमानों की खोज कर पाएगा। उदाहरण के लिए, 'हिरणी-सी चाल' और 'झील सी आँखें' जैसी उपमाओं वाली अभिव्यक्तियों के लिए अंग्रेजी में समानार्थक उपमान वाली अभिव्यक्तियाँ उपलब्ध हैं, जैसे 'gait like a deer' और 'eyes like a lake'। किंतु 'हिमालय सा ऊँचा' और 'भगीरथ-सा साहसी' जैसी अभिव्यक्तियों के लिए अंग्रेजी में समानार्थक के स्थान पर निकटार्थ उपमानों वाली अभिव्यक्तियों की खोज अनुवादक को करनी होगी, जैसे 'High like alps' और 'Brave like Hercules'। तात्पर्य यह कि स्थिति कैसी भी हो, मूलपाठ का विश्लेषण तथा भाषा के परिवेश समानार्थी खोजकर उसके अर्थ को भलीभाँति समझना अति आवश्यक है। रूपक वाली अभिव्यक्तियों की भी यही स्थिति है।

(5) समान शब्दावली के स्तर पर

समान शब्दावली में अर्थ की सूक्ष्म भिन्नता होने के कारण कभी-कभी अनुवादक गलत अर्थ निर्धारण कर बैठता है। हिंदी में संस्कृत के अनेक शब्द प्रचलित हैं और इनमें एक ही शब्द के लिए तत्सम और तद्भव शब्द भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं, जैसे 'चूर्ण' (तत्सम) का अर्थ है 'कोई भी चूर्ण' किन्तु 'चून' (तद्भव) का अर्थ है 'आटा'। इसी प्रकार 'दंड' (तत्सम) और 'डंडा' (तदभव), 'संबंधी' (तत्सम) और 'समधी' (तद्भव), 'पाद' (तत्सम) और 'पाँव' (तद्भव) आदि देखे जा सकते हैं। शब्दों की इस अर्थ-भिन्नता के कारण अनुवादक के द्वारा विश्लेषण करके मूलपाठ में विद्यमान ऐसे शब्दों का सही अर्थग्रहण किया जाना चाहिए अन्यथा अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है। मूलपाठ के पूर्ण अर्थबोध के लिए केवल वाक्य का विश्लेषण ही पर्याप्त नहीं है। विश्लेषण के साथ-साथ तर्क और बुद्धि के स्तर पर भी अर्थ-संयोजन करना पड़ता है। प्रत्येक वाक्य से जो अर्थ निकलता है वह संदर्भपरक और तर्कपूर्ण भी होता है। भाषा की वाक्य-संरचना दो या अधिक अर्थों को एक ही अभिव्यक्ति द्वारा व्यक्त करती है और कहीं दो-तीन अभिव्यक्तियों द्वारा एक ही अर्थ व्यक्त करती है। इसलिए विश्लेषण करते समय भाषा में कुछ न कुछ अनेकार्थी, पर्यायवाची, संदिग्धार्थ संरचनाएँ उपलब्ध हो जाती हैं जिनका विशिष्ट अर्थ संदर्भ प्रसंग से ही स्पष्ट हो सकता है।

(6) अनेकार्थी भाषिक संरचनाओं के स्तर पर

अंग्रेजी की अनेक संरचनाएँ एक से अधिक अर्थच्छवियों को संप्रेषित करने की क्षमता रखती हैं, जैसे

(क) In fact he is an old hand. (हाथ/अनुभवी)

(ख) We need an extra hand in this office. (सहायता/कार्मिक)

(ग) Application should be written in legible hand. (लिखावट)

(घ) The university is just at hand. (नजदीक/पास)

(ड़) He has no hand in this dispute. (भूमिका/हाथ)

(च) He has injured his left hand. (हाथ/बाजू)

(छ) He is the right hand of the minister. (नजदीकी)

यद्यपि इन सभी वाक्यों में एक ही शब्द 'hand' का प्रयोग किया गया है, किंतु सभी में अर्थ भिन्न-भिन्न है। यदि इन वाक्यों में 'hand' को एक ही अर्थ में बिना विश्लेषण एवं अर्थ-बोधन के प्रयोग किया जाए तो इन वाक्यों का हिंदी अनुवाद इस प्रकार होगा :

(क) वास्तव में वह एक बूढ़ा हाथ है।

(ख) हमें इस कार्यालय में एक अतिरिक्त हाथ चाहिए।

(ग) आवेदन-पत्र एक पठनीय हाथ से लिखा जाना चाहिए।

(घ) विश्वविद्यालय हाथ पर ही है।

(ड़) इस झगड़े में उसका कोई हाथ नहीं है।

(च) उसने अपना बांया हाथ जख्मी कर लिया है।

(छ) वह मंत्री का दांया हाथ है।

स्पष्टतः यह स्थिति हास्यास्पद ही कही जाएगी। इसके विपरीत यदि अनुवादक इन वाक्यों में प्रयुक्त 'hand' शब्द के विभिन्न अर्थों को ध्यान में रखते हुए अर्थग्रहण करे तो इन वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार होगा :

(क) वास्तव में वह एक अनुभवी व्यक्ति है।

(ख) हमें इस कार्यालय में एक अतिरिक्त सहायक की आवश्यकता है।

(ग) आवेदन-पत्र साफ-सुथरी लिखावट में लिखा जाना चाहिए।

(घ) विश्वविद्यालय यहाँ से बहुत नजदीक है।

(ड़) इस झगड़े में उसका कोई हाथ (योगदान) नही है।

(च) उसके बाएँ हाथ में चोट लग गई है।

(छ) वह मंत्री का दायाँ हाथ (नजदीकी) है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि अनेकार्थी भाषिक संरचनाओं के स्तर पर पाठ-विश्लेषण द्वारा अर्थग्रहण/बोधन कितना आवश्यक है।

(7) पर्यायवाची शब्दों के स्तर पर

मूलपाठ के अर्थग्रहण करने के लिए अनुवादक को पर्यायवाची शब्दों के स्तर पर भी विश्लेषण करना पड़ता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित पर्यायवाची शब्द देखे जा सकते हैं :

Ice_____ snow

Air_____ wind

Hear _____ listen

See _____ look

Lecture _____ speech

Talk_____ chatter

पर्यायवाची होते हुए भी इनमें अर्थ-भेद है। विश्लेषण न किए जाने की स्थिति में इनका प्रयोग इस प्रकार किए जाने की संभावना बनी रहती है :

(i) Ice freezes at 100°C.

(ii) Snow-fall is expected next week in Shimla,

(iii) Wind pollution is the main problem.

(iv) Strong airs are predicted tomorrow.

(v) I look a bird on the tree.

(vi) See at the blackboard.

(vii) Airtel has offered cheaper chatter-value.

(viii) That lady is really a talk-box.

इन सभी वाक्यों में गलत पर्यायों का प्रयोग हुआ है। गलत सहप्रयोग के परिणामस्वरूप अर्थ की संप्रेषणीयता प्रभावित हो गई है। स्पष्ट है कि इन वाक्यों में क्रमशः ice, snow, air, winds, see, look, talk, chatter शब्दों का प्रयोग करने पर ही सही अर्थ संप्रेषित किया जा सकता है। यहाँ रूढ़िगत अर्थ पर भी ध्यान देने की आवश्यकता बनी रहती है।

(8) संदिग्धार्थी संरचनाओं के स्तर पर

अनेक ऐसी संरचनाएँ होती हैं जिनके अर्थ का निर्धारण संदर्भ/प्रसंग का विश्लेषण करने से ही किया जा सकता है। उदाहरण के लिए,

(i) चाँद निकल आया है।

(ii) उसने मनभर मिठाई खाईं

(iii) He planted a foot on his foot.

वाक्यों में क्रमशः 'चाँद', 'मनभर' और 'planted' संदिग्ध अर्थों के सूचक हैं। 'चाँद'- (1) चंद्रमा और (2) गंजापन; मनभर- (1) चालीस सेर के बराबर वजन होना और (2) जी भरकर खाना; और 'planted'- (1) पौधा लगाना और (2) (पाँव) रखना।

अतः अर्थग्रहण/बोधन के लिए संदर्भ का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए क्योंकि यह विभिन्न प्रकार की भाषिक संरचनाओं के सही अर्थ को ग्रहण करने में सहायक होता है।

इसके अतिरिक्त अनुवाद-प्रक्रिया में दो भाषाओं की शैलीगत भिन्नता का कारण उनकी रूप-रचना और वाक्य-रचना की भिन्नता होती है। इस भिन्नता के कारण ही अर्थ-भिन्नता सामने आती है। अनुवाद प्रक्रिया के दौरान अनुवादक के लिए जहाँ प्राथमिक स्तर पर रचना से संबंधित स्रोत भाषा को कथ्य और व्यंजना की दृष्टि से गहराई से समझना होता है, वहीं संप्रेषण की दृष्टि से व्याकरण की सूक्ष्मताओं का भी गहन विश्लेषण करना जरूरी होता है। भाषिक संरचना को लक्ष्यभाषा में संप्रेषित करने के लिए अनुवादक को भाषा-विशेष के भीतरी विधान पर नियंत्राण रखते हुए अनुवाद कार्य करना होता है। समस्त संप्रेषण-क्रियाएँ जितनी अर्थ और विचार स्तर से संबद्ध होती हैं, उतनी ही भाषा और उसके अभिव्यंजना-पक्ष से भी। अतः मूलपाठ के अर्थग्रहण/बोधन के लिए व्याकरण के स्तर पर अनेक भाषिक अभिव्यक्तियों/संरचनाओं का विश्लेषण करना आवश्यक होता है। इनमें से कुछ संरचनाओं की प्रक्रियात्मक दृष्टि से चर्चा यहाँ की जा रही है :

(1) वचन के स्तर पर

अंग्रेजी की अनेक ऐसी संरचनाएँ हैं जिनका वचन-निर्धारण करना कठिन होता है। यदि इनका सूक्ष्म विश्लेषण न किया जाए तो अर्थग्रहण तथा बोधन में समस्या उत्पन्न हो सकती है। अंग्रेजी में निम्नलिखित अभिव्यक्तियाँ एक वचन एवं बहुवचन दोनों ही तरह से प्रयुक्त की जाती हैं।

(i) A group of things.

(ii) A crowd of people.

(iii) A flock of sheep.

(iv) A herd of cattle.

(v) A regiment of soldiers.

(vi) An audience of spectators.

(vii) A congregation of devotees.

जब इन्हें किसी एक समूह के रूप में प्रयुक्त किया जाता है तो ये अभिव्यक्तियाँ एकवचन होती हैं और जब इन्हें एक-एक भिन्न इकाई के रूप में प्रयुक्त किया जाता है तो ये बहुवचन होती हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी में कुछ ऐसे शब्द हैं जो अपने वर्ग या श्रेणी की कई वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं; जैसे- 'crockery', 'stationery', 'footwear', 'furniture', 'cutlery'। ऐसे शब्दों को अंग्रेजी में एकवचन माना जाता है। अज्ञानतावश यदि अनुवादक इन्हें बहुवचन समझकर अनुवाद करता है तो वह उचित नहीं होगा। इसके अतिरिक्त, 'scissors', 'trousers', 'spectacles', 'tongs' आदि को अंग्रेजी में बहुवचन माना जाता है जबकि हिंदी में एकवचन, जैसे 'scessors' कैंची है, कैंचियाँ नही; 'trousers' पाजामा/पैंट है, पाजामें/पैंटें नहीं; 'spectacle' चश्मा है, चश्मे नहीं। कुछ अन्य शब्द- 'news', 'maps', 'ethics', 'measles' आदि- देखने में बहुवचन प्रतीत होते हैं किंतु वे एकवचन होते हैं, जैसे 'this is a good news'। इसके विपरीत 'cattle', 'sheep', 'poetry', 'scenery' आदि शब्द देखने में एकवचन लगते हैं, किंतु वास्तव में हैं बहुवचन। अतः अंग्रेजी में इनका बहुवचन क्रमशः 'cattles', 'sheeps', 'poetries' 'sceneries' करना गलत होगा जबकि हिंदी में इन्हें पशु, भेड़े, मुर्गियाँ, दृश्यावली आदि शब्दों से रूपांतरित करेंगे। व्याकरण के संदर्भ में वचन के स्तर पर अर्थग्रहण या बोधन के लिए विश्लेषण करने के अतिरिक्त लिंग, कारक, क्रिया, क्रिया-विशेषण, सर्वनाम, विशेषण, शब्द-क्रम,उपपद (आर्टिकल्स), पूर्वसर्ग (prepositions) आदि के स्तर पर भी यह आवश्यक है।

(10) शब्द-क्रम के स्तर पर

वाक्य रचना के संदर्भ में शब्द-क्रम की भिन्नता अर्थ-भिन्नता का कारण बनती है, जैसे क्रिया का भिन्न क्रम अंग्रेजी वाक्य- 'Ram is writing a letter' में 'कर्ता-क्रिया-कर्म' का क्रम है, किंतु इसके हिंदी अनुवाद- 'राम पत्र लिख रहा है' में यह क्रम बदलकर 'कर्ता-कर्म-क्रिया' हो जाता है। संस्कृत में इस क्रम का विशेष महत्व नहीं है (जैसे- रामः पत्रम् लिखति, रामः लिखति पत्रम्, लिखति पत्रम् रामः)।

(11) पूर्वसर्ग रूपों (Prepositions) के स्तर पर

अंग्रेजी संरचनाओं में प्रायः क्रिया के साथ संबंधबोधक शब्दों का प्रयोग किया जाता है, जबकि हिंदी की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए उनका लोप किया जाता है, जैसे 'He had to go to hospital', (उसे अस्पताल जाना है) 'He has just arrived in Mumbai', (वह अभी मुंबई पहुँचा है) 'I am waiting for him' (मैं उनकी प्रतीक्षा कर रहा हूँ), 'He walks on foot' (वह पैदल चलता है) आदि वाक्यों में हिन्दी की प्रकृति के अनुसार क्रमशः to, in, for, on का लोप करते हुए ही अनुवाद होता है।

(12) उपपद (आर्टिकल्स) के स्तर पर

अंग्रेजी संरचनाओं में उपपद (आर्टिकल्स) A, an, the का प्रयोग काफी किया जाता है। इनके प्रयोग से अर्थ विशेष को संप्रेषित किया जाता है। उदाहरण के लिए, few/a few/the few; little/a little/the little; man/a man/the man; poor/the poor; English/the English; lunch/ the lunch; school/the school जैसी अभिव्यक्तियों में निहित सूक्ष्म अर्थ को ग्रहण करने के लिए अनुवादक को इनका विश्लेषण करना ही होगा।

उपर्युक्त स्तरों पर मूलपाठ के अर्थग्रहण या बोधन के उद्देश्य से किए जाने वाले विश्लेषण के अतिरिक्त पदबंध, पदक्रम, सहप्रयोग, कर्तृवाच्य एवं कर्मवाक्य आदि के स्तर पर भी यह अपेक्षित होता है। नीचे इनकी सोदाहरण चर्चा की जा रही है :

(13) पदबंध के स्तर पर

इस स्तर पर भी विश्लेषण आवश्यक होता है। इसके अभाव में लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुकूल भाषायी अभिव्यक्तियों का प्रयोग नहीं हो पाएगा और वांछित अर्थ भी संप्रेषित नहीं हो पाएगा। अतः अनुवादक को चाहिए कि अपेक्षित विश्लेषण करते हुए तथा सही अर्थ को समझते हुए लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप ही भाषायी अभिव्यक्तियों का प्रयोग करे। उदाहरण के लिए निम्नलिखित अभिव्यक्तियाँ देखी जा सकती है :

(क) 'Mind your language.'

(ख) 'Behave yourself.'

विश्लेषण द्वारा अपेक्षित अर्थ ग्रहण न किए जाने पर हिंदी में इन अभिव्यक्तियों का संप्रेषण इस प्रकार हो सकता है :

(क) 'अपनी भाषा का मस्तिष्क बनाओ/तैयार करो'।

(ख) 'स्वयं से व्यवहार करो'।

किंतु अंग्रेजी भाषा की अभिव्यक्तियों के पर्याप्त ज्ञान और विश्लेषण की सहायता से इन अभिव्यक्तियों को सार्थक रूप से संप्रेषित किया जा सकता है :

(क) 'जुबान सँभालकर बात करो'।

(ख) 'तमीज से पेश आओ'।

(14) पदक्रम के स्तर पर

पदक्रम के स्तर पर भी अर्थ-ग्रहण के प्रति सावधानी आवश्यक है। अनुवाद पदक्रमता के विश्लेषण से अर्थ निर्धारण में अधिक सफल हो सकता है। विश्लेषण के लिए यह वाक्य देखा जा सकता है-'सीता चलती हुई बस में चढ़ी।'

इस वाक्य में यह अर्थ स्पष्ट नहीं है कि कौन चल रहा है- 'सीता' अथवा 'बस'। अनुवादक को इस प्रकार का अर्थ ग्रहण करने के लिए वाक्य को संदर्भ में रखते हुए उसका विश्लेषण करना चाहिए अन्यथा उसके दो अलग-अलग अर्थ संभव होंगे :

(क) 'Sita got into running bus'.

(ख) 'While running Sita got into the bus'.

परंतु सामान्यतः यहाँ moving bus ही अभिप्राय होगा। अतः व्यावहारिकता से भी अर्थ पदक्रम पर प्रतिलक्षित कर देखा जा सकता है।

(15) सहप्रयोग के स्तर पर

सहप्रयोग के स्तर पर विश्लेषण के लिए यह वाक्य देखिए-'क्या आप सिगरेट पीएंगे?' प्रस्तुत वाक्य में हिंदी की प्रकृति के अनुसार तो सिगरेट के लिए 'पीना' क्रिया उचित है, किंतु अंग्रेजी की प्रकृति के अनुसार सिगरेट के लिए 'पीना' (drink) क्रिया का प्रयोग नहीं किया जाता। यदि अनुवादक बिना विश्लेषण किए इसका अनुवाद-'will you drink cigarette'? करता है तो यह अनुचित ही है। विश्लेषण के परिणामस्वरूप ही अनुवादक को यह ज्ञात हो सकता हैं कि अंग्रेजी भाषा में किस संज्ञा के साथ कौन सी क्रिया का प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी स्थिति यह भी होती है कि हिंदी में प्रयुक्त संज्ञा और क्रिया दोनों का लोप करते हुए किसी विशिष्ट संरचना द्वारा अर्थ को संप्रेषित किया जाता है; जैसे कि प्रस्तुत वाक्य में देखा जा सकता है। अतः सही अनुवाद इस प्रकार होगा-'will you smoke'? यहाँ smoke अपने में ही क्रिया पद बन जाता है।

(16) कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के स्तर पर

इस स्तर पर भी विश्लेषण करना आवश्यक है, क्योंकि इन दोनों प्रकार की संरचनाओं में अर्थ-भेद की संभावना बनी रहती है।

(क) मोहन ने गाना नहीं गाया।

(ख) मोहन से गाना नहीं गाया गया।

स्पष्ट है कि जहाँ प्रथम वाक्य में मोहन के कर्तृत्व पक्ष पर अधिक जोर दिया गया है वहाँ दूसरे वाक्य में कर्मरूप में प्रयुक्त 'गाना' पर। निश्चय ही अर्थ का यह सूक्ष्म अंतर विश्लेषण करने पर ही सामने आ पाता है।

(17) विषयवस्तु के स्तर पर विश्लेषण

भाषिक अभिव्यक्तियों के स्तर पर विश्लेषण जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक विषयवस्तु के स्तर भी है। मूलपाठ के विषय/कथ्य के विश्लेषण के लिए अनुवादक का उसका विशेषज्ञ होना आवश्यक है। मान लीजिए विषयवस्तु जीवविज्ञान, कंप्यूटर, सांख्यिकी, प्रौद्योगिकी, ज्योतिष, वास्तुविज्ञान से संबंधित है तो अनुवादक के लिए भी उनका यथासंभव ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि इसके अभाव में विश्लेषण संभव नहीं है और विश्लेषण के बिना अर्थग्रहण/बोधन की प्रक्रिया संभव नहीं है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य प्रस्तुत हैं-

(1) Bulls and Bears clashed together in the market. (commerce)

(2) The bees generally wake up very quickly in the light. (zoology)

(3) The rights of the crown in Britain are well-defined. (political science)

(4) Issue necessary notification as per draft placed below for approval. (administration)

(5) Communication is the exchange of views/ information between the sender and the receiver. (communication)

(6) Action and reaction are equal and opposite. (physics)

(7) The culprit appeared in the court. (law)

सामान्य भाषा में इन वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार होगा :

(1) बाजार में बैलों और भालुओं की भिड़ंत हुई

(2) प्रायः मधुमक्खियाँ प्रकाश में बहुत जल्दी जाग जाती हैं।

(3) ब्रिटेन में मुकुट के अधिकारों को भलीभाँति परिभाषित किया गया है।

(4) अनुमति के लिए निम्न प्रारूप के अनुसार आवश्यक सूचना/जानकारी निकाल दें।

(5) संलाप/संदेश प्रेषक और प्राप्तकर्ता के मध्य विचारों/सूचना का आदान-प्रदान है।

(6) क्रिया और प्रतिक्रिया समान एवं विपरीत होती है।

(7) अभ्युक्त कोर्ट में प्रस्तुत/उपस्थित हुआ।

सामान्य भाषा में इन वाक्यों में प्रयुक्त विशिष्ट शब्दावली का अर्थ विषय या क्षेत्र विशेष में प्रयुक्त किए जाने की स्थिति में बिल्कुल बदल जाएगा, जैसे

(1) व्यापार-बाजार में तेजड़िए और मंदड़िए आपस में भिड़े।

(2) प्रायः मधुमखियाँ प्रकाश में बहुत जल्दी सक्रिय हो जाती हैं।

(3) ब्रिटेन में सम्राट/साम्राज्ञी (के मुकुट) में निहित अधिकारों को भलीभाँति पारिभाषित किया गया है।

(4) अनुमोदन के लिए नीचे लिखे मसौदे के अनुसार अधिसूचना जारी कर दें।

(5) संप्रेषण/संचार प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच विचारों/सूचना का आदान-प्रदान है।

(6) क्रिया और अभिक्रिया समान एवं विपरीत होती है।

(7) अभ्युक्त कोर्ट में प्रकट हुआ।

उपर्युक्त वाक्यों में प्रयुक्त विषय/क्षेत्र विशेष के संदर्भ में शब्दावली का अर्थ भी विशिष्ट होता है और इसलिए उसे सामान्य भाषा के अर्थ में नहीं लिया जाना चाहिए। अतः विषयवस्तु का सही ध्यान होना अनुवादक के लिए अति आवश्यक है वरना वह तेजड़ियों और मंदड़ियों के लिए बैल और भालू, सक्रिय होने के स्थान पर जाग जाना, सम्राट/साम्राज्ञी के मुकुट में निहित अधिकारों के स्थान पर केवल सिर पर बांधे जाने वाला मुकुट, अनुमोदन और अधिसूचना के लिए अनुमति और जानकारी, संप्रेषण और संचार के लिए संलाप और संदेश, अभिक्रिया के स्थान पर प्रतिक्रिया तथा प्रकट होना के स्थान पर उपस्थित/प्रस्तुत होना जैसी अर्थच्छवियों को संप्रेषित करने की गलती से नहीं बच सकेगा।

1.7.2 अंतरण द्विभाषिक की भूमिका और अर्थांतरण/संक्रमण की प्रक्रिया

अनुवाद प्रक्रिया के दूसरे सोपान पर अनुवादक को द्विभाषिक की भूमिका का निर्वाह करते हुए अर्थांतरण/संक्रमण की प्रक्रिया से गुजरना होता है। चूंकि अनुवादक को अनुवाद-कार्य में दो भाषाओं में परस्पर तालमेल बैठाना होता है इसलिए उसे द्विभाषिक की भूमिका निभानी पड़ती है। उसे स्रोतभाषा के मूलपाठ के संदेश को लक्ष्यभाषा में बांधना पड़ता है। इस प्रक्रिया में दोनों भाषाओं की व्याकरणिक संरचना की तुलना करते हुए अर्थग्रहण तथा अर्थांतरण किया जाता है। इसके लिए अनुवादक कभी मूलभाषा के शब्दों को अपनाता है, तो कभी उसके पर्याय खोजता है, तो कभी उसका अन्वय प्रस्तुत करता है। नाइडा अर्थांतरण के इस सोपान को संक्रमण की संज्ञा देते हैं। बाथगेट इसे 'पारिभाषिक अभिव्यक्ति' कहकर पुकारते हैं। अर्थांतरण/संक्रमण के इस सोपान पर अनेक समस्याएँ निहित रहती हैं। इसका कारण यह होता है कि स्रोतभाषा जो अर्थ संप्रेषित कर रही है, वही अर्थ लक्ष्यभाषा में प्रायः संप्रेषित नहीं हो पाता है। इस स्रोतभाषा के संदेश को लक्ष्यभाषा में ले जाया जाता है तो अनुवाद की दृष्टि से वह समरूप न होकर समतुल्य होता है। इस प्रक्रिया में प्रायः अनूदित पाठ में मूल के संदेश

एवं अर्थ का कुछ स्थितियों में मूल से अलग होकर भी इसके अभिव्यक्त होने की संभावना बनी रहती है। ऐसी स्थिति में अनुवादक को मूल के संदेश अथवा अर्थ को यथासंभव लक्ष्यभाषा के अनुरूप बनाए रखकर अंतरित करना होता है। मूल कृति की भाषिक इकाइयों को लक्ष्यभाषा के अनुरूप अवतरित किया जाता है। स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के बीच तालमेल जितना अच्छा होगा, अनुवाद की सफलता का स्तर भी उतना ही अच्छा होगा। मूलपाठ के विश्लेषण से प्राप्त भाषिक तथा संप्रेषणात्मक अभिव्यक्तियों/तथ्यों का, उपयुक्त अनुवाद-पर्यायों का निर्धारण करने में अनुवादक जिस तरह से प्रयोग करता है उसी से उसकी सफलता को आंका जाता है। इस सोपान के अंतर्गत दो बातें महत्वपूर्ण होती हैं-

(क) अनुवादक का अपना व्यक्तित्व, और

(ख) स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा के मध्य सफल तालमेल।

अनुवादक के व्यक्तित्व से अभिप्राय एक ओर विषय संबंधी ज्ञान और भाषा संबंधी ज्ञान तथा दूसरी ओर प्रतिभा एवं कल्पना संबंधी तत्वों से है। इसके अतिरिक्त स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा के बीच तालमेल कायम किया जाना भी अनुवाद-प्रक्रिया का महत्वपूर्ण आयाम है क्योंकि दोनों भाषाओं में अर्थ और व्याकरण के स्तर पर तालमेल का न होना, या कम होना अनुवाद को असफलता की ओर ले जाता है। इसमें कभी संपूर्ण अर्थ का अतंरण करना पड़ता है, और कभी केवल भाषिक इकाइयों का। इसलिए अर्थांतरण के इस सोपान पर अनूदित पाठ के अनुसार अनुवाद-पर्यायों का चयन किया जाता है और दोनों भाषाओं के मध्य अलग-अलग स्तरों पर अलग-अलग अवयवों में तालमेल बैठाया जाता है। अनुवादक की सफलता इसी बात में है कि वह कहाँ तक स्रोतभाषा के विश्लेषण के सोपान से होते हुए उसके संप्रेषण संबंधी तथ्यों और कथ्यों के लिए लक्ष्यभाषा के अनुवाद-पर्यायों का सटीक प्रयोग कर पाता है। इस प्रकार अर्थांतरण/ संक्रमण के सोपान पर मूलपाठ और अनूदित पाठ में अधिक से अधिक संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता होती है। जब कभी भी यह स्थिति अर्थांतरण में संदेश के प्रतिकूल रूप से प्रभावित होती है तो यह असंतुलित हो जाती है। इसीलिए अनुवादक का यही प्रयास रहता है कि अर्थ और व्याकरण की दृष्टि से स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के बीच तालमेल स्थापित किया जाए क्योंकि यही आदर्श स्थिति कहलाती है।

अर्थांतरण के इस सोपान पर अनुवादक को सदैव स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की प्रकृति में टकराहट की स्थितियों का अनुभव करना पड़ता है। इसके बिना सफल अर्थांतरण संभव नहीं हो पाता। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के वाक्यों- 'You are welcome', और 'Your speech was good',- का हिंदी अनुवाद करते समय क्रमशः 'You' के लिए 'तू', 'तुम', 'आप', और 'Your' के लिए 'तेरा', 'तुम्हारा', 'आपका' जैसे पर्यायों का चुनाव करना कठिन हो जाता है। रिश्ते-नातों की शब्दावली का एक भाषा से दूसरी भाषा में समरूप पर्याय खोज पाना आसान नहीं होता, जैसे अंग्रेजी के 'Uncle has come' हिंदी अनुवाद में 'Uncle' के लिए चाचा, मामा, ताऊ, फूफा, मौसा जैसे पर्याय लक्ष्यभाषा में अस्पष्टता की स्थिति उत्पन्न कर देते हैं। इसी प्रकार हिंदी के शब्दों-जेठ, जेठानी, देवर, देवरानी के लिए अंग्रेजी में उपयुक्त पर्याय उपलब्ध नहीं है। अतः ऐसे शब्दों को उनके संकेतार्थ द्वारा ही व्यक्त किया जाता है; जैसे- 'जेठ' के लिए 'The elder brother of husband', 'जेठानी', के लिए 'The wife of the elder brother of husband'। लोकाचार से संबंधित पर्यायों के लिए भी दूसरी भाषा में समरूप पर्याय नहीं मिलते क्योंकि ये संस्कृति विशेष एवं सामाजिक मान्यताओं के सूचक होते हैं; जैसे- 'गंगा-स्नान', 'जनेऊ धारण करना', 'क्रिया कर्म करना' जैसी अभिव्यक्तियों को अंग्रेजी में क्रमशः 'To have a dip in the holy Ganga', 'To wear a holy thread', 'To perform last rites' जैसी अभिव्यक्तियों द्वारा संप्रेषित किया जा सकता है, किंतु इनमें मूल जैसा सौन्दर्य नहीं है। अस्तित्ववादी नाटकों में 'absurd' का काफी प्रयोग किया गया है। हिंदी में इसके लिए अनेक पर्याय-विसंगतिपूर्ण, ऊलजुलूल, बेकार, निरर्थक, वाहियात, बकवास आदि उपलब्ध हैं, जिनका चुनाव करना कठिन कार्य होता है। अर्थांतरण की समस्या का संबंध अर्थ के पुनर्विन्यास की प्रक्रिया से जुड़ा होता हे। यह निम्नलिखित स्तरों पर संभव होता है :

(क) पूर्ण पुनर्विन्यास

अर्थांतरण के इस स्तर पर भाषिक इकाइयों का अंतरण नहीं होता बल्कि संपूर्ण अर्थ का अंतरण किया जाता है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित वाक्य देखिए :

(1) Barking dogs seldom bite.

(2) A bird in hand is worth two in the bush.

(3) Every potter praises his own pots.

(4) His bread is buttered on both sides.

इनका हिंदी अनुवाद इस प्रकार होगा :

(1) जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।

(2) नौ नगद न तेरह उधार।

(3) अपनी दही को कोई भी खट्टा नहीं कहता।

(4) उसकी पांचों उंगलियाँ घी में हैं।

(ख) विश्लेषणात्मक पुनर्विन्यास

इस स्तर पर स्रोतभाषा की एक शाब्दिक इकाई को लक्ष्यभाषा में कई इकाइयों द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, अंग्रेजी के 'incorrigible', 'illegible', 'atheist' के लिए हिंदी में क्रमशः 'जिसे सुधारा न जा सके', 'जिसे पढ़ा न जा सके', 'जो भगवान में विश्वास न करता हो', और हिंदी के 'जेठ', 'देवरानी' के लिए क्रमशः 'the elder brother of husband', 'the wife of younger brother of husband' अनुवाद होगा।

(ग) संश्लेशणात्मक पुनर्विन्यास

इस प्रकार के अंतरण में स्रोतभाषा की कई शाब्दिक इकाइयों को लक्ष्यभाषा में एक संश्लिष्ट इकाई के रूप में अभिव्यक्त किया जाता है; जैसे- हिंदी के 'पति और पत्नी' के लिए अंग्रेजी में 'spouse', और अंग्रेजी के 'father-in-law' के लिए हिंदी में 'ससुर' का प्रयोग करना होगा।

(घ) संरचनात्मक पुनर्विन्यास

इस स्थिति में व्याकरणिक प्रकार्य को व्यंजित करने वाले प्रकार्यात्मक शब्द को लक्ष्यभाषा की अन्य व्याकरणिक संरचना द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए; उपपद (article) से युक्त निम्नलिखित वाक्य देखे जा सकते हैं :

(1) I saw a boy in the garden.

(2) I saw the boy, who is my friend, in the garden.

(3) He is a poor man.

(4) We should not laugh at the poor.

इन वाक्यों के प्रकार्य को साधते हुए हिंदी में अंग्रेजी के उपपद (article) के संदर्भ में अनुवाद क्रमशः इस प्रकार होगा :

(1) मैंने बाग में एक लड़का देखा।

(2) मैंने बाग में वही लड़का देखा जो मेरा मित्र है।

(3) वह एक गरीब आदमी है।

(4) हमें गरीबों पर हँसना नहीं चाहिए।

1.7.3 पुनर्गठन- रचयिता की भूमिका और अर्थ-संप्रेषण या अभिव्यक्ति की प्रक्रिया

अनुवाद-प्रक्रिया के संदर्भ में मूलपाठ के अर्थग्रहण और अर्थांतरण के सोपानों से गुजरने के बाद अनुवादक को अर्थ-संप्रेषण के दायित्व का निर्वहन करना पड़ता है। यहाँ अनुवादक रचयिता/लेखक के रूप में प्रस्तुत होता है और उसे पुनर्गठन की समस्या का सामना करना पड़ता है। इस पुनर्गठित रूप को ही लक्ष्य भाषा का अनूदित रूप कहा जाता है। इस अनूदित पाठ की सफलता के लिए आवश्यक है कि वह मूलपाठ का सहपाठ बनकर सामने आए अर्थात् अनूदित पाठ वही अर्थ संप्रेषित करे जो मूलपाठ स्रोत भाषा में करता है। रचयिता के रूप में अनुवादक को एक ओर लक्ष्यभाषा के पाठक का ध्यान रखना पड़ता है अर्थात् अनूदित पाठ को अपने देश और काल के अनुरूप बोधगम्य और संप्रेष्य बनाना पड़ता है तो दूसरी ओर मूलपाठ के संदेश और फिर उसकी अभिव्यक्ति से संबंधित शैलीगत गठन के दबाव के साथ उसको अनूदित पाठ का निर्माण करना पड़ता है।

इस सोपान पर अपनी भूमिका निभाने के लिए अनुवादक अनूदित पाठ को अनेक स्तरों पर विभिन्न कसौटियों से जाँचता-परखता है। इसके अंतर्गत लक्ष्यभाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए स्रोतभाषा की सामग्री को प्रस्तुत किया जाता है। अनूदित पाठ की संप्रेषणीयता के लिए अनेक स्तरों पर अनुवादक को ऐसा करना पड़ता है। यदि ऐसा न किया जाए तो लक्ष्यभाषा के पाठक-वर्ग के लिए वह बोधगम्य नहीं हो जाएगा और उसे सफल अनुवाद नहीं कहा जाएगा। इसके लिए अनुवादक को लक्ष्यभाषा और स्रोतभाषा के प्रयुक्ति संदर्भों में समानता और विषमता का अध्ययन करना आवश्यक होता है। उसके बाद ही लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप पाठ का पुनर्गठन करना संभव हो पाता है। वस्तुतः प्रकार्यात्मक और संरचनात्मक दृष्टि से जब कोई अनूदित पाठ अपने मूलपाठ के सहपाठ रूप में सिद्ध होता जाता है। अनुवादक प्रायः रचयिता के रूप में इसी दबाव में अनुवाद-कार्य करता है। अनुवाद-प्रक्रिया में केवल संकेतार्थ की समतुल्यता ही नहीं होती बल्कि उन सभी अभिव्यक्ति-प्रकारों की समतुल्यता होती हैं जिनका संबंध पाठपरक उपादानों के साथ रहता है। अनुवाद प्रक्रिया के इस अंतिम सोपान पर अनुवादक को निम्नलिखित दो स्तरों पर पुनर्गठन करना पड़ता है :

(क) भाषा-प्रयोग के स्तर पर

भाषा प्रयोग के स्तर पर प्रयुक्ति क्षेत्र, प्रयुक्ति प्रकार तथा प्रयुक्ति शैली के संदर्भ में पुनर्गठन किया जाता है।

(1) प्रयुक्ति

प्रयुक्ति क्षेत्र का संबंध विषयवस्तु की प्रकृति से होता है; जैसे- पत्रकारिता, साहित्य, विज्ञान, विधि, प्रशासन आदि के विषयों से संबंधित भाषा की प्रयुक्तियाँ। इसमें प्रमुख समस्या दोनों भाषाओं में समान अभिव्यक्तियाँ उपलब्ध नहीं होने की है। इसलिए अनुवादक को दोनों में समायोजन करते हुए स्रोतभाषा की अभिव्यक्ति का लक्ष्यभाषा में पुनर्गठन करना पड़ता है। उदाहरण के लिए पत्रकारिता के संदर्भ में निम्नलिखित वाक्य देखे जा सकते हैं :

(i) Cotton is cool this hot summer.

(ii) Roshan, Roshan is burning bright.

प्रथम वाक्य में 'cool' का अर्थ 'ठंडा' नहीं है, बल्कि इसका अर्थ है 'माँग न होना'। दूसरे वाक्य में 'Roshan' न तो किसी सामान्य व्यक्ति का नाम है और न ही इसका अर्थ 'दीपक के जलने' से है। 'Roshan' वास्तव में सुप्रसिद्ध फिल्मी सितारा 'Rtitik Roshan' है जिसकी चर्चा हर किसी की जुबाँ पर है। अतः पुनर्गठन करते हुए इन दोनों वाक्यों का अनुवाद इस प्रकार होगा :

(i) इस वर्ष गर्मी के मौसम में कपास की माँग नहीं है।

(ii) सबकी जुबाँ पर एक ही नाम-रितिक रोशन, रितिक रोशन।

इसी प्रकार अन्य विषयों/क्षेत्रों के संदर्भ में भी पुनर्गठन अपेक्षित होता है।

शैली का संबंध वक्ता और श्रोता के पारस्परिक सामाजिक संबंधों पर आधारित होता है। पुनर्गठन के इस सोपान पर अनुवादक को स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के प्रयुक्ति संदर्भों को समतुल्यता की कसौटी पर परखते हुए लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप पाठ का विन्यास करना पड़ता है।

अंग्रेजी वाक्य :

(i) Would you please be kind enough to visit my home?

(ii) The animals began to run helter-skeltor.

(iii) I shall now make a move.

लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुकूल अनुवाद

(i) क्या आप मेरे घर पधारने की कृपा करेंगे।

(ii) जानवरों में भगदड़ मच गई

(iii) अच्छा तो मैं चलता हूँ।

हिन्दी वाक्य :

(i) अबे ओ रामू कहाँ मर गया था?

(ii) चाय तो चलेगी न?

(iii) अबे ओ तानसेन की औलाद, क्यों गला फाड़ रहा है?

पुनर्गठित अभिव्यक्तियाँ :

(i) Oh Ramu where have you been so long ?

(ii) Will you like to have a cup of tea?

(iii) You poor singer! Why have you been hoarsing for nothing like this?

(ख) विधा के स्तर पर

भाषा प्रयोग के अतिरिक्त विधापरक उपादानों के स्तर पर भी अनुवादक को पुनर्गठन करना पड़ता है। विधा का तात्पर्य पाठ के संरचनात्मक रूप से है; जैसे-कहानी, उपन्यास, नाटक, कविता, निबंध। इन विधाओं के बाह्य रूप के साथ-साथ उनकी आभ्यंतर प्रकृति को भी ध्यान में रखते हुए ही पुनर्गठन किया जाता है। नाटक का अनुवाद करते समय उसके बाहरी रूप संवाद-विधान और आभ्यंतरिक रूप, नाटकीयता/रंगमंचनीयता दोनों का ही ध्यान रखना होता है। इसी प्रकार कविता का अनुवाद करते समय उसके बाह्य रूप; छंद-विधान और आभ्यंतरिक रूप काव्यत्मकता दोनों का ही ध्यान रखना होता है। इस प्रक्रिया में अनुवाद विधा के बाहरी रूप को तो बदल सकता है किंतु उसके आभ्यंतरिक रूप को नहीं। कहने का आशय यह है कि यदि मूलपाठ कविता है तो उसका अनूदित पाठ गद्यानुवाद के रूप में दिया जा सकता है किंतु अनूदित पाठ 'सहपाठ' है तो उसकी काव्यात्मकता को किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ा जा सकता।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि पुनर्गठन के सोपान पर अनुवादक को अनूदित पाठ की संप्रेषणीयता पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक होता है। कुल मिलाकर आशय यह है। कि अनुवाद कार्य एक अनुप्रयुक्त भाषिक प्रक्रिया है, इसलिए उसका एक पक्ष लक्ष्यभाषा के पाठकों से संबंधित होता है जिनके लिए वह अनुवाद कार्य किया जाता है। इस दृष्टि से यह अति आवश्यक है कि अर्थ-संप्रेषण की प्रक्रिया में अनूदित पाठ स्पष्ट, सहज, बोधगम्य तथा लक्ष्यभाषा की प्रकृति के अनुरूप होना चाहिए। यह कार्य निश्चित रूप से किसी भी अनुवादक के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि वह पाठ का मूलरचयिता नहीं है और उसके सामने 'प्रारूप' के रूप में पहले से ही एक पाठ होता है जिसके समानांतर लक्ष्यभाषा में उसे एक 'सहपाठ' का निर्माण करना पड़ता है। मूलपाठ के संदेश और फिर उसकी अभिव्यक्ति से संबंधित शैलीगत गठन के दबाव के साथ उसको अनूदित पाठ का निर्माण करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त उसे अनूदित पाठ को अपने देश और काल के अनुरूप संप्रेषित करना होता है ताकि वह पाठक वर्ग के लिए सुबोध, सहज एवं स्पष्ट बन सके।

1.9 सारांश

अनुवाद प्रक्रिया संबंधी प्रस्तुत इकाई में आपने पढ़ा है कि अनुवाद को समझने की दो दृष्टियाँ हैं। इनमें से एक अनूदित पाठ को आधार बनाती है और दूसरी अनुवाद में निहित प्रक्रिया को। अब तक आपको पता चल गया होगा कि वास्तव में दूसरी दृष्टि अधिक महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है क्योंकि अनुवाद कर्म का विश्लेषण करने के साथ ही यह अनुवाद सीख रहे लोगों को उनकी विभिन्न भूमिकाओं के प्रति सजग और समर्थ बनाने में सहायक है। इसके अतिरिक्त, अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न प्रारूप समय-समय पर विभिन्न अनुवाद विज्ञानियों ने अपने अनुभवों के आधार पर प्रतिपादित किए हैं। ये प्रारूप प्रसिद्ध अनुवाद चिंतकों-नाइडा, न्यूमार्क और बाथगेट द्वारा प्रतिपादित किए गए हैं। अनुवाद प्रक्रिया के विभिन्न सोपानों-विश्लेषण, अंतरण और पुनर्गठन आदि का अध्ययन अनुवादकों के लिए लाभकारी है। यह समग्र विश्लेषण अनुवादक की तीन विभिन्न भूमिकाओं-पाठक, द्विभाषिक एवं रचयिता को आधार बनाकर चलता है।

1.10 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. इकाई की पठन-सामग्री के आधार पर बताएँ कि निम्नलिखित कथन ठीक हैं या गलत :

   (i) स्रोतभाषा एवं लक्ष्यभाषा सर्वथा भिन्न संस्कृति, सभ्यता, इतिहास और परंपराओं को लेकर विकसित हुई हो सकती हैं। ( )

   (ii) अनुदेय (अनुवाद की जाने वाली) एवं अनूदित भाषाओं का व्याकरण, प्रकृति एवं शिल्पगत विधान प्रायः एक जैसे होते हैं। ( )

   (iii) पाठपरक दृष्टि के अंतर्गत मूलरचना और अनूदित रचना के बीच पाए जाने वाले संबंधों की प्रकृति पर ध्यान नहीं दिया जाता। ( )

   (iv) प्रक्रियापरक दृष्टि के अंर्तगत केवल मूलरचना के संदेश और भाषिक संरचना पर ही ध्यान केंद्रित किया जाता है। ( )

   (v) अनुवादक का पहला दायित्व पाठक के रूप में मूल रचना में निहित संदेश/विषयवस्तु का सही अर्थग्रहण करना नहीं होता। ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

   (i) अनुवादक, अनुवाद-प्रक्रिया में द्विभाषिक की भूमिका कब और कैसे निभाता है?

   (ii) नाइडा द्वारा प्रतिपादित अनुवाद प्रक्रिया के सोपानों की चर्चा कीजिए।

   (iii) न्यमार्क द्वारा प्रतिपादित 'बोधन' की प्रक्रिया पर टिप्पणी लिखिए।

   (iv) बाथगेट द्वारा प्रतिपादित पुर्नगठन, पुनरीक्षण एवं पर्यालोचन के सोपानों पर प्रकाश डालिए।

   (v) अनुवाद प्रक्रिया के संदर्भ में सामाजिक-सास्कृतिक स्तर पर मूलपाठ के विश्लेषण/बोधन की प्रक्रिया पर विचार कीजिए।

   (vi) मूलपाठ के संदेश/विषयवस्तु में निहित अंलकारों का विश्लेषण/बोधन अनुवादक किस प्रकार करता ह?

   (vii) अनुवाद प्रक्रिया के दौरान अनुवादक अनेकार्थी भाषिक संरचनाओं का विश्लेषण/बोधन कैसे करता है?

   (viii) अंतरण के स्तर पर अनुवादक द्वारा द्विभाषिक की भूमिका किस प्रकार निभाई जाती है?

1.11 शब्दावली

प्रक्रिया-Process, प्रविधि- Methodology, विश्लेषण-Analysis, अंतरण-Transference (Transfer), पुनर्गठन - Restructuring, प्रारूप-Model, बोधगम्यता-Intelligibility, स्रोतभाषा (मूलभाषा) पाठ-Source Language Text, समतुल्यता-Equivalence, रूपांतरण-Transformation, लक्ष्यभाषा पाठ-Target Language Text, लिप्यतंरण-Transliteration, संक्रमण-Transfer, संदर्भगत-Referential, द्विभाषिक-Bilingual, प्रभावसमता - Equivalent Effect, प्रकार्य प्रधान अनुवाद-Functional Translation, अनुक्रिया-Response, समभाषिक-Mono-lingual (Unilingual), अर्थनिरूपण-Interpretation, संप्रेष्य-Communicable, संश्लिष्ट-Composit (Complex)

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- कुसुम अग्रवाल, अनुवाद-शिल्प : समकालीन संदर्भ, दिल्ली, साहित्य सहकार ।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- पूरनचन्द टंडन, अनुवाद के विविध आयाम, दिल्ली, तक्षशिला प्रकाशन ।
- नगेन्द्र (सं.), अनुवाद : 1993, सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, दिल्ली, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- रीतारानी पालीवाल, 1982, अनुवाद-प्रक्रिया, दिल्ली, साहित्य निधि ।
- रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव एवं कृष्ण कुमार गोस्वामी (सं.), 1995, अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- सुरे श सिंहल, 2006, अनुवाद : संवेदना और सरोकार, दिल्ली, संजय प्रकाशन ।
- Bathgate, R. H., 1981, Studies of Translation Model I & II : The Incorporated linguist.
- Newmark, Peter, 1981, Approaches to Translation, Oxford, Pergamon Press.
- Nida, E. A., 1964, Towards a Science of Translation, Leiden.

इकाई 2 अनुवाद के प्रकार

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 अनुवाद प्रकार-वर्गीकरण के मुख्य आधार

2.2.1 माध्यम के आधार पर

2.2.2 प्रक्रिया के आधार पर

2.2.3 पाठ के आधार पर

2.3 अनुवाद प्रकार-विधा एवं प्रकृति आदि के आधार पर

2.3.1 गद्य-पद्य के आधार पर

2.3.2 साहित्यिक विधा के आधार पर

2.3.3 विषय के आधार पर

2.3.4 अनुवाद की प्रकृति के आधार पर

2.4 अनुवाद प्रकार-बहुपक्षीयता आदि के आधार पर

2.4.1 भाषा बाह्य अनुवाद प्रकार

2.4.2 भाषा केंद्रित अनुवाद प्रकार

2.5 अनुवाद के कुछ अन्य प्रकार : गौण प्रकार

2.5.1 परोक्षह अनुवाद

2.5.2 पुनरानुवाद

2.5.3 सूचना अनुवाद

2.5.4 शैक्षिक अनुवाद

2.5.5 रूप प्रधान अनुवाद

2.6 सारांश

2.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

2.8 शब्दावली

2.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

'अनुवाद के प्रकार' शीर्षक इकाई के अध्ययन के उपरांत शिक्षार्थी जान पाएंगे कि :

- अनुवाद के प्रकार किन-किन मुख्य आधारों पर किए जाते हैं;
- अनुवाद के विभिन्न प्रकार कौन-कौन से हैं;
- अनुवाद के विभिन्न भेदों-प्रभेदों में अंतरभेद कर सकेंगे; तथा
- अनुवाद के प्रकारों के आधार पर अनुवाद की प्रकृति तथा प्रकारों के संबंधों को समझ सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

अनुवाद प्रक्रिया एवं प्रविधि के परिचय के उपरांत शिक्षार्थी प्रस्तुत इकाई में अनुवाद के प्रकारों के विषय में चर्चा करेंगे। अनुवाद सिद्धांत एवं प्रक्रिया पर चर्चा करते हुए यह स्पष्ट हो गया था कि विभिन्न अनुवाद सिद्धांत अनुवाद

के प्रकारों का निर्धारण करते हैं तथा अनूदित पाठों को भी विभिन्न प्रकारों के अंतर्गत वर्गीकृत करते हैं। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के महत्वपूर्ण अंग के रूप में आज अनुवाद की चर्चा की जाती है। किसी 'पाठ' को स्रोत से लक्ष्यभाषा में रूपांतरण के लिए जब भाषाविज्ञान के सिद्धांतों का अनुप्रयोग दो भाषाओं के संदर्भ में किया जाता है तो इस प्रक्रिया को 'अनुवाद' कहा जाता है। अनुवाद में भाषा के समस्त तत्वों और घटकों को तुलनीय ढंग से विश्लेषित किया जाता है। अनुवाद कार्य दो भाषाओं के संरचनात्मक रूपांतरण तक ही सीमित नहीं है, बहुत व्यापक भी है। जब अनुवाद में दो भाषाओं का प्रस्ताव होता है, तो किसी एक ही पद्धति में उसका अनुवाद नहीं हो पाता। रचना, विषय, अनुवाद सिद्धातों आदि के विभिन्न रूपों के कारण विभिन्न प्रकारों में अनुवाद करना पड़ता है। अनुवाद प्रकारों के निर्धारण का उद्देश्य अनुवाद प्रणालियों के विविध प्रकारों में एक स्पष्ट विभाजक रेखा खींचना भी है ताकि अनुवाद विषयक चर्चा कर भाषा की व्यापकता को ठीक से समझा जा सके।

2.2 अनुवाद प्रकार-वर्गीकरण के मुख्य आधार

अनुवाद एक प्रायोगिक विधा है। इसकी प्रक्रिया में प्रयोग, प्रयोजन, प्रयोक्ता आदि कई तत्व समाविष्ट होते हैं। इसी आधार पर अनुवाद को अनेक भेदों-प्रभेदों में विभाजित किया जा सकता है। अधिकांश पश्चिमी अनुवाद विचारकों और भारतीय विद्वानों ने अनुवाद को प्रक्रियात्मक रूप में देखा है तथा इसके अंतर्गत मूलपाठ तथा लक्ष्यपाठ के मध्य संपादित होने वाले घटकों, युक्तियों एवं मूलपाठ की विधा को ध्यान में रखते हुए वर्गीकृत करने का प्रयास किया है। रवींद्रनाथ श्रीवास्तव और कृष्ण कुमार गोस्वामी ने इन प्रकारों के मुख्य तीन आधार बताए हैं :

1. माध्यम के आधार पर
2. प्रक्रिया के आधार पर
3. पाठ के आधार पर

2.2.1 माध्यम के आधार पर

अनुवाद के प्रकारों पर माध्यम के आधार पर चर्चा करते हुए भाषिक और भाषेतर प्रतीकों को आधार बनाया जाता है। भाषिक प्रतीक के ध्वन्यात्मक और लेखिमिक प्रतीकों का माध्यम स्वनिम और स्वनिमिक इकाइयाँ होती हैं। वस्तुतः यहाँ कथ्य का प्रतीकांतरण ही अनुवाद है। माध्यम के आधार पर अनुवाद के तीन प्रकार माने जा सकते हैं : प्रतीक, भाषा और लेखन प्रकार।

क) प्रतीक प्रकार : अनुवाद को व्यापक संदर्भ में प्रतीक सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य में भी देखा गया है तथा प्रतीकों के अंतरण के आधार पर अनुवाद के तीन भेद किए जा सकते हैं :

अ) अन्वयांतर (अंतःभाषिक अनुवाद): किसी एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था को उसी भाषा की अन्य प्रतीक-व्यवस्था द्वारा अंतरण ही अन्वयांतरण अथवा अंतःभाषिक अनुवाद है। इस अनुवाद प्रकार में प्रतीक 1 (स्रोतपाठ संकेत) और प्रतीक 2 (लक्ष्यपाठ संकेत) एक ही भाषा के दो भिन्न व्यवस्थाओं से संबद्ध होते हैं। दूसरे शब्दों में एक ही भाषा के भीतर एक ही बात को अन्य प्रकार से व्यक्त किया जाता है; जैसे- प्रेमचंद ने हिंदी से उर्दू में जो अनुवाद किया वह अन्वयांतर है। उनकी प्रसिद्ध कहानी 'शंतरज के खिलाड़ी' का हिंदी रूप 1924 में 'माधुरी' पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। बाद में उन्होंने स्वयं उसी का अन्वयांतर उर्दू में किया जो 1924 मे 'जमाना' पत्रिका में 'शतरंज की बाज़ी' नामक शीर्षक से प्रकाशित हुआ। उपर्युक्त दोनों पाठों में न केवल शब्दों के संयोजन और वाक्यों के चयन में अंतर दिखाई देता है वरन् रचना के वातावरण के घनत्व और संवेदना में भी अंतर मिलता है।

आ) भाषांतर (अंतरभाषिक अनुवाद) : एक भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा व्यक्त अर्थ का दूसरी भाषा की प्रतीक व्यवस्था द्वारा अंतरण ही अंतरभाषिक अनुवाद है। वस्तुतः अनुवाद का वास्तविक क्षेत्र अंतरभाषिक अनुवाद ही है। इस अनुवाद में अनुवादक को द्विभाषिक होना आवश्यक है। उसके लिए

स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा पर अधिकार होना अपेक्षित है; जैसे-प्रेमचंद के 'गोदान' उपन्यास का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद। अनुवाद का यह रूप सबसे ज्यादा प्रचलित है।

इ) **प्रतीकांतर (अंतरप्रतीकात्मक अनुवाद) :** ऊपर के दोनों अनुवाद प्रकारों में प्रतीक-1 और प्रतीक-2, दोनों ही भाषा पर आधारित है, किंतु इस अनुवाद में प्रतीक 1 की व्यवस्था का आधार तो भाषा होती है लेकिन प्रतीक-2 भाषेतर प्रतीक व्यवस्था की अपेक्षा रखता है। अर्थात् स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा के प्रतीक माध्यम अलग-अलग होते हैं। इसके अनुसार किसी कहानी या उपन्यास का फिल्म या टी.वी. के दृश्य बिंबों द्वारा प्रतीकांतरण किया जा सकता है। इस प्रकार के अनुवाद में उदाहरण के रूप में प्रेमचंद के 'गोदान', फणीश्वरनाथ रेणु के 'मैला आँचल' और श्रीलाल शुक्ल का 'राग-दरबारी' एवं रामायण, महाभारत इत्यादि का फिल्म रूपांतरण ले सकते हैं। नाटकों का मंचन या कविताओं पर आधारित पेंटिंग्स भी इसी श्रेणी के अनुवादों में आते हैं।

ख) **भाषा प्रकार :** भाषा के मौखिक, ध्वन्यात्मक एवं लिखित उपादानों तथा भाषा के पद्यात्मक एवं गद्यात्मक रूपों के आधार पर अनुवाद को जब वर्गीकृत किया जाता है तो भाषा प्रकार के अंतर्गत अनुवाद के दो भेद प्राप्त होते हैं :

अ) **उपादान सापेक्ष** : पाठ को जब अनुवाद को आधार बनाया जाता है तो इसमें भाषा के लिखित और मौखिक उपादान अलग-अलग होने के कारण अनुवाद का एक विशेष प्रकार सामने आता है। इसके अंतर्गत अनुवाद और निर्वचन अथवा आशु अनुवाद आते हैं। अनुवाद का उपादन **लेखन** होता है और निर्वचन का उपादान **ध्वनि** है। भाषा के लिखित और उच्चरित रूप एक ही कथ्य की अभिव्यक्ति के लिए दो स्वतंत्र और स्वायत्त रूप हैं। अनुवाद **लिखित** होता है और निर्वचन/आशु अनुवाद **मौखिक**। निर्वचन/आशु अनुवाद में दुभाषिये को अन्य अनुवादकों की भाँति इतना अवकाश नहीं मिलता कि वह देर तक सोच सके या अपेक्षित कोश आदि को देख सके। उसमें अपेक्षा की जाती है कि वह संदेश को सही रूप में तत्परता से पहुँचा सके। इस प्रकार के निर्वचन/सद्यः अनुवाद (तत्काल अनुवाद) की व्यवस्था भारतीय संसद, संयुक्त राष्ट्रसंघ के अधिवेशनों में, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय विचार गोष्ठियों, वैश्विक व्यापारिक कंपनियों की बैठकों, खेलों की कमेंट्री और पर्यटकों अथवा आवागमन जैसे मेट्रो रेल आदि में होती हैं। किन्हीं बैठकों में संकेत भाषा (Sign Language) द्वारा भी विशेष निर्वचन/आशु अनुवाद की व्यवस्था होती है।

आ) **रूप सापेक्ष :** इसके अंतर्गत पद्यानुवाद और गद्यानुवाद के प्रकार आते है। **पद्यानुवाद** से अभिप्राय पद्य में अनुवाद करना है। इसके भी दो रूप दृष्टिगोचर होते हैं। एक मूल पद्य पाठ का अनुवाद पद्य में किया जाता है और दूसरा मूल गद्य पाठ का पद्य में। प्रथम उदाहरण के लिए 'यदा-यदा हि धर्मस्य' के अनुवाद 'जब-जब होई धरम की हानि' को लिया जा सकता है जबकि दूसरे उदाहरण के रूप में आल्हा को लिया जा सकता है। इसके अतिरिक्त पद्य साहित्य के असंख्य अनुवाद, विशेष रूप से श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों के अनुवाद, जो मूल की लय और भावना को बनाए रखते हैं उन्हें भी उदाहरणों के रूप में यहाँ रखा जा सकता है। उमर खैय्याम की रुबाइओं तथा बहादुर शाह जफर के अनुवाद भी दृष्टव्य है। **गद्यानुवाद** से अभिप्राय गद्य में अनुवाद करना है। मूल पद्य पाठ का गद्यानुवाद भी इसी के अंतर्गत आता है। मूल गद्य पाठ का किसी दूसरे गद्य रूप में जैसे कि टीका, भाषा अथवा सरलार्थ संक्षेपण इत्यादि भी इसी के अंतर्गत लिया जा सकता है। प्रथम उदाहरण के रूप में कविताओं की व्याख्या तथा दूसरे उदाहरण के अंतर्गत किसी कहानी का नाट्य रूपांतरण लिया जा सकता है। संस्कृत श्लोकों की टीका, अन्वय, व्याख्या इसी अनुवाद के प्रकार हैं।

ग) **लेखन प्रकार :** अनुवाद करते समय कुछ ऐसी स्थितियाँ भी उत्पन्न हो जाती हैं जब कुछ पाठ हमें मौखिक रूप में उपलब्ध होते हैं, तथा उन पाठों में कुछ ऐसे शब्द भी होते हैं जिनका अनुवाद नहीं किया जा सकता। ऐसे में इन्हें लिपिबद्ध करने की आवश्यकता होती है। अतः इनका जो उच्चारण होता है

उसे ज्यों का त्यों रखने का प्रयास किया जाता है या उसे कुछ परिवर्तन के साथ रखा जाता है। इन्हीं परिस्थितियों के अंतर्गत अनुवाद के दो प्रकार किए जा सकते हैं; लिप्यंकन और लिप्यंतरण :

अ) लिप्यंकन (Transcription) : अनुवाद के इस प्रकार में स्रोतभाषा के शब्द की वर्तनी पर ध्यान न देकर उसके उच्चारण को आधार माना जाता है। लक्ष्यभाषा में इसी उच्चारण के अनुरूप शब्द को लिखा जाता है। इसमें स्रोतभाषा के उच्चारण के अनुसार लक्ष्यभाषा के लिपिचिह्न निर्धारित किए जाते हैं। इसमें अंतरराष्ट्रीय स्वनिक वर्ण (IPA) अथवा किसी अन्य लिपि चिह्न व्यवस्था के आधार पर लिप्यंकन किया जाता है। भाषाविज्ञानी इनडेंजर्ड लैंग्वेजेज (संकटापन्न भाषाओं) के दस्तावेजीकरण (डाक्यूमेंटेशन) में इसी अनुवाद प्रकार का उपयोग करते हैं। यहाँ कुछ ध्वनियों का बर्तुलाकार उच्चारण हो जाता है तथा कुछ ध्वनियों का लुप्त या शांत रूप भी दिखाई देता है। 'त' ध्वनि भी दीर्घ स्वर में उच्चारित होती है यथा Walmart : वॉलमाट। अंग्रेजी के Bomb (बॉम) शब्द में 'O' ध्वनि का उच्चारण 'ऑ' के रूप में हो जाता है और 'ब' का लोप हो जाता है। हिंदी से अंग्रेजी में लिप्यंकन करते समय पटना, श्याम, चाँद इत्यादि के लिए क्रमशः t, s, ca के साथ विशेष चिह्नों (m, œ, câ) का प्रयोग किया जाता है ताकि उनकी ध्वनि में 'ट', 'श' और 'चाँ' ध्वनियाँ सुनाई दें।

आ) लिप्यंतरण (Transliteration) : जब मूलपाठ में प्रयुक्त नामों, स्थानों एवं कुछ अभिव्यक्तियों का लक्ष्यभाषा में अनुवाद करना संभव नहीं होता है तब उनके उच्चारण को ध्यान में रखते हुए उनके मूलरूप को यथावत लक्ष्यभाषा में रख दिया जाता है तथा स्रोतभाषा की वर्तनी में प्रयुक्त लिपि चिह्नों के स्थान पर लक्ष्यभाषा में उपलब्ध लिपि चिह्नों से प्रतिस्थापित किया जाता है। रेल विभाग द्वारा रेलवे स्टेशन के नामों, या विभिन्न सरकारी संस्थाओं के नामपट्टों में इस रूप को देखा जा सकता है। इसे इस आरेख से भी समझा जा सकता है :

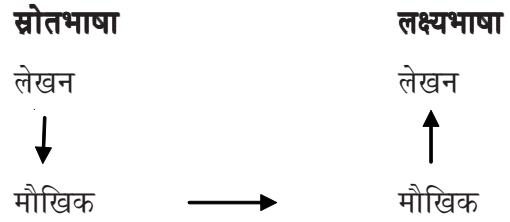

इसी प्रकार अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी के कुछ शब्दों का लिप्यंतरण निम्न रूप में दिखाई देता है :

Bomb	बंब
Shelly	शैली
पटना	Patna
चाँद	Chand

अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं यथा हिंदी-पंजाबी, हिंदी-बांग्ला, हिंदी-तमिल तथा विदेशी भाषाओं चीनी-हिंदी, थाई-हिंदी, जापानी-हिंदी आदि विभिन्न भाषाओं के अनेक शब्दों का लिप्यंतरण किया जा सकता है।

2.2.2 प्रक्रिया के आधार पर

प्रक्रिया के आधार पर वर्गीकरण में मूलपाठ की संरचना, बुनावट और उसमें निहित प्रभाव तथा कथ्य को आधार पर बनाया जाता है। इसके अतंर्गत पाठधर्मी और प्रभावधर्मी अनुवाद आते हैं जो अनुवाद के एक अलग परिप्रेक्ष्य की निर्मिति करते हैं।

अ) पाठधर्मी अनुवाद : इस अनुवाद प्रकार में अनुवादक पाठ को स्वायत्त एवं स्वनिष्ठ मानता है और अनुवाद को पाठ से बाहर जाने की छूट नहीं देता। पाठ की भाषा के विभिन्न स्तरों पर वह पहले अध्ययन-विश्लेषण करता है और तत्पश्चात् उसमें निहित अर्थ को अनूदित पाठ में व्यंजित करने के लिए मूलकृति की संरचना

और बुनावट को अपना मॉडल बनाता है। पाठ का यह आयाम मूलतः वाक्य-विन्यास और अर्थविज्ञान पर आधारित है। अनुवाद का यह रूप वैज्ञानिक साहित्यों एवं कानूनी दस्तावजों के साथ-साथ विधि एवं संसदीय साहित्य के अनुवाद में ज्यादा प्रभावशाली है।

आ) प्रभावधर्मी अनुवाद : इसमें अनुवादक पाठ को लेखक और पाठक के बीच संबंध स्थापन का एक उपकरण मानता है। लेखक इस स्थापित संबंध से उत्पन्न प्रभाव का पाठक पर पड़े प्रभाव के आधार पर मूल्यांकन करता है। यह आयाम वाक्य-विन्यास और अर्थविज्ञान के साथ-साथ भाषा व्यवहार शास्त्र (प्रैग्मेटिक्स) पर अपना ध्यान केंद्रित करता है। इससे यह अपेक्षा रखी जाती है कि मूलपाठ पढ़ते समय मूल पाठक के ऊपर जिस प्रकार का प्रभाव पड़ता है, ठीक उसी प्रकार का प्रभाव लक्ष्यभाषा के पाठकों पर भी पड़ना चाहिए। सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद में इसी प्रकार के अनुवाद की अपेक्षा रहती है।

2.2.3 पाठ के आधार पर

अनूदित पाठ कथ्य और अभिव्यक्त कार्य का समन्वित रूप होता है तथापि कहीं कथ्य प्रधान हो जाता है तो कहीं अभिव्यक्ति प्रधान। इसके अंतर्गत अभिव्यक्ति तथा अर्थ के आधार पर भेद किए जाते हैं :

(क) अभिव्यक्ति के आधार : किसी रचना को जब पाठ और उसके तत्वों के अनुवाद की समग्रता या पूर्णता को ध्यान में रखकर वर्गीकृत किया जाता है तो यह अभिव्यक्तिपरक आधार कहलाता है। इसमें मुख्यतः रचना सापेक्षता और व्यवस्था सापेक्षता की समग्रता एवं आंशिकता विचारणीय पक्ष रहते हैं।

अ) रचना सापेक्ष आधार : इसमें पाठ के परिमाण और आकार को देखा जाता है। इसके आधार पर अनुवाद के दो भेद मिलते हैं :

1. **पूर्ण अनुवाद :** इस अनुवाद प्रकार में स्रोतपाठ का 'पाठ' सभी दृष्टियों से लक्ष्यभाषा में पूर्ण रूप से अनूदित किया जाता है अर्थात् प्रत्येक अंश का, यानि शब्द, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य, अनुच्छेद आदि को पूर्ण रूप से अनूदित किया जाना पूर्ण अनुवाद कहलाता है।

2. **आंशिक अनुवाद :** इस प्रकार के अनुवाद में स्रोतभाषा के पाठ के किसी अंश या कुछ अंशों के बिना अनुवाद में स्रोतभाषा के कुछ शब्दों और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का अनुवाद नहीं हो पाता। इसी प्रकार आँचलिक शब्दों का भी अनुवाद नहीं हो पाता। इस प्रकार अननुवादनीय होने के कारण उनको छोड़ दिया जाता है। उदाहरण स्वरूप-भारतीय संस्कृति के ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास, ब्राह्मण, ठाकुर आदि का अनुवाद नहीं हो सकता। ग्लास्नोस्त, स्पूतनिक और आर्यभट्ट आदि भी इसी प्रकार के शब्द हैं जिनको यथावत छोड़ दिया जाता है। यहाँ यह ध्यान दिलाना संगत होगा कि प्रभावधर्मी अनुवाद आमतौर पर पूर्ण अनुवाद सापेक्ष होता है जबकि पाठधर्मी अनुवाद आंशिक अनुवाद की ओर अधिक झुका प्रतीत होता है।

आ) व्यवस्था सापेक्ष अनुवाद : इस प्रकार के अनुवाद के भी दो उपभेद हैं :

1. **समग्र अनुवाद :** समग्र अनुवाद से अभिप्राय यह है कि स्रोतभाषा पाठ के सभी भाषिक स्तरों को लक्ष्यभाषा के पाठ में प्रतिस्थापित किया जाए। यद्यपि इसमें प्रतिस्थापन का प्रयत्न समग्र रूप में होता है, किंतु यह प्रतिस्थापन समतुल्यता के आधार पर सभी स्तरों पर नहीं हो पाता। इस प्रकार के अनुवाद में समतुल्यता की अनिवार्यता को बनाए रखना संभव नहीं है, क्योंकि इसमें स्रोतपाठ को सभी स्तरों पर अनूदित करने का प्रयास रहता है।

2. **परिसीमित अनुवाद :** स्रोतभाषा की पाठ्य सामग्री का समतुल्यता के आधार पर लक्ष्यभाषा की पाठ्य सामग्री में भाषा व्यवस्था के किसी एक स्तर पर प्रतिस्थापन करना परिसीमित अनुवाद है। यह अनुवाद केवल ध्वन्यात्मक या लेखिमिक स्तर पर अथवा व्याकरणिक और शब्दगत स्तरों में से किसी एक स्तर पर होगा। परिसीमित अनुवाद में व्याकरणिक और कोशगत स्तरों का एक साथ अनुवाद करने से ही सार्थक अनुवाद संभव है।

ख) अर्थ (वाच्य) के आधार पर : अनुवाद के प्रकारों पर जब पाठ के अर्थ, संदर्भ, भाव, व्यवहार पर ध्यान केंद्रित किया जाता है तो अर्थ के आधार पर चार भेद होते हैं :

1. **शब्द प्रति शब्द अनुवाद (Word for Word Translation) :** यह अनुवाद शब्द के स्तर पर होता है। इसमें रूपिमिक व्यवस्था को भी ध्यान में रखा जाता है। इस प्रकार के अनुवाद में शब्द पर ही ध्यान दिया जाता है न कि वाक्य योजना पर। जैसे -

मूलः He is going.

अनुः वह है जा रहा ।

मूलः I am going home.

अनु : मैं हूँ जा रही घर।

मूलः If the customer officer is not alert.

अनुः यदि कस्टम अधिकारी है नहीं सावधान।

चूँकि यह एक प्रकार का अनुवाद 'शब्द संग्रह' प्रतीत होता है। अतः यह अनुवाद प्रकार सामान्यतः श्रेष्ठ नहीं माना जाता, क्योंकि भाषा की लघुतम इकाई वाक्य होने से 'शब्द' अनेकाधिक अवसरों पर अनूदित होने के पश्चात अपने 'एकल' अर्थ से गौण हो जाते हैं। इसे मक्षिका स्थाने मक्षिका निपात भी कहा जाता है।

2. **शाब्दिक अनुवाद :** मूलपाठ के शब्दक्रम की अपेक्षा इसमें वाक्य संरचना को ध्यान में रखकर अनुवाद किया जाता है। वाक्य-विन्यास के अनुसार मूल पाठ का यथासंभव अनुवाद किया जाता है। इसमें एक भाषा के भावों का दूसरी भाषा में रूपातंरण करते हुए प्रत्येक शब्द, पदबंध, वाक्य, उपवाक्य, आदि का अनुवाद किया जाता है। इसे स्थानापन्न अथवा कभी-कभी कोशगत अनुवाद भी कहा जाता है क्योंकि मूल रचना के प्रत्येक शब्द के लिए शब्द रखना होता है। ज्ञान, विधि, प्रौद्योगिकी तथा गणित से संबंधित सूचनापरक साहित्य में यह पद्धति अपनाई जाती है। इसमें प्रत्येक शब्द और वाक्य का अपना आशय होता है। प्राचीन धर्म ग्रंथों के अनुवाद में भी इस विधि का प्रयोग किया जाता है क्योंकि इसमें मूल रचना के शब्दों का विशेष महत्व होता है तथापि साहित्यिक पाठ के लिए यह विधि अधिक उपयोगी नहीं है।

मूल : Burn the lamp

अनु : बत्ती जलाओ

मूल : It is an Intereting point.

अनु : यह एक रोचक बिंदु है।

मूल : There is a custom among'st the Red Indians

अनु : लाल भारतीयों (रेड इंडियन्स) में एक रिवाज है।

3. **भावानुवाद :** इसमें मूल कृति के शब्द चयन, वाक्य-रचना आदि पर ध्यान न देकर उसके भावार्थ को पकड़ने का प्रयास रहता है। शाब्दिक अनुवाद में अनुवादक का ध्यान मूल सामग्री की भाषा पर होता है लेकिन भावानुवाद में अनुवादक का ध्यान लक्ष्यभाषा की शब्द-रचना, वाक्य विन्यास, मुहावरे-सौष्ठव आदि की योजना पर अधिक होता है। कोशगत अनुवाद के विपरीत भावानुवाद में स्रोतभाषा की भाषिक अभिव्यक्तियों की गंध लक्ष्यभाषा में नही आ पाती किन्तु भाव-संवेदना की उसमें अभिव्यिक्ति अवश्य होती है। अति लघुतम एवं संश्लिष्ट अर्थ-छवियों की यहाँ भी प्रधानता रहती है। कभी-कभी इसे sense for sense translation अथवा Free Translation भी कहा जाता है। जोड़ने-छोड़ने की प्रवृत्ति लगातार बनी रहती है। अतः अनुवादक को सावधानी बरतनी चाहिए। यदाकदा मूलपाठ का रसास्वादन लक्ष्यपाठ में पाठक नहीं कर पाता है। शेक्सपीयर और प्रेमचंद के नाटकों के संवाद में इस प्रकार के अनुवाद प्रायः देखे गए हैं।

मूल : तरूण तपस्वी-सा वह बैठा।

अनु : He sat envisaging the death of god.

मूल : आपने मुझसे ज्यादा दुनिया देखी है।

अनु : You are far more experienced than me.

मूल : खून का घूट पीना।

अनु : To suppress one's furry.

4. **छायानुवाद :** स्रोतपाठ पढ़ने के बाद अनुवादक जो समझता या अनुभव करता है तथा उसके मन पर उसका जो प्रभाव पड़ता है, उसके संदर्भ में वह मूलपाठ का लक्ष्यभाषा में जिस प्रकार 'कथ्य' का रूपांतरण करता है उसे छायानुवाद कहते हैं। इसमें अनुवादक को पूरी छूट होती है कि वह मुख्य भाव को लेकर लक्ष्यपाठ की रचना करें। इस प्रकार छायानुवाद में मूल की छाया मात्रा होती है। अर्थात् उसके कथ्य का अनुकूलन लक्ष्यभाषा की सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों के अनुसार किया जाता है। यह एक प्रकार का रूपांतरण है जो देशीयता के पुट से कथ्य को सशक्ता प्रदान करता है।

शेक्सपीयर के नाटक 'Merchant of venice' का अनुवाद भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने 'दुर्लभ बंधु' या 'वंशपुर का महाजन' नाम से किया है, जिसमें भारतेन्दु ने सभी पात्रों के नामों का और वातावरण का भारतीयकरण किया है। इस प्रकार छायानुवाद मूल कृति के कथ्य को लिए होता है, किंतु इसका सारा परिधान एवं परिवेश लक्ष्यभाषा की स्थानीय संस्कृति से जुड़ा हुआ होता है। इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक की सर्जनात्मक प्रतिभा का होना वांछित होता है तभी मूल रचना का आत्मसातीकरण संभव होता है।

2.3 अनुवाद प्रकार-विधा एवं विषय की प्रकृति आदि के आधार पर

भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद के कई प्रकारों की चर्चा की है। उन्होंने इन प्रकारों के चार मूल आधार निर्धारित किए हैं -

क) गद्यत्व-पद्यत्व

ख) साहित्यिक विधा

ग) विषय

घ) अनुवाद की प्रकृति ।

2.3.1 गद्य-पद्य के आधार पर

रूप सापेक्षता के आधार पर ही मूलपाठ के गद्य या पद्य विधात्मक प्रकार भी होते हैं :

1. **गद्यानुवादः** इस में मूल गद्य का अनुवाद गद्य में होता है। काव्य या मूल पद्य का भी गद्य में अनुवाद इसके अंतर्गत आता है। कथा, नाटक, एकांकी इसके उदाहरण हैं। प्रकार्यात्मक तथा प्रशासनिक साहित्य; यथा-बैंकिंग, बीमा, विधि का साहित्य इस श्रेणी के अंतर्गत आता है।

2. **पद्यानुवाद :** इसमें मूल पद्य का पद्य में अनुवाद किया जाता है। कभी-कभी मूल गद्य का भी पद्य में अनुवाद हो सकता है। इसे छंदानुवाद या छंदबद्ध अनुवाद भी कहते हैं। भारतेंदु हरिश्चन्द्र, अज्ञेय, त्रिलोचन, हरिवंश राय बच्चन आदि ने इस प्रकार के अनुवाद किए हैं।

3. **मुक्त छंदानुवाद :** इस प्रकार में अनुवाद मुक्त छंद में होता है। इसमें जो छंद होता है वह तुक-मात्रा आदि उन बंधनों से मुक्त होता है जो पद्यानुवाद के लिए आवश्यक है। सामान्यतः मूल सामग्री मुक्त छंद में होने पर ही मुक्त छंदानुवाद किया जाता है, किंतु मूल गद्य या पद्य के भी मुक्त छंदानुवाद हो सकते हैं।

2.3.2 साहित्यिक विधा के आधार पर

मूलपाठ की सर्जनात्मक विधा के आधार पर काव्य, कथा, नाटक आदि अनुवाद प्रकार भी होते हैं।

1. **काव्यानुवाद :** किसी काव्य-रचना का अनुवाद गद्य, पद्य या मुक्त छंद किसी भी शैली में हो सकता है। यूँ प्रायः काव्य का अनुवाद पद्य या मुक्त छंद में ही किया जाता है। परंतु यत्र-तत्र उसका भाव या संक्षिप्तानुवाद गद्य में भी मिल जाता है।

2. **नाटकानुवाद :** इसमें किसी भाषा के नाटक विधा का किसी अन्य भाषा के नाटक विधा रूप में अनुवाद या किसी घटना तथा अन्य साहित्यिक विधा; जैसे-कथा, कहानी या उपन्यास के नाट्य रूपांतरण को नाटक अनुवाद के रूप में लिया जा सकता है।

3. **कथानुवाद :** किसी भाषा के कथा-साहित्य (उपन्यास तथा कहानी) का किसी अन्य भाषा में कथा-साहित्य के रूप में अनुवाद को कथानुवाद के रूप में रखा जा सकता है। इसके अंतर्गत रेखाचित्र, निबंध, संस्मरण आदि अन्य विधाओं के भी कथा साहित्य के रूप में अनुवाद हो सकते हैं।

2.3.3 विषय के आधार पर

विषय या प्रयुक्ति के आधार पर अनुवाद के अनेक भेद किए जा सकते हैं। जैसे सरकारी रिकार्डों का अनुवाद, गजेटियरों का अनुवाद, पत्रकारिता से संबद्ध अनुवाद, विधि-साहित्य का अनुवाद, ऐतिहासिक साहित्य, धार्मिक साहित्य तथा ललित साहित्य का अनुवाद।

2.3.4 अनुवाद की प्रकृति के आधार पर

अनुवाद करते समय मूलपाठ के प्रति पूर्ण निष्ठा अथवा मूलपाठ से अनूदित पाठ में स्वतंत्रता लेने के आधार पर मूल-निष्ठ तथा मूल-मुक्त आदि अनुवाद के दो प्रकार देखे गए हैं:

1. **मूलनिष्ठ अनुवाद :** ऐसा अनुवाद जो यथासंभव मूल का अनुगमन करे तथा रचनाकार के प्रति निष्ठा बनाए रखे उसे मूलनिष्ठ अनुवाद कहा जाता है। इसमें अनुवादक का ध्यान विचार (कथ्य) तथा अभिव्यक्ति (कथन-पद्धति) दोनों पर होता है। वह अपने अनुवाद को यथासंभव दोनों ही दृष्टियों से मूल के निकट रखना चाहता है।

2. **मूल-मुक्त अनुवाद :** अनुवाद के इस रूप में अनुवादक को काफी छूट रहती है, किंतु यह छूट प्रायः अभिव्यक्ति या कथन शैली के प्रति ही विशेष होती है, कथ्य या विचार की तरफ नहीं। अर्थात् इसमें अनुवादक अभिव्यक्ति या कथन शैली के स्तर पर लक्ष्यभाषा की सुविधानुसार, अनुवाद के उद्देश्यानुसार तथा अनुवाद पढ़ने या सुनने वालों की योग्यतानुसार परिवर्तन-परिवर्धन कर सकता है। इस प्रकार के अनुवाद में पर्याप्त सावधानी की आवश्यकता होती है क्योंकि अनुवादक के अत्यधिक छूट लेने से पाठक मूलपाठ के रसास्वादन से वंचित हो सकता है। इस प्रकार के अनुवाद से कई अवसरों पर भ्रम की स्थितियाँ उत्पन्न होने से अनुवाद में अशुद्धियाँ आने की आशंका बढ़ जाती है।

अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के कुछ अन्य प्रकार भी देखे जा सकते हैं; जैसे शब्दानुवाद, भावानुवाद, सारानुवाद, रूपांरतण, व्याख्यानुवाद, आदर्शानुवाद और छायानुवाद। इनमें से कुछ पर पहले ही चर्चा की जा चुकी है। कुछ अन्य प्रकार निम्नवत हैं :

1. **सारानुवाद :** सारानुवाद मूल की मुख्य बातों का मूल-मुक्त अनुवाद होता है, परंतु इसमें महत्वपूर्ण यह है कि मूलपाठ का एकाधिक पठन करने के उपरांत ही मूल-अर्थ को ग्रहण किया जाता है। इसमें केंद्रीय विचार को बनाए रखने की आवश्यकता होती है। पहले मूल का सार पाठ बनाया जता है, तदुपरांत उसका अनुवाद किया जाता है। यह संक्षिप्त, अति संक्षिप्त, अत्यंत संक्षिप्त आदि कई प्रकार का होता है। अपनी संक्षिप्तता, सरलता-स्पष्टता तथा मूल और लक्ष्यभाषा के स्वाभाविक-सहज प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यों के सामान्य अनुवाद की तुलना में सारानुवाद ही अधिक उपयोगी है। न्यायालयों द्वारा दिए गए लंबे निर्णयों तथा

महत्वपूर्ण व्यक्तियों के वक्तव्यों और प्रशासनिक एवं संसदीय मामलों के सार इसी रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें मूलपाठ का सावधानीपूर्वक पठन तथा केंद्रीय भाव को बनाए रखने की चुनौती होती है। इस पर अधिक चर्चा इसी पाठ्यक्रम की ''सारानुवाद'' इकाई में की जाएगी।

2. **व्याख्यानुवाद :** इसमें मूलपाठ का व्याख्यात्मकता के साथ अनुवाद होता है। स्पष्ट है कि इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक अथवा व्याख्याता अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और विषय संबंधी अनुभव के आधार पर कथ्य में स्पष्टीकरण के लिए कुछ अतिरिक्त उदाहरण, प्रमाण इत्यादि जोड़ सकता है। संस्कृत श्लोकों या सूत्रों पर भाष्य, टीका आदि इसके उदाहरण हैं। तार्किक संयोजनों में अनेक प्रसंग जोड़े जाते हैं ताकि मूल के निहितार्थ को स्पष्ट किया जा सके। हालाँकि इसमें मूल लेखक के वक्तव्य का ह्रास होने की संभावना भी बन जाती है। अतः अनुवादक को सीमा रेखा तय कर लेनी चाहिए। संस्कृत के दर्शन ग्रंथों तथा लोकमान्य तिलक के 'गीतानुवाद' के कुछ अन्य निदर्शन इसी प्रकार के अनुवाद के उदाहरण हैं। वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में वर्णनात्मक शैली भी इसी का उदाहरण है।

3. **रूपांतरण :** रूपांतरण का अर्थ है स्रोतभाषा के पाठ के रूप को बदलना। इसमें रूपांतरणकार मूलपाठ को अपनी रूचि, सुविधा तथा आवश्यकता के अनुसार रचनात्मक तरीके से लक्ष्य पाठक अथवा दर्शक की रुचि और आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित करके लक्ष्यभाषा में रखता है। इसमें मूल सामग्री, संक्षिप्त या विस्तृत, सरल या कठिन तथा विधा-रूप में परिवर्तित होकर आती है; जैसे उपन्यास या कहानी का नाट्य-रूपांतरण जिसमें मूलपाठ की विधा, परिवेश, पात्र, स्थान आदि परिवर्तित हो जाते हैं। भारतीय सिनेमा तथा रंगमंच पर रूपांतरण के सफल एवं उत्तम प्रयोग द्रष्टव्य हैं। इस पाठ्यक्रम की 'रूपांतरण' इकाई में इस पर विस्तृत चर्चा की जाएगी।

अनुवाद के प्रकारों की उपरोक्त स्थितियों के अतिरिक्त भाषा का आधार मानते हुए भी विद्वानों ने बहुपक्षीयता के आधार पर वर्गीकरण किया है। इसमें भाषा-बाह्य, भाषा-केंद्रित तथा मिश्रित अर्थात गौण अनुवाद प्रकारों की चर्चा आगे की जाएगी।

2.4 अनुवाद प्रकार-बहुपक्षीयता आदि के आधार पर

सुप्रसिद्ध अनुवादविज्ञानी सुरेश कुमार ने अनुवाद प्रकारों का महत्व प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि ''अनुवाद के प्रकारों की चर्चा अनुवाद-विषयक चर्चा का एक आवश्यक पक्ष है''। इससे यह भी स्पष्ट हो जाता है कि अनुवाद के प्रकार जहाँ एक ओर अनुवाद प्रणालियों के प्रकार हैं वहीं दूसरी ओर अनूदित पाठों के भी प्रकार हैं और एक विशिष्ट प्रणाली से अनुवाद करने पर एक विशिष्ट प्रकार का अनूदित पाठ निष्पन्न होता है। जैसे शाब्दिक अनुवाद प्रणाली से निष्पन्न पाठ को शाब्दिक अनुवाद कहा जाएगा। परंतु सर्वत्र ऐसा नहीं है। अनुवाद के प्रकारों में कुछ नाम ऐसे भी हैं जो अनूदित पाठों का ही प्रधान रूप से निर्देश करते हैं। निरूपण की सुविधा के अतिरिक्त वर्गीकरण का एक अन्य प्रयोजन है स्पष्टीकरण।

अनुवाद की बहुपक्षीयता के अनुरूप अनुवाद के वर्गीकरण के अनेक आधार मानते हुए सुरेश कुमार ने इन्हें तीन मूल शीर्षकों में रखा है। भाषा-बाह्य, भाषा-केंद्रित तथा मिश्रित। इनमें भाषा केंद्रित आधार पर वर्गीकृत अनुवाद के प्रकारों को मुख्य तथा शेष को गौण समझा जाता है।

2.4.1 भाषा-बाह्य अनुवाद प्रकार

इस वर्ग में कैटफर्ड द्वारा प्रतिपादित प्रकारों को आधार मानकर पाठ के आकार की दृष्टि से पूर्ण तथा आंशिक दो प्रकार माने गए हैं। मूल भाषा पाठ के प्रत्येक अंश का अनुवाद हो जाने पर अनूदित पाठ को पूर्ण अनुवाद कहते हैं। यदि मूल के कुछ अंश अनूदित न हों तो निष्पन्न पाठ को आंशिक अनुवाद कहा जाएगा। यहाँ हम मानव अनुवाद और मशीनी अनुवाद का उदाहरण ले सकते हैं। मानव अनुवाद में अनुवाद की संपूर्ण प्रक्रिया-बोधन, संक्रमण तथा अभिव्यक्ति आदि मानव अनुवादक द्वारा संपादित होती हैं। इसमें भी कई स्थितियाँ होती हैं-एकाकी मानव अनुवाद तथा सहयोगात्मक मानव अनुवाद। एकाकी प्रकार में अनुवाद की संपूर्ण प्रक्रिया अकेला व्यक्ति पूरा

करता है। सहयोगात्मक अनुवाद में प्रायः दो व्यक्ति मिलकर काम करते हैं। इसमें एक भाषा विशेषज्ञ (वस्तुतः शैलीकार) और एक विषय विशेषज्ञ होता है। सहयोग की स्थिति मूलभाषा पाठ के बोधन के सोपान पर ही विशेष रूप से परिलक्षित होती है। अभिव्यक्ति तथा अंत में संपादन का काम एक व्यक्ति तथा विशेषज्ञ ही करता है और उसी का मुख्य दायित्व भी माना जाता है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी संबंधी अनुवाद कार्य में सहयोगात्मक अनुवाद का प्रचलन अधिक है।

मशीनी अनुवाद कंप्यूटर के द्वारा होता है। कंप्यूटरों में निरंतर सुधार होने से मशीनी अनुवाद की तकनीक में भी सुधार हो रहा है तथा अधिकाधिक कार्य कंप्यूटर द्वारा किए जा रहे हैं। अतः मशीनी अनुवाद का तथ्यपूर्ण एवं वास्तविक परिचय इस बात पर निर्भर है कि हम किस पीढ़ी (दूसरी पीढ़ी 1959-69, तीसरी पीढ़ी 1965-71 आदि) के कंप्यूटर द्वारा मशीनी अनुवााद किए जाने का परिचय प्राप्त कर रहे हैं। इसमें कुल चार सोपान होते हैं-

क. दोनों भाषाओं के वाक्यपरक तथा अर्थपरक तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित द्विभाषिक शब्दावली तैयार करना; यह काम भाषाविज्ञानी (अनुवादक) करता है जो प्रोग्रामिंग नहीं जानता;

ख. द्विभाषिक शब्दावली की कंप्यूटर में प्रोग्रामिंग; यह काम प्रोग्रामर करता है जो भाषाविज्ञान से प्रायः परिचित नहीं होता तथा उसे भाषाविज्ञानी (अनुवादक) के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है;

ग. कंप्यूटर द्वारा अनुवाद-पर्यायों की आपूर्ति; और

घ. अनूदित पाठ का संपादन।

इसमें 'क, ख' तथा 'घ' का कर्ता मानव होता है (परंतु उसे मानव अनुवादक न कहना ही उपयुक्त होगा), और 'ग' का कर्ता कंप्यूटर; इसीलिए इसे मशीनी अनुवाद कहते हैं। इसका वास्तविक स्वरूप है -मानव आश्रित मशीनी अनुवाद (HAMT) या मशीन-आश्रित मानव अनुवाद (MAHT)। अनुवाद में विशुद्धता तथा एकरूपता और निष्पादन में त्वरता तथा परिमाण की विपुलता आदि मशीनी अनुवाद के गुण हैं। बड़ी मात्रा में त्वरित गति से तीन लाख शब्द प्रति घंटा विशुद्ध और एकरूप अनुवाद 'चौथी पीढ़ी 1971-81' के कंप्यूटरों से होता रहा है। विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के प्रारंभिक स्तरीय लेखन जिनमें व्याकरणिक संरचना तथा शब्दकोश की विविधता तथा विस्तार को नियंत्रित किया जा सके तथा अन्य ऐसे लेखन जिनके अनुवाद पर्याय विकल्पनशील नहीं होते (जैसे, सामाजिक अभिव्यक्तियाँ- 'कैसे हैं?', 'कितने बजे हैं?', 'नमस्कार', 'मौसम बढ़िया हैं' इत्यादि) मशीनी अनुवाद के लिए उपयुक्त विषय/पाठ माने जाते हैं। कंप्यूटर की यांत्रिक सीमाओं से अनुशासित भाषा के भाषावैज्ञानिक विश्लेषण के प्रारूप का निर्धारण भाषावैज्ञानिक अनुसंधान की दृष्टि से एक रोचक और उर्वर क्षेत्र हो सकता है। भाषाविज्ञानी इस दिशा में काम भी कर रहे हैं, परंतु मशीनी अनुवाद की व्यावहारिक संभावनाएँ निम्नलिखित दो कारणों से सीमित मानी गई है-

1. यदि अनुवाद की सामग्री आकार की दृष्टि से विपुल नहीं तो मशीनी अनुवाद महँगा पड़ता है; और

2. उन भाषाभेदों के अनुवाद की सुविधा कंप्यूटर में सामान्यतया नहीं हो पाती जिनकी अभिव्यक्तियों में भाषागत तथा उससे अधिक भाषा-बाह्य सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के कारण अर्थ संबंधी विकल्पनशीलता की मात्रा अधिक होती है, क्योंकि इसमें भाषाविज्ञानी तथा प्रोग्रामर का काम बहुत बढ़ जाता है। प्रायः सुरक्षा कार्य से संबंधित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के लेखनों का बड़ी मात्रा में विशुद्ध तथा एकरूप अनुवाद करने के लिए कंप्यूटरों का प्रयोग हो रहा है।

मशीनी अनुवाद प्रणाली की जटिलता के मुख्य स्रोत हैं-मूलभाषा तथा लक्ष्यभाषा के व्याकरणिक स्तर, भाषिक पक्ष और शब्दावली। इसलिए सजात (समान) भाषाओं, जैसे- हिंदी-मराठी, के लिए जो विधि प्रयुक्त हो वह असमान भाषाओं, जैसे- हिंदी-अंग्रेजी के लिए प्रयुक्त विधि से भिन्न होगी। यही कारण है कि सजात भाषाओं में अनुवाद के लिए एक मध्यवर्ती भाषा का विकास कर उसका प्रयोग किया जा सकता है। भारतीय आर्य भाषाओं (सजात भाषाओं) में परस्पर अनुवाद के लिए मध्यवर्ती भाषा के रूप में आई.आई.टी. कानपुर में संस्कृत का कंप्यूटर-सुसाध्य विकास इसी दिशा में एक प्रयास है।

मशीनी अनुवाद की सीमित सफलता का मुख्य कारण यह भी रहा है कि समुचित तकनीक उपलब्ध नहीं थी जिसकी सहायता से अर्थगत तथा संदर्भगत शंकाओं को स्पष्ट किया जा सके। किंतु अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इन्टेलिजेन्स) के अंतर्गत विकसित ज्ञान निरूपण (नॉलेज रिप्रेजेंटेशन) की विधियों में एक विधि, संकल्पनात्मक निर्भरता (कन्सेप्चुअल डिपेंडेंसी) से वाक्यपरक, अर्थपरक और संदर्भपरक शंकाओं के अलावा मुहावरेदार अभिव्यक्तियों की समस्याओं को भी सुलझाया जा सकता है।

शाब्दिक विश्लेषक के रूप में अनुवादक मूलभाषा के पदनिरूपण के लिए आवश्यक शाब्दिक तत्वों का विश्लेषण करता है। अनुवाद के लिए लक्ष्यभाषा के पर्यायों के साथ उनका मिलान भी करता है। शब्दसंचय (डाटाबेस फॉर लेक्सिकॉन) एक द्विभाषी या बहुभाषी शब्दकोश होता है जिसमें शब्दों के साथ उनके भाषिक पक्षों का भी समावेश होता है।

प्रकृत भाषाओं के वाक्यों में क्रिया का महत्व सबसे अधिक माना जाता है। जैसे ही शब्द विश्लेषक (अनुवादक) किसी शब्द को क्रिया के रूप में पहचान लेता है, वह उसकी धातु, काल, पक्ष आदि का विश्लेषण कर देता है। अनुवाद द्विभाषी कोश से पर्याय ढूँढने का काम करता है और अंत में जनित्र (जेनरटेर) लक्ष्यभाषा के व्याकरण के आधार पर वाक्य का अनुवाद कर देता है। मशीनी अनुवाद पर अन्य इस पाठ्यक्रम के अंतिम खंड में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

2.4.2 भाषा केंद्रित अनुवाद प्रकार

भाषा की संरचना, शैली, माध्यम और उसमें प्रयुक्त प्रतीकों आदि की प्रकृतिपरक पाठ के आधार पर निर्धारित प्रकारों को निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता है-

1) भाषा संरचना;

2) भाषा शैली;

3) भाषा माध्यम;

4) भाषा-प्रतीक और

5) पाठपरक।

1) भाषा संरचना :

इसका आधार संरचनात्मक भाषाविज्ञान की मान्यताएँ हैं। इसके दो पक्ष हैं :

क) भाषा संरचना के विश्लेषणात्मक स्तर; तथा

ख) स्तरों की, विशेषतया व्याकरणिक स्तर की श्रेणियों का अधिक्रम;

यदि मूल भाषा संरचना के स्तर लक्ष्यभाषा के सब सममूल्य स्तरों से प्रतिस्थापित हो जाएँ तो उसे 'समग्र' अनुवाद कहेंगे। परंतु सरंचनात्मक भाषाविज्ञान की मान्यताओं के अनुसार दो भाषाओं की समस्त व्यवस्थाओं में सममूल्यता नहीं होती क्योंकि प्रत्येक भाषा स्वनिष्ठ होती है और उनकी इकाइयों तथा श्रेणियों की सार्थकता प्रत्येक भाषा के भीतर पारस्पारिक संबंधों पर आधारित होती है। एक भाषा की पाठ्यसामग्री दूसरी भाषा में स्थानांतरित तो हो सकती है परंतु दोनों भाषाओं में सरंचना की समग्रता के स्तर पर सममूल्यता नहीं होती। इस कोटि का निर्धारण केवल सैद्धांतिक आवश्यकता की दृष्टि से किया गया है। यदि मूल पाठ की भाषा-संरचना के किसी एक स्तर के स्थान पर लक्ष्यभाषा पाठ की भाषा-संरचना के संवादी स्तर को स्थापित किया जा सके तो उसे 'परिसीमित' अनुवाद कहेंगे जिसका विवेचन कृष्ण कुमार गोस्वामी ने भी किया है। परिसीमित अनुवाद के चार भेद होते हैं। जैसे - 1) स्वनिमिक, 2) लेखिमीय, 3) व्याकरणिक, और 4) शब्दकोशीय आदि।

स्वनिमिक अनुवाद

इसका संबंध केवल उच्चारण से है जिसमें मूल भाषा की स्वनिम व्यवस्था के स्थान पर लक्ष्यभाषा की स्वनिम व्यवस्था आ जाती है। परंतु सामान्यतया व्याकरण तथा शब्दकोश अप्रभावित रहते हैं। इसका आधार है- मूलभाषा

तथा लक्ष्यभाषा के समान स्वनिक अभिलक्षणों- घोषत्व, प्राणत्व आदि स्वनिमिक इकाइयाँ हैं। मूलभाषा की उन स्वनिमिक इकाइयों के स्थान पर लक्ष्यभाषा की वे स्वनिमिक इकाइयाँ आ जाती हैं जिनमें स्वनिक अभिलक्षणों की अधिकतम समानता मिलती है; जैसे अंग्रेजी 'फ़' के स्थान पर मराठी 'फ़' (जैसे अंग्रेजी : फ़ार्मेसी- मराठीः फार्मेसी) उर्दू के ज़ के स्थान पर हिंदी में ज का प्रयोग भी ऐसा ही है। स्वनिमिक अनुवाद का स्वेच्छा से व्यवहार करने वालों में उल्लेखनीय हैं अभिनेता और विदूषक लोग। जब वे कला प्रदर्शन के दौरान विदेशी भाषा या बोली की ध्वनियों का सायास अनुकरण (उच्चारण) करते हैं तो वे लक्ष्यभाषा की उच्चारण व्यवस्था को स्वभाषा में ले आते हैं- स्वभाषा में उसका अनुवाद (ट्रांसफर-संक्रमण) कर देते हैं। यही स्थिति विदेशी भाषा सीखने वाले छात्रों के अशुद्ध उच्चारणों में होती है जो वे अनायास तथा असतर्कतापूर्वक करते हैं। दूसरी स्थिति को भाषा-अधिगम के प्रसंग में स्वनिमिक व्याघात कहा जाता है- मातृभाषा की व्यवस्था को अन्य भाषा (लक्ष्यभाषा) की स्वनिम व्यवस्था पर आरोपित किया जाता है। परंतु अनुवाद की शब्दावली में इसे हम अन्य भाषा (लक्ष्यभाषा) से मातृभाषा में स्वनिमिक अनुवाद कहेंगे।

स्वनिमिक अनुवाद के अनेक प्रसंगों में व्याकरण तथा शब्दकोश अप्रभावित रहते हैं। परंतु कुछ ऐसी परिस्थितियाँ भी हैं जिनमें लक्ष्यभाषा के ऐसे शब्दों का चयन किया जाता है जिनकी स्वनिक संरचना में मूलभाषा के शब्दों की स्वनिक संरचना से अधिकतम निकटता होती है। ऐसी परिस्थितियाँ है फिल्म डबिंग तथा कविता का अनुवाद। इन स्वनिमिक विशेषताओं को स्वनिमिक अनुवाद के नाम से भी अभिव्यक्ति किया जा सकता है।

लेखिमीय अनुवाद

इसका संबंध किसी लिपि के चिह्नों (लेखिमों/वर्णों) की केवल आकृति से है, उच्चारण से बिल्कुल नहीं। किसी एक लिपि के किन्हीं चिह्नों को किसी अन्य लिपि के समान या लगभग समान चिह्नों से प्रतिस्थापित करना लेखिमीय अनुवाद कहलाता है। जैसे-

देवनागरी	-	तेलुग	-	गुरमुखी
म उ भ	-	లో ది బి	-	ਮ ਉ ਭ

यह समानता शत प्रतिशत नहीं होती है कुछ अंतरों के साथ दोनों चिह्नों के उच्चारण मूल्यों में अंतर नहीं के बराबर होता है।

लेखिमीय अनुवाद का अपने विशुद्ध रूप में व्यावहारिक उपयोग नहीं होता। यह अपने आंशिक रूप में दो स्थितियों में दिखाई देता है। पहली है विज्ञापन की स्थिति। भारतीय जीवन बीमा निगम के निम्नलिखित विज्ञापनों में 'ईद मुबारक' को देवनागरी तथा रोमन में इस प्रकार लिखा गया है।

Guru parv Di Lakh Lakh Vadhayiyan
गुरूपर्व की लाख-लाख वधाइयाँ

Id Mubarak भी ऐसा ही एक अन्य उदाहरण है।

इस प्रकार के लेखकीय अनुवाद में लिप्यंतरण तथा लिप्यंकन की प्रक्रिया संपन्न होती है जब स्रोतभाषा पाठ के स्वनों को उनके उच्चारण के आधार पर लिपिचिह्नों में अंतरित कर दिया जाता है। यह प्रक्रिया अभ्यासापेक्षी है। मूल भाषापाठ की इकाइयाँ अपनी स्वनिमिक गुण समानता के कारण लक्ष्यभाषा पाठ में प्रयुक्त हो ही जाती है।

व्याकरणिक अनुवाद :

इसमें मूलभाषा पाठ की व्याकरणिक इकाइयों के स्थान पर लक्ष्यभाषा पाठ की समानार्थक व्याकरणिक इकाइयों का प्रयोग किया जाता है। परंतु शब्दकोश मूलभाषा-पाठ का ही रहता है।

मूल अंग्रेजी : ही विल ट्रैवल बाइ एक्सप्रेस ट्रेन। (Heewill travel by express train)
लक्ष्य हिंदी : वह एक्सप्रेस ट्रेन से ट्रैवल करेगा।

द्विभाषिकता की स्थिति में इसी को 'कोडमिश्रण' कहते हैं जो एक सामान्य और वास्तविक स्थिति है।

शब्दकोशीय अनुवाद :

मूलभाषा पाठ के शब्दकोश के स्थान पर लक्ष्यभाषा पाठ का शब्द कोश आ जाता है, परंतु व्याकरण मूल का ही रहता है।

मूल अंग्रेजी : ही विल ट्रैवल बाइ एक्सप्रेस ट्रेन।
लक्ष्य हिंदी : ही विल जा बाई तेज रफ्तार रेलगाड़ी।

यह भी द्विभाषिकता से संबंधित कोडमिश्रण का एक रूप है परंतु इसका व्यवहार अत्यंत सीमित है। महानगरवासी कॉलेज छात्रों की स्लैंग में इसके उदाहरण प्रायः मिल जाते हैं। यथा-वह स्पेशल ट्रेन से जाएगा अथवा वह उस खास गाड़ी से जाएगा वह मैथ का कोर्स ले लेगा। इसमें शब्द प्रति शब्द, शाब्दिक और मुक्त अनुवाद के रूप भी दिखाई देते हैं।

2) भाषा शैली या प्रयुक्ति

अनुवाद के प्रसंग तथा उद्देश्य अलग-अलग होते हैं तथा उनके विभिन्न परिस्थितियों में समाज में भाषा व्यवहार के जो भाषा प्रयोग के प्रतिमान निर्धारित हो जाते हैं उन्हे प्रकार्यमूलक भाषा भेद या भाषा शैली या प्रयुक्ति कहा गया है। उदाहरण के लिए - साहित्यिक, शास्त्रीय, प्रकार्यात्मक यथा प्रशासनिक तकनीकी, जनसंपर्कीय (रेडियो, दूरदर्शन, समाचार पत्र आदि जनसंपर्क माध्यमों से संबंधित), बोलचाल की प्रयुक्तियाँ या भाषा शैलियाँ या कुछ शिथिल रूप में 'भाषाएँ'। भाषा संरचना के विश्लेषणात्मक स्तरों- विशेषतया व्याकरण तथा शब्दकोश की इकाइयों तथा पैटर्नों की परिमाणगत तथा गुणात्मक प्रमुखता के द्वारा इन्हें पहचान और परिभाषित किया जाता है। तदनुसार साहित्यिक प्रयुक्ति में वाक्यरचना की विविधता, अर्थगत संबंधों की विविधता, अमूर्त शब्दार्थ की प्रधानता आदि अन्य प्रयुक्तियों की तुलना में प्रमुखता से मिलती है। इन विशिष्ट प्रयुक्तियों के आधार पर 'साहित्यिक अनुवाद', 'शास्त्रीय अनुवाद', 'तकनीकी अनुवाद' आदि संज्ञाओं का प्रयोग किया जाता है जिन्हें अनुवाद प्रणाली के प्रकार की अपेक्षा अनूदित पाठ के प्रकार कहना उपयुक्त होगा।

3) भाषा माध्यम

भाषा मूलतः अभिव्यक्ति का माध्यम है अतः भाषा माध्यम से तात्पर्य है भाषिक अभिव्यक्ति का माध्यम, जो मौखिक (श्रव्य) और लिखित (दृश्य) हो सकता है। भाषा माध्यम के अनुसार अनुवाद की संभावित स्थितियाँ इस प्रकार हो सकती हैं :

	मूलभाषा	**लक्ष्यभाषा**
क)	लिखित	लिखित
ख)	लिखित	मौखिक
ग)	मौखिक	लिखित
घ)	मौखिक	मौखिक

क) अर्थात् लिखित अनुवाद एक सामान्य स्थिति है और व्यवहार में 'अनुवाद' (विशेषण रहित पद) से इसी का बोध होता है। 'ख' तथा 'ग' कुछ असाधारण स्थितियाँ ही होती हैं तथा कभी-कभी आती हैं। 'घ' अर्थात् मौखिक अनुवाद (अनुभाषण) के अवसर बदलते जा रहे हैं। ऐसी बैठकें जिनमें एक से अधिक भाषाओं के प्रयोग की सुविधा होती है, मौखिक अनुवाद (अनुभाषण) निर्वचन की समस्याएँ तथा उसके प्रशिक्षण के मुद्दों पर शोधकार्य अनुवाद सिद्धांत का अन्यतम विशिष्ट क्षेत्र है।

मौखिक अनुवाद (अनुभाषण) की समस्याओं का मूल स्रोत है मौखिकता, जिसे निष्पन्न अतिशीघ्रता की स्थिति का निर्देश करने के लिए कहा जाता है। दुभाषिए के पास अनुवादक कीतुलना में बहुत ही कम समय (Less time than no time at all)' होता है। उसे बहुत शीघ्रता में मौखिक पाठ का बोधन कर उसे लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत कर देना होता है।

मौखिक अनुवाद के दोनों रूपों की इस विशेषता का भी संकेत किया गया है कि उनमें 'व्याख्यानात्मक' होने की प्रवृत्ति होती है। मूल पाठ को यथावत् सुरक्षित न रख पाने की विवशता के कारण प्रायः दुभाषिए कुछ अंशों की व्याख्या/निर्वचन (इंटरप्रिटेशन) कर देते हैं। दुभाषियों की विशेषताओं में उल्लेखनीय है-विषयवस्तु का अच्छा ज्ञान। प्रायः दुभाषियों को एक से अधिक विषयों के मौखिक अनुवाद की परिस्थितियों में काम करना पड़ता है। अतः उन्हें एक से अधिक विषयों का अच्छा तथा अधुनातन ज्ञान रखने के लिए प्रयत्नशील होना पड़ता है। इसका लाभ यह होता है कि शीघ्रता से बोले जा रहे भाषण में कोई अंश अस्पष्ट हो या छूट जाए तो दुभाषिए अपनी विशेषज्ञता के अनुभव से उसे कामचलाऊ तौर पर सही कर तात्कालिक आवश्यकता को पूरा कर लेते हैं। दूसरी विशेष बात यह है कि अनेक दुभाषिए एक से अधिक मूल भाषाओं से अनुवाद करते हैं परंतु उनकी लक्ष्यभाषा प्रायः एक रहती है।

मौखिक अनुवाद की विशिष्ट स्थिति का उदाहरण है - 'फिल्म डबिंग'। बहुभाषिकता की परिस्थिति में एक भाषा में बनी फिल्मों को दूसरी भाषा में 'डब' करना अब एक सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकता बन गई है, जिसका आर्थिक पक्ष भी है। तकनीकी दृष्टि से समस्या यह है कि फिल्म अभिनेताओं की मूलभाषा व्यवहारकालीन तथा लक्ष्यभाषा व्यवहारकालीन मौखिक अभिव्यक्तियों में ओष्ठ संचालन की दृष्टि से कालगत सामंजस्य बैठाना कि दोनों 'उन्हीं क्षणों में हों' तथा मूल एवं अनूदित अभिव्यक्तियों की कालावधि भी समान हो। डब किए गए पाठ के लेखक को इस सहकालिकता को निष्पन्न करने के प्रति सावधान रहना पड़ता है अन्यथा संवादों की विदेशीयता के पकड़ में आ जाने की संभावना उत्पन्न हो जाती है। जिससे दर्शक का ध्यान बँट सकता है और उसे झुंझलाहट हो सकती है।

फिल्मों के संदर्भ में निर्वचन या मौखिक अनुवाद की एक और स्थिति है 'सब-टाइटलिंग'। जिन विदेशी फिल्मों की डबिंग नहीं होती उनमें 'सब-टाइटलिंग' की व्यवस्था होती है-पात्रों के संवादों तथा अंशतः सूच्य कथानक का पट्टियों पर लिखा अनुवाद पर्दे पर आ जाता है। इसमें मुख्य रूप से दो समस्याएँ आती हैं। पहली है स्थान की। पट्टी में सीमित स्थान होता है' अतः फिल्म के प्रति फुट पर एक सीमित संख्या में वर्णों का प्रयोग करना होता है। पट्टी पर इतना लिखा जाए कि दर्शक उसे शीघ्रता से पढ़कर समझ लें - एक अध्ययन के अनुसार यह वाचन अवधि अधिकतम 8 अक्षर की होती है। क्योंकि दृश्य बदलते ही पट्टी भी बदलनी होती है। किसी पात्र का भाषण यदि लंबा हो तो यह ध्यान देना होता है कि भाषण के विराम स्तर पट्टियों के हिसाब से हों- एक पट्टी में एक इकाई आ जाए - और भाषण के आरंभ तथा अंत के बिन्दुओं का पट्टियों के आरंभ तथा अंत के बिन्दुओं से तालमेल बैठ जाए। दूसरी समस्या है - माध्यम परिवर्तन की। इसके कारण पट्टियों की भाषा में औपचारिकता और कसावट आ जाती हैं। प्रायः संवादों का संक्षेप देने की आवश्यकता के कारण प्रयोग में असमंजसता भी आ जाती है। डबिंग और सब-टाइलिंग पर विस्तृत चर्चा हम इस पाठ्यक्रम में ''डबिंग-सब टाइलिंग और अनुवाद' इकाई में भी करेंगे।

भाषा प्रतीक और पाठपरक अनुवाद भी भाषा केंद्रित अनुवाद के ही प्रकार हैं। इनकी विस्तृत चर्चा 2.2.1 तथा 2.2.3 में पहले ही विस्तार से कर चुके हैं।

2.5 अनुवाद के कुछ अन्य प्रकार : गौण प्रकार

अनुवाद के ऐसे प्रकारों की चर्चा करना भी संगत होगा जिन्हें गौण वर्ग में रखा जा सकता है। ये प्रकार अनूदित पाठ के भेद के द्योतक होने की अपेक्षा अनुवाद प्रणाली के भेद के द्योतक अधिक हैं। दूसरे ये मुख्य प्रकारों की धारणा में थोड़े-बहुत परिवर्तन या उसके किसी पक्ष पर अधिक बल देने के परिणामस्वरूप विकसित हुए है जिन्हें समझने के लिए मुख्य प्रकारों की जानकारी आवश्यक है। ये अनुवाद प्रकार विशेष उद्देश्य से प्रेरित हैं तथा इनका व्यवहार भी सीमित पैमाने पर होता है।

2.5.1 परोक्ष अनुवाद

मूल भाषा से अनुवाद न कर जब मध्यवर्ती पाठ fiter से अनुवाद किया जए तो यह परोक्ष अनुवाद कहलाता है। इसमें पहले किसी भाषा में किए गए अनुवाद से अनुवाद किया जाता है। मूलभाषा के लक्ष्यभाषा पाठ 1 से

लक्ष्यभाषा पाठ 2 की निष्पत्ति होती है। जैसे रूसी के मूल पाठ 1 अंग्रेजी अनुवाद से हिंदी में किया गया अनुवाद परोक्ष हैं। प्रायः अप्रधान या अल्प-परिचित भाषाओं की रचनाओं के प्रधान भाषाओं में किए गए अनुवाद से अनुवाद करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। मूल रचनाओं से दूसरी लक्ष्यभाषा के पाठकों को परिचित कराना परोक्ष अनुवाद का उद्देश्य है। उदाहरण के लिए, हमारे देश में स्वाधीनता प्राप्ति से पहले तथा उसके बाद कुछ समय तक रूसी भाषा का अध्ययन-अध्यापन अत्यंत सीमित था। तब रूसी भाषा के अंग्रेजी अनुवादों से हिंदी में (तथा संभवतः अन्य भारतीय भाषाओं में) अनुवाद होते थे। परोक्ष अनुवादों में व्याख्यात्मक होने की प्रवृत्ति होती है परंतु यदि प्रत्यक्ष अनुवाद सफल है तो परोक्ष अनुवाद भी इतना सफल हो सकता है कि वह प्रत्यक्ष जैसा प्रतीत हो। हालाँकि इस प्रकार के अनुवाद में कभी-कभी मूल-मुक्त होने की प्रवृत्ति तथा व्यवस्थागत अनिवार्यताओं के कारण 'अनुवाद की राजनीति/रणनीति' के हावी होने की आशंका बनी रहती है।

2.5.2 पुनरानुवाद

मूल भाषा पाठ के अनुवाद की पुनः भाषा में पुनरावृत्ति करना पुनरानुवाद है। इसमें अनुवाद कार्य दो बार होता है- पहली बार में जो लक्ष्यभाषा पाठ निष्पन्न होता है वही दूसरी बार में मूल भाषा पाठ बन जाता है, और जो भाषा पहली बार में मूल भाषा होती है वह दूसरी बार में लक्ष्यभाषा बन जाती है; जैसे- एक अंग्रेजी पाठ का हिंदी में अनुवाद और फिर उस हिंदी पाठ का अंग्रेजी में अनुवाद। कभी-कभी भारतीय भाषाओं में भी यह प्रवृत्ति देखी गई है। यह आवश्यक है कि अनुवादक तथा पुनरानुवादक अलग-अलग व्यक्ति हों तथा पुनरानुवादक मूलपाठ से परिचित न हो। इसका उद्देश्य है प्रथम अनुवाद की विशुद्धता की जाँच करना। पुनरानुवाद में निष्पन्न पाठ से मूलपाठ की 'सर्वतोमुखी निकटता' की मात्रा के अनुपात में प्रथम अनुवाद की विशुद्धता की मात्रा निर्धारित होगी। अनुवाद मूल्यांकन के लिए इस पद्धति का प्रायः प्रयोग किया जाता है।

2.5.3 सूचनानुवाद

मूलपाठ की विधा संबंधी विशेषता की उपेक्षा कर केवल विषयवस्तु अर्थात कथ्य या संदेश का अनुवाद करना सूचनानुवाद है। यह सारांश और संक्षेप से लेकर अविकल अनुवाद तक हो सकता हे। यह प्रायः व्याख्यात्मक हो जाता है और रूप, बिंब, लक्षण; शैली आदि पूर्णतः उपेक्षित रहती हैं। प्राचीन शास्त्रीय ग्रंथों का समसामायिक भाषाओं में सूचनानुवाद करने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। प्राचीन भाषाओं के माध्यम से प्रस्तुत ज्ञान के प्रति समसामयिक पाठकों को परिचित कराना इसका उद्देश्य है।

2.5.4 शैक्षिक अनुवाद

भारत तथा अनेक दूसरे देशों में जहाँ बहुभाषिकता जैसी स्थितियाँ है वहाँ ज्ञान साहित्य अमानक तथा अर्थ-साहित्यिक विधाओं में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है। अतः मूल रचनाओं का (लोक-साहित्य को इसमें लिया जा सकता है) मानक साहित्यिक शैली में अनुवाद करने की आवश्यकता बनी रहती है, जिससे शिक्षित वर्ग मूल रचनाओं का कुछ आस्वाद कर सके और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित व संवर्धित भी किया जा सके। यह ज्ञानात्मक साहित्य में होने वाले अनुवाद से इतर अनुवाद है।

2.5.5 रूप-प्रधान अनुवाद

रूप प्रधान अनुवाद में मूल के अर्थ पक्ष की उपेक्षा कर उसके ध्वनि-योजना पक्ष (रूप पक्ष) को संरक्षित रखते हुए लक्ष्यभाषा में अंतरित किया जाता हे। प्रायः बाल कविताओं के अनुवाद के लिए इस प्रणाली का प्रयोग किया जाता है ताकि मूलपाठ की ध्वनि योजना बनी रहे परंतु पात्र अथवा ज्ञान संकेत स्थानीय हों। यहाँ ध्वनिगत पैटर्न की समानता रखी जाती है और उनके अवसरों पर अर्थगत समानता प्रासंगिक नहीं रहती है।

उपरोक्त अनुवाद के प्रकारों के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि अनुवादक अभिव्यजंक, सूचनापरक तथा प्रभावपरक पाठों का अनुवाद करने के लिए उचित अनुवाद प्रकार को चुन सकता है। अनुवाद प्रकारों के आधार पर अनुवादक द्वारा स्रोत और लक्ष्यभाषा (पाठों) में सामंजस्य स्थापित किया जाता है।

कुछ पश्चिमी विचारकों ने भी अनुवाद प्रकारों की चर्चा की है। इनमें कैटफोर्ट ने पाठ्य विस्तार, भाषास्तर तथा श्रेणी के आधार पर पूर्णानुवाद तथा आंशिक अनुवाद, समस्त एव परिसीमित तथा मुक्त शाब्दिक और मध्यम वर्गीय

अनुवाद का उल्लेख किया है। इसी प्रकार जुलियाना हाउस ने भी प्रत्यक्ष और परोक्ष अनुवाद की चर्चा की है; जिसमें आदान-प्रदान, पक्षांतरण, पुनर्गठन, अनुशीलन, क्षतिपूर्ति, सुव्यक्तता, विस्तारण, समतुल्यता आदि पक्षों पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। जबकि कासाग्रांदे ने भाषा, तथ्य, संस्कृति और सौंदर्यपरक अनुवाद प्रकारों की बात कही है।

2.6 सारांश

अनुवाद के प्रकारो का वर्गीकरण करना इसलिए प्रासंगिक है कि अनूदित पाठों तथा अनुवाद प्रणालियों के विविध प्रकारों के मध्य एक स्पष्ट समानता उत्पन्न की जा सके जिसे अनुवाद विषयक चर्चा की विशुद्धता को सही परिप्रेक्ष्य में देखने में मदद मिलती है। इकाई में की गई चर्चा में हमने देखा कि अनुवाद प्रकारों का वर्गीकरण मुख्यतः माध्यम, प्रक्रिया तथा पाठ के आधार पर किया जाता है, परंतु अनुवाद के पक्षों और भाषा संरचना के विविध आयामों के आधार पर भी वर्गीकरण किया जा सकता है। अनुवाद के कुछ प्रकार गौण रूप में भी दिखाई देते हैं, क्योंकि अनुवाद एक कौशल एवं व्यवहार विधा होने के कारण इसमें प्रत्येक अनुवादक अपनी विशिष्ट योग्यता तथा विषय एवं भाषा विशेष और स्रोतभाषा-लक्ष्यभाषा की स्थितियों के अनुसार विशिष्ट प्रविधियों का उपयोग करता है। कुछ पश्चिमी अनुवाद विचारकों द्वारा बताए गए अनुवाद के प्रकारों के विषय में भी आपने जाना। ये सभी प्रकार आपस में गुंफित है तथा इन्हें शब्दशः विशिष्ट विधात्मक प्रकार के रूप में चिह्नित कर पाना पूर्णतः संभव नहीं है।

2.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. अनुवाद के प्रकारों के वर्गीकरण के मुख्य आधारों की चर्चा कीजिए।
2. माध्यम के आधार पर अनुवाद प्रकार तथा वर्गीकरण पर प्रकाश डालिए।
3. प्रक्रिया आधारित अनुवाद प्रकारों पर चर्चा कीजिए।
4. सारानुवाद क्या है? सारानुवाद के प्रयोज्य क्षेत्रों की चर्चा कीजिए।
5. भाषा केंद्रित अनुवाद किसे कहते हैं? भाषा माध्यम अनुवाद प्रकार किस प्रकार निर्धारित होता है?
6. भाषा बाह्य अनुवाद प्रकार की व्याख्या कीजिए।
7. साहित्यिक विधा के आधार पर अनुवाद प्रकार वर्गीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

2.8 शब्दावली

अंतःभाषिक, अंतरभाषिक, अंतर प्रतीकात्मक, अन्वय, टीका, गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, पाठधर्मी, प्रभावधर्मी, रूपांतरण, परोक्ष अनुवाद, पुनरनुवाद, पक्षांतरण, सुव्यक्तता।

2.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- अन्नपूर्णा, सी., अनुवाद समीक्षा : कामायनी, हैदराबाद, चर्ल प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
- गोपीनाथन, जी., अनुवाद सिद्धांत और प्रयोग, इलाहाबाद, लोकभारती प्रकाशन।
- दिलीप सिंह और ऋषभदेव शर्मा (सं.), अनुवाद का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, चेन्नै, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, द.भा.हि.प्र. सभा।
- श्रीवास्तव, रवींद्रनाथ, कृष्ण कुमार गोस्वामी (सं.), अनुवाद सिद्धांत और समस्याएँ, दिल्ली, आलेख प्रकाशन।
- सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन।
- Catford, J C. A linguistic Theory of Translation, London: OUP.

इकाई 3 अनुवाद की सीमाएँ और अननुवाद्यता

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 अनुवाद की सीमाएँ और अननुवाद्यता

3.2.1 अनुवाद की सीमाएँ : अर्थ एवं स्वरूप

3.2.2 अननुवाद्यता : अर्थ एवं स्वरूप

3.3 भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद : सीमाएँ और अननुवाद्यता

3.4 सामाजिक संस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद : सीमाएँ एवं अननुवाद्यता

3.4.1 लोकोक्ति मुहावरों का अनुवाद

3.4.2 अनुवाद की स्थानीयपरक सीमाएँ

3.5 पाठ की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद : सीमाएँ एवं अननुवाद्यता

3.5.1 साहित्यिक पाठ के स्तर पर अनुवाद

3.5.2 साहित्येतर पाठ के स्तर पर अनुवाद

3.5.2.1 कार्यालयी साहित्य के स्तर पर अनुवाद

3.5.2.2 मीडिया साहित्य के स्तर पर अनुवाद

3.5.2.3 वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के पाठ के स्तर पर अनुवाद

3.6 सारांश

3.7 अभ्यास के लिए प्र श्न

3.8 शब्दावली

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.0 उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम की पिछली दो इकाइयों में हमने अनुवाद प्रविधि और प्रक्रिया में विभिन्न अनुवाद सिद्धांतों तथा प्रक्रिया के आधार पर अनुवाद के वर्गीकरण पर विस्तृत चर्चा की। अनुवाद करते समय दो भाषाओं, संस्कृतियों और विचारधाराओं के बीच जब अनुवादक संवाद अथवा कथ्यांतरण के उद्यम में प्रवृत्त होता है तो यह कार्य सहजता से संपन्न नहीं होता है। अनुवादक को समानार्थी पर्यायों, समान सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और गृहीता या लक्ष्य पाठक वर्ग की सहजात प्रवृत्तियों के कारण बहु-कोणीय प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। अतः अनुवादक को अपनी सीमाओं का अहसास होता है। यही सीमाएँ अननुवाद्यता की स्थिति भी उत्पन्न करती हैं। इस इकाई में हम अनुवाद की सीमाओं पर चर्चा करेंगे। इससे यह स्पष्ट होगा कि अनुवादक के समक्ष सीमा बनकर किन-किन क्षेत्रों में कौन-कौन सी चुनौतियाँ आती हैं। इन चुनौतियों के उचित समाधान क्या हैं? कौन-सी सीमाएँ अननुवाद्यता के स्तर तक पहुँच कर विकराल रूप में सामने आती हैं। इन समस्याओं की आधार भूमि क्या है? आदि प्रश्नों के समाधान पर इस इकाई में अलग-अलग कोणों से विचार किया जाएगा।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप जान सकेंगे कि :

- अनुवाद करते हुए विषय के आधार पर सीमाएँ जन्म लेती हैं, जो अननुवाद्यता की स्थिति उत्पन्न करती हैं;
- विषयवस्तु और विधा के स्तर पर अनुवाद करते हुए भाव, कला, विषयवस्तु एवं शैली दोनों को प्रधानता देना आवश्यक है;

- साहित्यानुवाद में शब्द-चयन की समस्या का समाधान निकालना सरल नहीं है;
- सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में किस प्रकार की सीमाएँ अनुवाद कार्य को प्रभावित करती है;
- साहित्येतर सामग्री के अनुवाद में सीमाओं को पहचान की जा सकती हैं;
- लोकोक्ति तथा मुहावरे का अनुवाद किस स्तर पर अननुवाद्यता को जन्म देता है; तथा
- भाषा की प्रकृति किस प्रकार सीमा बनकर सामने आती है और उससे अनुवादक कैसे मार्ग खोजकर स्पष्टता की ओर अग्रसर होता है।

3.1 प्रस्तावना

आप जानते हैं कि अनुवाद भाषिक दूरियों को कम करने एवं उनके मध्य स्पष्टता का सेतु तैयार करने वाला तत्त्व है। अनुवाद के माध्यम से भाषा विशेष में विद्यमान ज्ञान को सार्वजनिकता मिली है। अनुवाद एक ऐसा कर्म है जो भाव एवं कला दोनों धरातलों पर समन्वय पैदा करता है और भाषाओं में निकटता लाता है। क्या आप जानते हैं कि अनुवाद करते हुए अनुवाद का दायित्व क्या होता है? वह अनुवाद किस प्रकार करता है? उसके अनुवाद में कौन-कौन सी समस्याएँ दिखलाई देती हैं। यदि विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि अनुवाद करते हुए अनुवादक का दायित्व कुछ-कुछ पुनःसृजन से जुड़ा होता है। प्रत्येक विषय की अपनी विशिष्टदृष्टि एवं शैली होती है जिससे अनुवादक अपना संबंध स्थापित करता है। वह विषय का चयन करता है और विषय में निहित सामग्री के विविध रूपों का अध्ययन-मनन करता है। मनन करने के पश्चात् उन रूपों का प्रतिरूप लक्ष्यभाषा में अंतरित करता है। इस प्रक्रिया से गुजरते हुए उसे दोनों भाषाओं की संरचनाओं से जूझना पड़ता है। इसी संघर्ष में कई बार मूल पाठ की कई ऐसी अभिव्यक्तियाँ सामने आती हैं, जिनका अनुवाद करना अगर असंभव नही तो जटिल अवश्य होता है। जब यही सीमाएँ चुनौतियों का रूप ले लेती हैं तो अननुवाद्यता की स्थिति को जन्म देती है। ऐसी स्थितियों से अनुवादक स्वयं को कैसे बाहर निकालता है इस पर विचार करने की आवश्यकता है। इस इकाई में हम इन्हीं बातों की चर्चा विविध विषयों से उदाहरण लेते हुए करेंगे।

3.2 अनुवाद की सीमाएँ और अननुवाद्यता : अर्थ एवं स्वरूप

कोई भी अनुवाद पूर्ण हो यह तय करना कठिन कार्य है क्योंकि किसी भी स्रोतभाषा का पाठ न तो आदर्श अनुवाद होता है और न ही अन-अनुवाद्य। अनुवाद की इस स्थिति में भाषापरक और सामाजिक सांस्कृतिक सीमाएँ सामने आती हैं। ब्रिटिश विद्वान कैटफर्ड ने भी अनुवाद की दो प्रकार की सीमाएँ बताई हैं - पहली, भाषापरक और दूसरी, सामाजिक-सांस्कृतिक। एक अन्य विद्वान पोपोविच ने कहा है कि स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा की भिन्न संरचनाओं के कारण भाषापरक सीमा का हल तो निकल सकता है, किंतु सामाजिक-सांस्कृतिक सीमाएँ जटिल होती हैं। ये सीमाएँ वास्तव में भाषायी संरचनाओं के साथ गुत्थी होती हैं, इसलिए इनका विवेचन एक-दूसरे को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। कृष्ण कुमार गोस्वामी ने कैटफोर्ड और पोपोविच के विवेचन को ध्यान में रखते हुए इन दोनों सीमाओं के अतिरिक्त एक तीसरी सीमा भी बताई है और वह है पाठ-प्रकृतिपरक। अतः अनुवाद की सीमाओं पर चर्चा करते हुए भाषापरक सीमा, सामाजिक-सांस्कृतिक सीमा और पाठ-प्रकृतिपरक सीमा पर चर्चा की जाएगी।

3.2.1 अनुवाद की सीमाएँ : अर्थ एवं स्वरूप

अनुवाद एक श्रमसाध्य कला है। इस कला की पूर्णता में अनेक बाधाएँ आती हैं। इन्हीं बाधाओं को सीमा कहा जाता है। वस्तुतः सीमा (Limitation) से तात्पर्य अनुवाद की प्रक्रिया में आने वाली चुनौतियों से है। जब अनुवाद कार्य किया जाता है तो 'काव्य' की पूर्णता एक विशिष्टसुगमता तो बनाती है पर साथ ही कुछ विघ्न बनकर सामने भी आती है। कुछ आयाम मार्ग को सुगम बनाते हैं तो कुछ जटिल प्रश्न बनकर सामने आते हैं। विघ्न या चुनौती बनकर खड़े होने वाले आयाम सीमा कहलाते हैं। अनुवादक इन सीमाओं के स्वरूप को ध्यान में रखते हुए इनके निराकरण का प्रयास भी करता है।

3.2.2 अननुवाद्यता : अर्थ एवं स्वरूप

अनुवाद की सीमाएँ दो रूपों में सामने आती हैं। पहली सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप चुनौती बनकर सामने खड़ी हो जाती है। दूसरी स्थिति इसी समस्या का विस्तारित रूप है जिसका समाधान न मिल पाने के कारण अननुवाद्यता की स्थिति उत्पन्न होती है। अनुवाद्यता से अभिप्राय अनूदित हो सकने की स्थिति या संभावना से। वास्तव में अनुवाद समतुल्यता स्थापित हो जाने की वास्तविक और संभाव्य स्थिति अनुवादकता है यहाँ मूल की स्थिति या प्रभाव इतना अधिक होता है कि उसके समतुल्य हमें कुछ मिल ही नहीं पाता। यहाँ हम यह भी कह सकते हैं कि मूल पाठ की विषयवस्तु को तथा उसके भाषिक सौन्दर्य को हम चाहकर भी लक्ष्यपाठ हेतु अपने अनुवाद में बदल नहीं सकते। वस्तुतः यहाँ अनुवाद विषय (पाठ) की भी चुनौतीपूर्ण सीमा होती है केवल अनुवादक की ही नहीं। 'अन-अनुवाद्य' या अननुवाद्यता शब्द अन् और अनुवाद्य के संयोग से बना है; जिसका अर्थ है - जो अनूदित न हो सके। अर्थात स्रोतपाठ और लक्ष्यपाठ में सामाजिक-सांस्कृतिक, भाषिक और पाठ-प्रयुक्तिपरक अभिव्यक्तियों के लिए समानार्थी उपलब्ध न हों। इसके अतिरिक्त अनूदित पाठ का पाठक मूल पाठ की संवेदना संकल्पना और उसकी अर्थवत्ता को ग्रहण कर ही न पाए, ऐसी स्थितियाँ सकल रूप में अननुवाद्यता की स्थिति कहलाती हैं। अतः यह स्पष्ट है कि सीमा एवं अननुवाद्यता लगभग एक ही संकल्पना के दो रूप हैं जिनका अंतर उनकी प्रक्रिया से संबंधित है।

अनुवाद विषय पर आधारित होता है। अनुवाद कर्म का प्रयोजन क्षेत्र विशाल है, यह सार्वभौम है, तथा साहित्य से प्रशासन तथा सामाजिक-सांस्कृतिक प्रयुक्तियों से मीडिया तक अनेक विषयों एवं रूपों में दिखलाई देता है। विषय के अनुरूप ही अनुवाद के समक्ष सीमाएँ एवं चुनौतियाँ आती हैं। अतः अनुवाद की सीमाओं की चर्चा हम उदाहरण सहित विविध विषयों के अनुरूप अलग-अलग करेंगे। अनुवाद के विभिन्न क्षेत्रों और उसके प्रकारों के आधार पर सीमाओं और अननुवाद्यता की स्थितियों को देखा-परखा जा सकता है। अधिकतर अनुवाद विचारकों ने अननुवाद्यता को विषयवस्तु की विधा, यथा; भाषिक स्तर, साहित्यिक स्तर, सांस्कृतिक-सामाजिक स्तर, भाषा की प्रकृति स्तर तथा पाठ-प्रकृति के स्तर पर देखा है।

3.3 भाषा की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद : सीमा और अननुवाद्यता

प्रत्येक भाषा की अपनी कुछ निजी विशेषताएँ होती हैं। भाषा में निहित यही निजी विशेषता अथवा प्रकृतिगत विशिष्टता उसे एक पृथक पहचान देती है। वस्तुतः दो भिन्न भाषा-भाषी समुदायों के मध्य विचारों के आदान-प्रदान हेतु अनुवाद मध्यस्थता का कार्य करता है। अनेक बार ऐसा देखा गया है कि स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृतिगत विशेषताएँ अनुवाद हेतु सीमा बनकर उपस्थित हो जाती हैं, क्योंकि दोनों के बीच विशेष प्रकार की भिन्नता स्वाभाविक रूप से रहती है। ध्यातव्य है कि प्रत्येक भाषा का अपना पृथक अस्तित्व होता है, उसकी अपनी एक विशिष्टसंरचना होती है, एक विशिष्ट शैली होती है। इसलिए अनुवाद करते समय स्रोतभाषा और लक्ष्य भाषा की प्रकृति को दृष्टि में रखकर उनकी भिन्नताओं एवं समानताओं को आत्मसात कर अनुवाद प्रक्रिया में प्रवृत्त होना चाहिए। यहाँ हम हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा की प्रकृति एवं संरचना के उदाहरणों द्वारा इस बात को समझ सकते हैं।

इसके लिए अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की कुछ संरचनात्मक प्रवृत्तियों का आकलन करना जरूरी है। अंग्रेजी भाषा के वाक्यों में प्रायः कर्ता, क्रिया और कर्म का क्रम होता है जबकि हिंदी में कर्ता/कर्म और क्रिया का क्रम रहता है, यथा -

1. Ram Killed Ravana : Sub - Verb - Object
   राम ने रावण को मारा - कर्ता - कर्म - क्रिया

अंग्रेजी वाक्यों में क्रिया-विशेषणों का प्रयोग क्रिया के बाद होता है जबकि हिंदी में क्रिया विशेषण क्रिया से पूर्व आते हैं। यथा -

1. Rohit works very hard : Sub - Verb - Adverb
   रोहित बहुत मेहनत करता है- कर्ता - क्रिया विशेषण - क्रिया

कुछ वाक्य ऐसे भी होते हैं जिनमें एकाधिक अर्थों की प्राप्ति हाती है। उदाहरणतः

'मीरा नाचने वाली है।'

उपर्युक्त वाक्य के दो अर्थ हैं - मीरा अब नाचेगी और दूसरा अर्थ है - मीरा नाचने का काम करती है। इसी प्रकार कुछ अन्य उदाहरण हैं -

(i) पीते जाओ।

- पीते हुए जाओ।
- पीने के बाद जाओ।
- पीते ही रहो।

(iii) प्रसाद की कहानी सुनाओ।

- प्रसाद की लिखी हुई कोई कहानी सुनाओ।
- प्रसाद पर लिखी हुई कोई कहानी सुनाओ।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि बाह्य दृष्टि (surface structure) से जो वाक्य सरल से प्रतीत होते हैं उनकी आंतरिक संरचना (deep structure) कई बार एकाधिक अर्थों को समेटे हुए होती है। यही अर्थवत्ता कई बार अनुवादक के सम्मुख सीमा बनकर उपस्थित होती है और अननुवाद्यता के स्तर पर पहुँच जाती है। यही अर्थवत्ता भाषा की प्रकृति को विस्तार भी देती है अतः भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखकर संदर्भानुकूल अनुवाद किया जाना चाहिए। वस्तुतः किसी भाषा-विशेष की वाक्य-संरचना लिंग, वचन और पुरुष से भी प्रभावित होती है। यदि अंग्रेजी-हिंदी दोनों भाषाओं की तुलना की जाए तो पता चलेगा कि हिंदी में लिंग के स्तर पर अन्विति होती है जबकि अंग्रेजी में नहीं। यथा -

लड़का आ गया - Boy has come

लड़की आ गई - Girl has come

इसी प्रकार हिंदी भाषा में आदरार्थक बहुवचन का प्रयोग होता है जबकि अंग्रेजी भाषा में नहीं -

1. Vajpayee is a very good speaker.
   वाजपेयी बड़े अच्छे वक्ता हैं।
2. My Father is a good singer.
   मेरे पिताजी अच्छे गायक हैं।

आइए अब कुछ ऐसे उदाहरण भी देखें जिनसे एकवचन-बहुवचन का तो बोध हो जाता है किंतु लिंग का बोध नहीं हो पाता -

1. Will they not learn their lesson?
   क्या वे अपना पाठ याद नहीं करेंगे (पुं)?/क्या वे अपना पाठ नहीं याद करेंगी (स्त्री)?
2. They eat bananas.
   वे केले खाते हैं/वे केले खाती हैं।

पदक्रम में परिवर्तन लाने के लिए अतिरिक्त शब्दों का भी प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जाता रहा है -

(i) This is where I first met my well-wishers.
(ii) I enjoyed hockey match and so did my father.

वहीं हिंदी भाषा की प्रकृति के अनुसार वाक्य के जिस अंश पर बल देना होता है उसे व्याकरणिक व्यवस्था के प्रतिकूल कई बार वाक्य के शुरूआत के क्रम में रखा जाता है -

(i) मैंने कहा था न कि मोहन नहीं आएगा।
(ii) यह रही आपकी अब तक की कमाई

अनुवादक केवल भाव का अनुवाद नहीं करता बल्कि शैली का भी करता है। भाव एवं शैली दोनों ही अनुवाद में बाधक हैं और साधक भी। इनकी सहायता से ज्ञान का विस्तार भी होता है और नवीन शैलियाँ भी सृजित होती हैं। हिंदी में एक ही बात को भिन्न-भिन्न शैलियों और शब्दों द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। किंतु सभी शैलियों के पर्याय अंग्रेजी में उपलब्ध नहीं होते। ऐसे में अनुवादक सामान्य लगने वाला अनुवाद करता है। उसके समक्ष यह चुनौती भी उपस्थित हो जाती है कि वह मूल के भाव को किस प्रकार दूसरी भाषा में रूपांतरित करता है। उदाहरण के लिए;

उसकी पत्नी ज्वर से पीड़ित है।
उसकी पत्नी ज्वरग्रस्त है।
उसकी बेगम की तबीयत नासाज है।
उसकी वाइफ को फीवर है।

हिंदी के उपर्युक्त चार-चार उदाहरण मिलते हैं जो अलग-अलग प्रसंगों में अपनी विशेषता लिए हुए हैं किंतु अंग्रेजी अनुवाद प्रायः एक ही रूप में देखने को मिलता है। इन चारों को अंग्रेजी में 'His wife is suffering from fever' होगा। यही नहीं हर भाषा में शब्द भंडार व्यापक मात्रा में उपलब्ध होते हैं। हिन्दी शब्दों के पर्याय रूप एक ही अर्थ के द्योतक होने के बाद भी विविध अर्थवत्ता समेटे रहते हैं, यथा कोमल, मृदु, मुलायम, नाजुक, नरम आदि। सभी का भाव एक समान होने के बाद भी प्रयोग से अर्थ भिन्नता स्थापित हो जाती है। उसी प्रकार सूर्य, भास्कर, रवि, मार्तंड, दिवाकर, सूरज आदि पर्याय होने के बाद भी इनमें स्थिति विशेष एवं प्रयोग सटीक अनुवाद प्रायः दुष्कर कार्य है। यही कार्य सीमा बनकर उत्पन्न होता है। अतः स्पष्ट है कि भाषा की प्रकृति से उत्पन्न व्याकरणिक, कोशगत रूपों का पूर्णतया सटीक अनुवाद संभव नहीं किन्तु मूल भाव का अंतरण संभव है। अतः सीमाओं के अतिक्रमण से बचते हुए संप्रेषणीय अनुवाद की ओर बढ़ना श्रेयस्कर होगा।

3.4 सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद : सीमाएँ और अननुवाद्यता

भाषा, समाज और संस्कृति में परस्पर अन्योन्याश्रित संबंध है। भाषा समाज द्वारा विकसित होती है और उसका पल्लवन-पोषण संस्कृति द्वारा होता है। समाज को मूल आधार भाषा एवं उसकी संस्कृति देती है। संस्कृति समाज द्वारा पहचान प्राप्त करती हैं तथा भाषा द्वारा प्रचारित होती है। अनुवाद भाषाओं के मध्य सहजता का प्रतिरूप है। अतः अनुवाद के संदर्भ में भाषा के साथ-साथ समाज एवं संस्कृति का भी महत्व है। अनुवाद के विचारकों ने भी दो प्रकार की अननुवाद्यता की चर्चा की है भाषिक और सांस्कृतिक। प्रत्येक भाषा और उसके भाषिक समाज की अपनी पृथक पहचान है। उसके अपने मत, विश्वास, रीति-रिवाज, खानपान, वेषभूषा, धार्मिक मत, आध्यात्मिक मत, लोकमत और दार्शनिक चिंतन हैं। प्रत्येक भाषा की सामाजिकता भिन्न-भिन्न रूप में है। सामाजिक-सांस्कृतिक शब्द सामान्यतः सरल होते हैं किंतु सीमाएँ तब विकराल रूप में आती हैं जब स्रोतभाषा की सांस्कृतिक विशिष्टताएँ लक्ष्य भाषा की संस्कृति में विद्यमान ही नहीं होती। ऐसे में अनुवादक दो भिन्न सांस्कृतिक परिवेश युक्त भाषाओं में तालमेल बैठाता है अर्थात दो उपभोज्य और पारिस्थितिकीय संस्कृतियों में अनुवादकीय समन्वय। इस प्रकार के अनुवाद में कई पद्धतियों का सहारा लिया जाता है और अक्षम होने पर व्याख्यात्मक टिप्पणी द्वारा शब्द को ज्यों का त्यों प्रयोग में ले लिया जाता है।

सांस्कृतिक अनुवाद के अंतर्गत सबसे पहली सीमा नामों की आती है। व्यक्ति अथवा पात्र का नाम, खाने-पीने की वस्तुओं के नाम, स्थानों के नाम, त्योहारों के नाम प्रत्येक भाषा में अपनी पृथक पहचान एवं विशिष्ट संदर्भ रखते हैं। स्रोतभाषा की संस्कृति की अभिव्यक्ति करने वाले ये नाम लक्ष्यभाषा के पाठकों के लिए अपरिचित-से लगते हैं और इसलिए उनके रसास्वादन में बाधा भी उत्पन्न होती है। किन्तु समस्या यह है कि लक्ष्यभाषा में इन्हें सांस्कृतिक परिवेश सहित कैसे वर्णित किया जाए। ऐसे में अनुवादक को उसके समानार्थी पर्याय खोजकर, ज्यों का त्यों रखकर अथवा अंत में व्याख्यात्मक टिप्पणियों द्वारा इनका अनुवाद करना पड़ता है। वह इन सांस्कृतिक

नामों का ज्यों-का-त्यों रख मूल नामों के महत्व एवं पहचान को बनाए रखने का प्रयास करता है। उदाहरण के लिए, 'रामायण' का उर्दू में अनुवाद किया जाए तो हिंदी भाषी के लिए यह अनुवाद असंगत होगा। अतः अधिकांश सांस्कृतिक पात्रों के नाम यथा - राम, लक्ष्मण, दुर्योधन, युधिष्ठिर, कृष्ण, युयुत्सु, करण, वेद व्यास, विभीषण आदि का अनुवाद ज्यों का त्यों करना होगा। फारसी साहित्य के पात्रों, स्थानों आदि के नाम भी मूलरूप में ही अपनी भावना और सौन्दर्य को व्यक्त कर पाते हैं। इसी प्रकार स्थानों के नामों में भी अनुवादक उन्हें उसी रूप में स्वीकार करता है किंतु कवि के मनोजगत से उत्पन्न स्थान और काव्यों में प्रयुक्त स्थान चुनौती बन जाते हैं। 'कामायनी' में प्रसाद के चिंतन से उत्पन्न जल प्लावन की घटना से संबंधित स्थान को 'मनोरवसपर्ण' कहा गया। इसी प्रकार सांस्कृतिक मनोभूमि को प्रस्तुत करने वाले चित्रकूट, पंचवटी, लंका, गोवर्धन, मानसरोवर, जेरूसलम (यरूशलम), पेंडेमोनियम, दि माउण्ट आदि स्थानों के नाम के समकक्ष पर्यायों का नहीं खोजा जा सकता। अतः इनका ज्यों का त्यों प्रयोग कर व्याख्यात्मक पद्धति का सहारा लिया जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक देश का अपना-अपना खान-पान होता है और उनका प्रतिस्थापन करना असंभव-सा हो जाता है। उदाहरणतः भारतीय भोजन चपाती, परांठा, इडली, डोसा, साग, आदि और यूरोपीय भोजन सैंडविच, पिज्जा, बर्गर आदि का अनुवाद नहीं हो सकता। अतः अनुवादक कई बार मैंगो शेक, आइसक्रीम, वोदका आदि के अनुवाद में ज्यों का त्यों की पद्धति अपनाता है तो कभी बैंगन का भर्ता (a dish prepared from meshed and fried brinjles); घेवर (a sweet prepared from wheat flour, oil and cream) आदि अनुवाद कर व्याख्या की पद्धति अपनाता है। सामाजिक-सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों से निकले त्योहारों के अनुवाद में भी यही पद्धति अपनाई जाती है। रीति रिवाज एवं त्योहारों को समझ पाना प्रत्येक व्यक्ति के लिए तभी संभव हो पाएगा जब वह उसकी प्रयोग ीलता एवं सामाजिक महत्व से परिचित हो पाएगा। अतः बकरीद, पोंगल, होली, दिवाली, क्रिसमिस डे, दशहरा, ईद-उल-फितर आदि त्योहारों और जन्म विवाह, अंतिम संस्कारों की पद्धतियों को सामाजिक जानकारी द्वारा ही समझा जा सकता है और उन्हें लक्ष्यभाषा में देने का प्रयास रहता है।

शब्द प्रयोग के धरातल पर भी सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ महत्वपूर्ण माने गए हैं। शब्द के साथ-साथ संस्कृति और धर्म की व्याख्या करने वाले एकाधिक पद समूहों का भी अनुवाद करना अत्यंत कठिन कार्य है। भारतीय समाज में व्याख्यायित 'धर्म' मात्र Religion और 'दीपक' मात्र Earthern lamp से अनूदित नहीं हो सकता। भारतीय समाज में रि ते-नाते के अंतर्गत पूरा समाजशास्त्र समाया हुआ है। यहाँ माता-पिता के अतिरिक्त मामा, चाचा, मौसा, ताऊ, मामी, चाची, बुआ, ताई, आदि एक परिवार के आपसी बंधन से बंधे हैं। इन सबके आपसी बंधन और प्रेम को मात्र Uncle-aunt द्वारा कहाँ तक बाँधा जा सकता है। इस प्रकार सामाजिक-सांस्कृतिक अवस्था एवं स्थिति का अनुवाद प्रायः असंभव-सा ही है।

सांस्कृतिक तत्त्वों के अनुवाद में सबसे कठिनाई अभिव्यक्तियों के अनुवाद में आती है। इन अभिव्यक्तियों में अपनी निजी विशिष्टता होती है जिसका समतुल्य सदैव नहीं मिल पाता। ऐसे में ये अननुवाद्य हो जाती हैं और अनुवादक कठिनाई में फँस जाता है। ऐसी अवस्था में अनुवादक इनका अनुवाद या तो अर्थ के स्तर पर करता है या समीपवर्ती पर्याय द्वारा। कई बार उचित पर्याय न मिलने पर ज्यों का त्यों प्रयोग द्वारा भी ऐसे अनुवाद को पूर्ण किया जाता है यथा -

1. उनमें महाभारत का युद्ध छिड़ गया।
   The Mahabharta was started among them.
2. हर कोई खुद को जटायु-सा विवश पाता है अब।
   Every body feels himself, like Jatayu, to be helpless victim of the situation.
3. उनमें कौरव-पांडव जैसा वैर है।
   They are sworn enemies like Kaurva-Pandavas.

सांस्कृतिक स्तर पर अनुवाद करते समय पारिस्थितिकी संस्कृति अर्थात हमारे परिवेश में प्राकृतिक रूप से विनिर्मित पर्यास के संदर्भ में प्रयुक्त होने वाली शब्दावली के अनुवाद में आने वाली सीमाएँ प्रमुख हैं। इसमें मिट्टी, वायु तथा जल के विभिन्न घटकों से विनिर्मित वृक्षों; स्थलों उत्पादों के नाम अलग-अलग परिस्थिति की परिक्षेत्र में

अलग-अलग मिलते हैं। पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों की असंख्य प्रजातियों तथा उनके व्यवहार को बताने वाली अभिव्यक्तियों के अनुवाद में भी काफी सीमाएँ सामने आती हैं।

3.4.1 लोकोक्ति-मुहावरों का अनुवाद

भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषा का रूप जहाँ एक ओर सामान्य एवं सरल माना गया है वहीं दूसरी ओर भाषा सामाजिक धरातल पर व्यंग्यात्मक एवं लाक्षणिक रूपों से भी परिपूर्ण हो जाती है। सामाजिक-सांस्कृतिक स्थल पर लोकोक्तियाँ एवं मुहावरे ऐसी भाषिक संरचनाएं हैं जिनमें किसी स्थल विशेष की परंपराएँ, संस्कार अथवा आचार-विचार प्रभावित होते रहते हैं। वस्तुतः मुहावरे-लोकोक्तियों का मूल स्रोत देश अथवा भाषा की संस्कृति ही होती है। लोकोक्ति एवं मुहावरे में भाषा विशेष की साामजिक-सांस्कृतिक परंपराएँ निहित होती हैं। लोकोक्ति एवं मुहावरे लोक-कल्पना से रंगी अभिव्यक्तियाँ हैं जिनसे लोकानुभव विकसित होता है तथा भाषा में चमत्कार तथा सौन्दर्य उत्पन्न होता है। मुहावरे जहाँ एक ओर भाषा की संरचना शक्ति का प्राण हैं वहीं लोकोक्तियाँ उस भाषा की संस्कृति की पहचान हैं। अतः एक भाषा से दूसरी भाषा में लोकोक्तियों और मुहावरों का सही संप्रेषण जितना महत्वपूर्ण है उतना ही कठिन भी है। ऐसे में अनुवादक के समकक्ष कई कठिनाइयाँ उपस्थित हो जाती हैं।

लोकोक्ति मुहावरे के अनुवाद की सीमाएँ तब आरंभ होती हैं जब शब्दानुवाद से मूल अर्थ को बाधा पहुँचती है अथवा दूसरी भाषा में समानाभिव्यक्ति नही मिल पाती है। उदाहरण के लिए, 'It is his herculean task' का यदि अनुवाद करना हो तो यह बात स्पष्ट ही है 'Herculean' हिंदी भाषी के लिए अपरिचित है। यह वह व्यक्ति है जो अपने कार्य में सिद्ध हुआ था। अतः यह मुहावरा सिद्धि को प्रकट करता है तथा प्रत्येक हिंदी भाषी जानता है कि भगीरथ भी अपने मनोरथ में सिद्ध हुआ था। अतः उपर्युक्त मुहावरे का अनुवाद 'उसका भागीरथी प्रयास है' होता है। इस प्रकार सांस्कृतिक अंतर आने पर अर्थाभिव्यक्ति में अंतर हो जाता है। इस प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण मिल जाते हैं:

1. Barking dogs seldom bite.
   जो गरजते हैं वे बरसते नहीं।

2. Every potter praises his own pots.
   अपनी दही को कौन खट्टा कहता है।

3. It is a cock and bull story
   यह बेसिर पैर की बात है।

लोकोक्ति-मुहावरों के भावानुवाद की पद्धति भी यदा-कदा पूर्ण अर्थ ध्वनित करने में अक्षम होती है। इसका मुख्य कारण सामाजिक-सांस्कृतिक-धार्मिक संदर्भ होते हैं। दोनों भाषाओं के संदर्भ की दूरी इतनी अधिक होती है कि उनकी अर्थ छवियाँ अनूदित नहीं की जा सकती। ऐसे में अनुवादक मूक-सा हो जाता है और अननुवाद्यता की स्थिति से उबरने के लिए उन्हें यथावत रूप में व्यक्त कर पाद-टिप्पणी का सहारा लेकर अपने दायित्व को पूर्ण करता है। हिंदी में ऐसे अनेक संस्कृति आधारयुक्त मुहावरे हैं जिनका अंग्रेजी में सटीक अनुवाद संभव नहीं। यथा - 'गंगा नहाना', 'श्रीगणेश करना', 'हाथ पीले करना', 'चूल्हा-चौका करना', 'सदा सुहागन रहना' आदि जिनके समानार्थक मिलना संभव नहीं होता अतः इनका शब्दानुवाद या भावानुवाद नहीं किया जा सकता है। इन्हें स्पष्ट करने के लिए कई बार व्याख्यात्मक टिप्पणियों का सहारा लेना पड़ता है।

3.4.2 अनुवाद की स्थानीयपरक सीमाएँ

प्रत्येक क्षेत्र, राज्य, दश और भौगोलिक द्वीप की अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा, रीति-रिवाज तथा प्रचलन होते हैं। इन सभी व्यवहारों को व्यक्त करने की अपनी रीति-नीति और भाषिक प्रयुक्तियाँ होती हैं। जब ये प्रयुक्तियाँ अपनी सीमा से अतिक्रमित होकर अन्यत्र प्रयोग में आती हैं तो अपने मूल अर्थ की अपेक्षा भिन्न-अर्थ की अभिव्यंजना भी करती पाई गई हैं।

बहुसांस्कृतिक और बहु-भाषिक देशों में विशिष्ट अभिव्यक्तियों के संदर्भ में भारत का ही उदाहरण लें तो यहाँ अनेक भाषाएँ प्रचलन में हैं; भले ही कुछ में लिखित साहित्य नहीं है; अथवा वे सरकारी स्तर अधिसूचित न हों तथापि वे जन-व्यवहार में हैं। इनमें अपनी-अपनी आंचलिकता के अनुसार संकल्पनात्मक विशिष्टयों के प्रयोग मिलते हैं, इनका अनुवाद करना लिए सरल नहीं होता है। वेष-भूषा संबंधी शब्द नितांत देशीय होते हैं क्योंकि वस्त्र मौसम की प्रकृति के अनुसार ओढ़े-पहने जाते हैं। 'फिरन' कश्मीरी का एक लंबा ओवर कोट है और 'पोच्यु' महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला ऊनी कोटनुमा हल्का-फुल्का वस्त्र। 'लोई' एक ऊनी/सूती चद्दर होती है, परंतु हिमाचल क बर्फ़ीले क्षेत्रों में एक लंबे ऊनी ओवर कोट को भी लोई कहा जाता है।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी बहुभाषिकता के कारण विभिन्न भाषिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के लोग अपनी-अपनी भाषाओं का प्रयोग करते हैं। अमेरिका में Gas का अर्थ Petrol है जबकि भारत में गैस किसी भी तरल के गैसीय रूप को कहा जाता है। इसी प्रकार Sergent, Sherrif का तात्पर्य Police Officer से हैं, और agent का मतलब Secret Police से होता है। ऑस्ट्रेलिया में Rail Road से तात्पर्य सड़क पर Multi Boggie-vehicle अर्थात दो तीन बड़े ट्रकों को इकट्टे मिलाकर एक ट्रक से है। Car के लिए Automobile तथा Central के लिए Federal आदि शब्दों के प्रयोग देखे जाते हैं । इस प्रकार अनुवाद प्रक्रिया में अनुवादक को क्षेत्रीयता और स्थानीयपरक अभिव्यक्तियों की सीमाओं से दो चार होना पड़ता है।

अनुवाद-विज्ञान के सुप्रसिद्ध विद्वान जार्ज मॉनिन का कथन संभवतः इस सारी अननुवाद्यता संबंधी चर्चा को कुछ यूँ समेटता प्रतीत होता है :

1. व्यक्तिगत अनुभव नितांत निजी होने से अन-अनुवाद्य होते हैं।
2. सैद्धांतिक रूप में स्रोत और लक्ष्यभाषा-दोनों भाषाओं की बुनियादी इकाइयाँ विशिष्ट एवं अतुलनीय होती हैं।
3. दोनों भाषाओं के बोलने और सुनने तथा लेखक और अनुवादक की अपनी-अपनी स्थितियों का यदि सही-सही जायजा लिया जाए तभी आपसी संवाद संभव है।

इसी संदर्भ में अनुवादविज्ञानी कृष्ण कुमार गोस्वामी ने भी कहा है कि अनुवाद में स्रोतभाषा की सूचनाओं का लक्ष्यभाषा में न्यूनानुवाद या अधि-अनुवाद (under translation or over translation) हो जाना स्वाभाविक है। कभी-कभी तो अशुद्ध अनुवाद (mistranslation) भी हो जाता है। अतः अननुवाद्यता और सीमाओं के कारण अनुवाद को पूर्ण अनुवाद की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

3.5 पाठ की प्रकृति के स्तर पर अनुवाद : सीमाएँ एवं अननुवाद्यता

प्रत्येक लिखित पाठ 'साहित्य' नहीं होता। यह सर्जनात्मक होता है तो प्रयोजनपरक एवं प्रकार्यात्मक भी हो सकता है। स्रोतभाषा की सामग्री को जब अनुवादक लक्ष्यभाषा में अंतरित करने की प्रक्रिया की ओर उन्मुख होता है तो सर्वप्रथम वह स्रोतपाठ की मूल प्रकृति अर्थात पाठ का संबंध किस विषय या क्षेत्र से है; यह देखता है। साथ ही यह भी देखना अपरिहार्य हो जाता है कि पाठ की सामग्री का संबंध किस विधा से है? यह साहित्यिक है अथवा साहित्येतर। यदि साहित्यिक है तो कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, समीक्षा, निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, जीवनी, डायरी और अन्य हो सकता है; यदि यह साहित्येतर है तो यह कार्यालयी, प्रशासनिक, विधिक, वाणिज्यिक, मीडिया तथा ज्ञान के क्षेत्रें से संबद्ध हो सकता है।

इस प्रकार विषयवस्तु और कथागत विधाओं की अनेकता तथा विधा-क्षेत्र विशेष की सामग्री विधान की विशिष्टयों के कारण अनुवादक को अर्थांतरण में अनेक सीमाओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। यहाँ हम साहित्य की विषयवस्तु और विधाओं के आधार पर सर्जनात्मक साहित्य जिसमें भाव, विचार तथ्य मूर्त न होकर सूक्ष्म और तात्त्विक होते हैं, उसके अनुवाद में आने वाली चुनौतियों पर चर्चा करेंगे।

कार्यालय साहित्य में आने वाली अननुवाद्यता संबंधी सीमाओं पर अपना ध्यान यहाँ केंद्रित करना संगत होगा। कार्यालय साहित्य, प्रशासकीय साहित्य तथा विधिक, वैज्ञानिक एवं संसदीय साहित्य के अनुवाद की अपनी विशिष्ट शब्दावली एवं प्रयुक्तियों के कारण अंतरण के समय बहु-आयामी चुनौतियाँ उत्पन्न करता है, क्योंकि इसमें अभिधा

का ही प्रयोग मान्य है, लक्षणा या व्यंजना का नहीं। एकार्थकता, असंदिग्धता तथा संक्षिप्तता आदि इसके विशेष गुण हैं।

विश्व की अप्रतिम प्रगति के कारण वैज्ञानिक साहित्य सृजन में न केवल गति आई है अपितु निरंतर नए विषय और क्षेत्र उभर कर सामने आ रहे हैं, अतः इन क्षेत्रों के साहित्य की भी अपनी पारिभाषिक शब्दावली विकसित हो रही है। इन क्षेत्रें के साहित्य का अनुवाद अधिक नहीं हुआ है, अतः अनुवाद का यह एक वृहद् आयाम खुल रहा है तथा अनुवाद प्रक्रिया में अपनी ही तरह की अननुवाद्यता की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इस क्षेत्र में मूल संकल्पना का अनुसरण करते हुए ही अनुवाद किया जा सकता है।

3.5.1 साहित्यिक पाठ के स्तर पर अनुवाद

साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यकार समाज-संस्कृति का व्याख्याता। अपनी दृष्टि या मनोवृत्ति को साहित्यकार विशिष्टशैली में अभिव्यक्ति देता है। इस प्रकार साहित्य में जहाँ एक ओर दृष्टि से जन्म लेने वाली विषयवस्तु का महत्वपूर्ण स्थान होता है वहीं दूसरी ओर उस विषयवस्तु की विशिष्टशैली अपना अन्यतम स्थान रखती है। अनुवादक का यह परम दायित्व बन जाता है कि वह साहित्यिक सामग्री की विषयवस्तु एवं शैली दोनों का अनुवाद करें। अतः साहित्यानुवाद करते हुए सर्वप्रथम स्रोतभाषा की सामग्री का सतही दृष्टि से अध्ययन एवं मूल्यांकन किया जाता है, तत्पश्चात उसका शास्त्रीय अध्ययन कर सामान्य एवं विशिष्ट अर्थों को ग्रहण किया जाता है। अर्थ ग्रहण के पश्चात् सामग्री में निहित बिंब, प्रतीक, अलंकारों की परतें खोली जाती हैं। उनका लक्ष्य भाषा में अनुवाद करने हेतु पर्याय-चयन, शब्द-संपदा एवं अभिव्यक्ति पद्धति को महत्ता दी जाती है। ऐसे में अनुवादक आवश्यकतानुसार भावानुवाद, शब्दानुवाद या सारानुवाद करता है और साहित्यानुवाद को संभव बनाता है। साहित्य में समाज, संस्कृति एवं ज्ञान के विविध रूप आते हैं, अतः भाषिक, शास्त्रीय या सामाजिक भिन्नता मिलने पर अनुवादक, अननुवाद्यता के स्तर पर पहुँच जाता है। यही अननुवाद्यता की स्थिति अनुवादक के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। इस चुनौती का समाधान अनुवादक कैसे निकालता है; आइए, इन बातों पर उदाहरणों सहित विचार करें।

साहित्य का आदि एवं सर्वाधिक प्राचीन रूप पद्य या काव्य का है। काव्यानुवाद सबसे कठिन, श्रमसाध्य एवं लगभग असंभव-सा दिखने वाला कार्य है। काव्यानुवाद में न केवल मूल-भाव एवं दृष्टि की रक्षा करनी होती है वरन अभिव्यक्ति शैली को भी बनाए रखना आवश्यक होता है। काव्य में सबसे पहली सीमा पर्याय चयन से संबंधित है। कवि के मूल भाव तक तो पहुँचा जा सकता है किन्तु उसी मूल-भाव को उसी आकर्षण के साथ एवं प्रभावशील रूप में प्रकट कर पाना कठिन है। विशेषकर यदि रीतिकाल के कवियों का उदाहरण लिया जाए तो उन्होंने दोहे में अनेक प्रकार के भावों को प्रकट कर अनुवादक के समक्ष कई कठिनाइयाँ पैदा की हैं; यथा बिहारी कवि का एक दोहा उल्लेखनीय है :

''कहत नटत रीझत खिझत मिलत खिलत लजियात।
भरै भौन मे करत हैं नैनन ही सब सौ बात।।''

यहाँ प्रार्थना, नकारना, प्रेम, खीझ, मिलना, खिलना, लज्जित होना आदि अनेक भाव एक साथ दो पंक्तियों में वर्णित किए गए हैं। ऐसे भावों को दो ही पंक्तियों में उचित पर्याय द्वारा वर्णित नहीं किया जा सकता। किन्तु फिर भी सोमनाथ जैसे कवियों ने संस्कृत के ग्रंथों का काव्यानुवाद कर उस भाव-गरिमा की भी रक्षा की है। यथा वाल्मीकि रामायण के अनुवाद का एक मार्मिक अंश इस प्रकार है -

''भूय एवं महातेजा हनूया-पवनात्मजः।
अन्नवीत्प्रक्षितं वाक्य सीता प्रत्ययकारणात्। - वाल्मीकि रामायण

पवनपूत हनुमान पुनि बोल्यौ तेज उदार।
सिय प्रतीति के काज कपि g~ oS उर में अविकार।" - अनुवाद

अनुवादक एक सर्जक भी होता है जो मूल रचना के भाव-शैली को अपने में समाहित कर नवीन प्रभावमयता के साथ चित्रित करता है। उमर खैयाम की रुबाइयाँ इसका स्पष्ट उदाहरण हैं जिनका अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों भाषाओं में अर्थ-भाव एवं शैलीपरक अनुवाद हुआ -

आमर सहेर निदा जे मयखान-ए-मा।
के रिंद ख्राबाती व दीवान-ए-मा।
बरखेज कि पुरकुनेम पैमाना जे मय,
जाँ पेश कि पुरकुनद पैमाना-ए-मा।

Dreaming when Dawn's left hand has in the sky
I heard a voice within the tavarn cry
Awake, my little ones, and fill the cup
Before life's liquor in its cup be dry. - अंग्रेजी अनुवाद

वाम कनक कर ने उषा के
जब पहला प्रकाश डाला
सुना स्वप्न में मैंने सहसा
गूँज उठी यों मधुशाला
उठो-उठो ओ मेरे बच्चो
पात्र भरो न विलंब करो
सूख न जावे जीवन हाला,
रह जावे रीता प्याला। -हिंदी अनुवाद

कवि या साहित्यकार वस्तुतः अपनी कविता द्वारा लाक्षणिकता एवं व्यंग्यात्मकता को भी प्रकट करता है। अनुवादक उसी भाव-भूमि पर पहुँच कर उचित शैली एवं काव्यात्मकता द्वारा व्यंग्यात्मकता को वर्णित करता है। अनुवादक यहाँ शब्दानुवाद न कर लाक्षणिक प्रयोग अथवा व्यंग्यात्मकता की रक्षा करते हुए सटीक अनुवाद करे अन्यथा कलात्मकता नष्ट होगी और गलत अनुवाद होगा। अतः साहित्य स्तर पर विशेष ध्यान की आवश्यकता है।

काव्य में लय के साथ-साथ बिंब, कल्पना, रस आदि का भी प्रयोग होता है। यही कारण है कि काव्य से सहृदय शीघ्र आकर्षित एवं प्रभावित होता है। अतः काव्यानुवाद करते हुए उपर्युक्त तत्वों की रक्षा करना आवश्यक है। प्रत्येक कवि की कल्पना-बिंबात्मकता का मूलाधार उसकी दृष्टि होती है। यह दृष्टि कवि-विशेष के समाज में प्रचलित रूढ़ियों पर आधृत होती है। इसी दृष्टि के आधार पर वह सौंदर्य, मधुरता आदि को अनुभव करता है। चूँकि लक्ष्य भाषा और स्रोतभाषा का सांस्कृतिक-सामाजिक दार्शनिक परिवेश पूर्णतया भिन्न होता है अतः ऐसे में काव्य-विशेष में प्रयुक्त अलंकारों का अनुवाद अनुवादक के समक्ष चुनौती बनकर खड़ा हो जाता है। भारतीय परंपरा में अलंकारों का प्रयोग करते हुए चरणों की कोमलता की तुलना कमल से की गई है किंतु यह आवश्यक नहीं कि अंग्रेजी, जर्मनी, रूसी आदि भाषाओं में भी 'कमल' को कोमलता का ही सूचक माना जाए। ऐसे में अनुवादक यदि शब्दानुवाद करता है तो वह असंगत अनुवाद होगा जबकि छायानुवाद एवं भावानुवाद करने पर यह सीमाओं का अतिक्रमण कर सकता है। अलंकारों के अंतर्गत शब्दालंकारों का अनुवाद सबसे कठिन एवं दुःसाध्य माना गया है। यथा - कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं -

(1) हरि बोल्यो, हरि ने सुन्यौ
हरि गयो, हरि के पास
हरि कूदयो, हरि मिल्यो
हरि हो गयो उदास

(2) कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।

उपर्युक्त उदाहरणों में से पहले उदाहरण में 'हरि' शब्द एक है परन्तु उसके सात भिन्न-भिन्न अर्थ हैं जिससे एक विशेष प्रकार का आकर्षण उत्पन्न हो रहा है। दूसरे उदाहरण में 'कनक' के दो अर्थ है - सोना और धतूरा। इन दोनों का अनुवाद किया जाए तो वह प्रभाव दूसरी भाषा में उत्पन्न करना असंभव है क्योंकि हर भाषा के शब्द-भंडार एवं वर्ण-योजना भिन्न होती है। ऐसे में अनुवादक या तो व्याख्यात्मक पद्धति का सहारा लेकर भावानुवाद करता है अथवा इस असंभव से दिखने वाले अनुवाद का शब्दानुवाद कर गलत अनुवाद को जन्म देता है। इसके अतिरिक्त

उपमा अलंकारों का अनुवाद करने की भी कोशिश की गई है। यथा - 'कोमल-सी आवाज', 'फूल-सा चेहरा', 'हिरणी-सी चाल', 'झील सी आँखें' का अंग्रेजी में क्रमशः 'Voice like a nightingale's melody', 'Face like a flower', 'gait like a dear', 'eyes like a lake' आदि रूप में देखने को मिलता है।

कविता में भाव या रस को प्रधानता दी जाती है। रस से लय या ध्वनि उत्पन्न होती है। यही ध्वनि पाठक-वर्ग को आकर्षित करती है और मूल-भाव को ग्रहण करने के लिए बाध्य करती है। अतः अनुवादक के समक्ष रस, लय और मूल-भाव का सामंजस्य बिठाकर अनुवाद करना चुनौती बन जाता है। मूल रचना में कवि ने जिस भाव विशेष पर बल दिया हो वह अनुवाद में भी अवतरित होना चाहिए। मूल रचना में शृंगार, शोक, करूणा, वीर, घृणा आदि भावों का संयोजन हो सकता है। अनुवादक को भी ऐसे ही भावों का निरूपण करना चाहिए अन्यथा अनुवाद असफल ही कहा जाएगा। इन भावों के संप्रेषण हेतु कवि अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना शब्द-शक्तियों का आवश्यकतानुरूप आश्रय लेता है। इन तीनों के अंतर को जान मूल-भाव के अनुरूप ही अनुवाद किया जाना चाहिए। जॉन कीट्स की दो पंक्तियों का यतीन्द्र कुमार द्वारा किया गया अनुवाद इस संदर्भ में दर्शनीय है -

It a touch sweet pleasure mealtth
like to bubbles when rain patleth

आनंद मधुर तो गल जाता छूने से,
पानी में जाते फूट बगूले जैसा

उपर्युक्त उदाहरण में मानव-जीवन की क्षण भंगुरता का विश्लेषण लाक्षणिक शैली में एवं विरोधाभास रूप में किया गया है। यतीन्द्र कुमार ने इस लाक्षणिकता की रक्षा करते हुए हिंदी की प्रकृति के अनुरूप मूल-भाव सहित दोनों पंक्तियों का बड़ा सुंदर अनुवाद किया। ऐसे अनुवाद बहुत कम हैं किन्तु यही अनुवादक के सम्मुख कठिनाइयाँ उत्पन्न करते हैं।

इसी प्रकार गद्यानुवाद में भी विशेष सावधानी की आवश्यकता है। गद्यानुवाद में वाक्यों की संरचना व्याकरणिक आयाम पर भी अभिव्यंजित की जाती है। यथा कई बार समान-से दिखने वाले शब्द रूप अलग अर्थों को प्रकट करते हैं -

(1) देखते-देखते मेरी आँखे दुख गईं
(2) देखते-देखते दिन बीत गया।

उपर्युक्त दोनों उदाहरणों में 'देखते-देखते' शब्द रूप का प्रयोग भिन्न अर्थों में हुआ है। पहले उदाहरण में समय का अधिक रूप प्रकट हो रहा है जबकि दूसरे उदाहरण में समय के जल्दी बीत जाने का भाव प्रकट किया जा रहा है। इस प्रकार शब्द-रूप एवं शब्द-चयन का गद्यानुवाद में विशेष महत्व है जो अनुवादक के लिए कड़ी चुनौती भी है। गद्यानुवाद विशेषकर यदि नाटकों का अनुवाद करना हो तो ऐसे में पात्रों के संवाद, भाषा-शैली, वातावरण-चित्रण आदि का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। नाटक एक संवादात्मक रचना है जिसमें पात्रों का अंतर्बाह्य व्यक्तित्व, कार्य-व्यापार, आपसी द्वंद्व आदि की अभिव्यक्ति संवाद द्वारा ही की जाती है। नाटक को अपने लिखित रूप से निकलकर रंगमंच की प्रक्रिया के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचना होता है तथा आलेख के साथ-साथ संगीत, रोशनी प्रभाव, कथ्य-गेयता आदि आयाम भी जुड़ते हैं। पात्रों की सामाजिक, शैक्षिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि भी जुड़ जाती है। सभी का परिपाक ही 'नाट्यतत्व' में परिणत होता है। नाटक योजना तथा अर्थ तत्वों का अनुवाद एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। प्रत्येक पात्र की अपनी एक विशिष्ट और पृथक शैली है एवं उसका वाक्य-प्रयोग परिवेश के अनुरूप होता है। अतः नाट्य साहित्य का श्रेष्ठ अनुवाद वही कर सकता है जो समाज एवं संस्कृति के वैविध्य से परिचित हो, राष्ट्र एवं प्रदेश की भाषागत सूक्ष्मताओं का ज्ञाता हो तथा आम जनता के व्यवहारों और आभिजात्य वर्ग की गतिविधियों की अच्छी जानकारी रखता हो। नाट्यानुवाद करते हुए वस्तुतः आंचलिक अभिव्यक्ति का ध्यान रखना परम आवश्यक है। यह आंचलिक अभिव्यक्ति भाषा-समुदाय का विशेष अर्थ संजोए रहती है। नाटकों की अलग-अलग विधाएँ हैं। माध्यमों की आवश्यकताएँ भी अनेक है। अनुवादक को विधा-विशेष, यथा श्रव्य (रेडियो) दृश्य-श्रव्य (टेलीविजन), मंच आदि के लक्ष्य वर्ग की जानकारी होना जरूरी है। नाट्यानुवाद एक प्रकार

का रूपांतरण है और यह अनुवादक से पर्याप्त सर्जनात्मकता की माँग करता है। कभी-कभी यह नई कृति जैसा भी प्रतीत होता है और मूल का सहपाठ जैसा बन जाता है।

गद्य में कथा और औपन्यासिक साहित्य का अनुवाद भी एक कठिन कार्य है। सर्जनात्मक प्रक्रियापरक इस उद्यम में अनुवादक से अपेक्षा रहती है कि वह अनूदित पाठ में पाठ को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करे ताकि पूरी कथा का आभास बराबर बना रहे। मूल कथा को लक्ष्यभाषा के सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेशानुकूल बनाने के लिए उसके साथ कुछ प्रयोग भी किए जाते हैं; परंतु यह कार्य अनुवादक से पर्याप्त कौशल की माँग करता है और उसमें पर्याप्त सर्जनात्मकता भी होनी चाहिए। कथा साहित्य में अनेक अवसरों पर समतुल्य भाषिक अभिव्यक्तियाँ परिवेशगत सीमाओं के कारण नहीं मिलती है अतः उन्हें ठीक से 'Site' करने की गुंजाईष बनी रहती है। To sit her side का अर्थ, उसके साथ बैठने की अपेक्षा-उसके सिरहाने बैठना अधिक संगत है। इसी प्रकार कथा साहित्य में लोकोक्तियों और मुहावरों के प्रयोग प्रचुर मात्रा में होते है; इनके अनुवाद में भी देशीय अर्थ ग्रहण की अपेक्षा होती है। आगे इस पर विचार से हम चर्चा करेंगे। स्रोतपाठ की शैलीगत विशेषता से भी अनुवाद की सीमाएँ बन जाती है। अलग-अलग भाषाओं में शैलियाँ अलग-अलग अर्थ-छायाएँ लिए रहती है अतः उन्हें अनूदित करने हेतु रचना की कालजयिता तथा परिवेश के प्रति अनुवादक में पर्याप्त संवेदनषीलता की अपेक्षा होती है। प्रेमचंद की कहानियों अथवा होमर, फिटजजेराल्ड और अन्य वरिष्ठ साहित्यकारों द्वारा सृजित शब्द संस्कार और रचना विन्यास अनुवाद की दृष्टि से आसान नहीं हैं।

इस प्रकार गद्यानुवाद की संरचनात्मक अभिव्यक्ति के साथ-साथ शब्द-चयन एवं आंचलिकता का विशेष महत्व रहता है। वस्तुतः साहित्य मानव जीवन की अभिव्यक्ति है तथा उसका अनुवाद श्रमसाध्य कला है। ध्वनि, प्रतीक, संरचना, लय, ताल, शब्द, संदर्भ, समाज-स्वरूप एवं शैली के अनुरूप भाषिक अभिव्यक्ति का संवादात्मक अनुवाद करना चुनौती का कार्य है जिसमें रचनात्मकता बनी रहनी चाहिए। रचनात्मकता ही वस्तुतः इस अनुवाद की सीमा एवं आवश्यकता भी है।

3.5.2 साहित्येतर पाठ के स्तर पर अनुवाद

साहित्येतर सामग्री का अनुवाद साहित्यिक अथवा सृजनात्मक साहित्य से अपेक्षाकृत भिन्न होता है। साहित्येतर सामग्री के अंतर्गत कार्यालय, विधि, वाणिज्यि, विज्ञान, जनसंचार आदि आते हैं। वास्तव में सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद हेतु जो गुण अथवा विशिष्टताएँ आवश्यक मानी जाती हैं वहीं गुण-विशिष्टताएँ साहित्येतर अनुवाद में दोष बन जाती हैं। सृजनात्मक साहित्य के अंतर्गत अनुवादक मूल शब्द के स्थान पर अपनी भाषा में उपलब्ध पर्यायों में से किसी भी उपयुक्त शब्द के चयन में पूर्ण स्वतंत्र होता है किन्तु साहित्येतर अनुवाद में ऐसा संभव नहीं है। साहित्येतर सामग्री की मानक शब्दावली तो मिलती है किंतु अनेक शब्द ऐसे हैं जिनके कई पर्याय दिए गए होते हैं, ऐसे में अनुवादक अपनी सुविधानुसार एक ही मूल शब्द के लिए भिन्न-भिन्न पर्यायों का प्रयोग करता है।

3.5.2.1 कार्यालयी साहित्य के स्तर पर अनुवाद

कार्यालयी अनुवाद का संबंध सांवैधानिक उपबंधों, विविध सरकारी, गैर-सरकारी एवं निजी कार्यालयों में हो रहे अनुवाद से है। कार्यालयी अनुवाद का पहला रूप सांविधिक नियमावली तथा उनके अधीन बनाए गए फार्मों, करारों आदि का हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद होता है। वहीं दूसरी ओर भारत सरकार की न्याय व्यवस्था से संबंधित साहित्य को छोड़कर शेष जितनी विधीतर स्थायी सामग्री है उसके अनुवाद को असांविधिक अनुवाद के अंतर्गत लिया जाता है। इसमें संहिताएँ, मैनुअल या नियम पुस्तिकाएँ आदि सम्मिलित हैं। कार्यालयी अनुवाद की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है जिसका अनुपालन परम आवश्यक है।

कार्यालयी अनुवाद मुख्यतः सूचना प्रधान साहित्य है, अतः इसमें शैली से संबंधित इतनी समस्याएँ नहीं उठतीं जितनी उसके स्वरूप से संबंधित हैं। कार्यालयी अनुवाद की सबसे पहली सीमा पारिभाषिक शब्दों से संबंधित है। उदाहरण के लिए Receipt के लिए रसीद, आवती दो रूप, Civil के लिए दीवानी, सिविल व्यवहार, आम (नागरिक) तीन रूप प्रयोग में लाए जाते हैं। वहीं कुछ अंग्रेजी शब्द ऐसे भी हैं जिनके एक ही हिंदी पर्याय मिलते हैं। यथा,

बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह' में Aggression vkSj Attack के लिए एक ही हिंदी रूप 'आक्रमण' मिलता है। 'Aggression' उत्साह का रूप है जबकि Attack हथियार आदि से लैस होकर वास्तविक हमले को कहा जाता है। अतः अनुवादक यदि अर्थ को समझे बिना इनके पर्याय का प्रयोग करता है तो अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

कार्यालयी या प्रशासनिक साहित्य के साथ-साथ विधि संसदीय और वैज्ञानिक व तकनीकी साहित्य के अनुवाद में भी अनुवादक सीमाओं से बँधा होता है, क्योंकि इसमें द्वयार्थकता या संदिग्धता के लिए कोई अवकाश नहीं होता है। विधि और सांविधिक साहित्य तथा संसदीय साहित्य की अपनी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली होने से इसमें प्रामाणिकता, मानकता के साथ-साथ विधि और न्यायालय की संकल्पना को बनाए रखना आवश्यक है। संसदीय साहित्य का संबंध कार्यपालिका और न्यायपालिका दोनों से होता है। साथ ही इसका संबंध आम जन से भी होता है; तकनीकी साहित्य होने के कारण इसके अनुवाद में अलग-अलग समतुल्य का प्रयोग नहीं किया जा सकता। कोरम, रिपोर्ट, कंपनी, लॉबी आदि तकनीकी शब्दों के अन्य समतुल्यों नहीं हैं। हाँ इतना अवश्य है कि अनुवाद करते समय अनुवादक लक्ष्यभाषा की संरचना और वाक्य-विन्यास प्रकृति के अनुसार उसे अभिव्यक्त करने में स्वतंत्रता ले ले। कार्यालयीन भाषा का प्रयोग जन-सामान्य के लिए भी होने से इसकी जनोपयोगी एवं जन-सुलभ शैली का होना वांछित है परंतु एकरूपता मानकता और सर्व-स्वीकृतता आदि पक्षों की अनदेखी नहीं की जा सकती है।

3.5.2.2 मीडिया साहित्य के स्तर पर अनुवाद

प्रेस या मीडिया का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मीडिया वास्तव में एक अलग विषयक्षेत्र है तथा उसकी कार्य-प्रणाली कार्यालयों जैसी होते हुए भी उनसे अलग देखी जा सकती है। मीडिया में वैसे तो अनुवाद से संबंधित अनेक समस्याएँ दिखलाई देती हैं, किंतु सबसे बड़ी समस्या विज्ञापनों के अुनवाद की हैं। समाचारपत्र हों, अथवा पत्र-पत्रिकाएँ, आज के दौर में विज्ञापनों की भरमार देखी जा सकती है। ये विज्ञापन वस्तु को आधार बनाते हैं तो पाठक-श्रोता के आकर्षण का केंद्र भी होते हैं। इसलिए इनका अनुवाद करते हुए शब्द-चयन महत्वपूर्ण है जिसके अभाव में वस्तु एवं विषय दोनों के साथ खिलवाड़ हो सकता है। कुछ उदाहरणों द्वारा हम स्पष्ट करेंगे कि विज्ञापन के अनुवाद की सीमाएँ कितनी अधिक हैं और इसमें सावधानी बरतने की गंभीर आवश्यकता है :

(1) Vanilla Ice Cream : A dish of Summer
वनीला आइसक्रीम : गर्मियों का तोहफा

(2) Race against time
समय का मुकाबला दौड़/समय के साथ होड़

(3) Live life kingsize
जिन्दगी जीएँ शान से

(4) A more car per car
एक कार जिसमें समाये आपका संसार।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विज्ञापन के क्षेत्र में 'शब्द' का महत्वपूर्ण स्थान हैं। उपर्युक्त विज्ञापनों में अंग्रेजी के मूल वाक्य से भिन्न हिन्दी का अपनी वाक्य-योजना है जो विज्ञापन को आकर्षक बनाती है।

3.5.2.3 वैज्ञानिक और तकनीकी साहित्य के स्तर पर अनुवाद

विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार से एक बड़े साहित्य भंडार को विकासशील एवं विकसित विश्व में मुख्य धारा की भाषा से सह-भाषाओं अर्थात अन्य भाषाओं में अंतरित करने की आवश्यकता उभर रही है। अतः वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद के संदर्भ में सीमाओं पर चर्चा करना आवश्यक प्रतीत होता है। विज्ञान से अभिप्राय विशेष ज्ञान है है; अर्थात सत्य का अन्वेषण। विज्ञान एक विस्तृत प्रयुक्ति होने से इसकी अपनी भाषा-शैली है तथा इसका व्यापक क्षेत्र है। इसके विभिन्न प्रकार की प्रयुक्तियाँ अथवा उप-प्रयुक्तियाँ सम्मिलित हैं। विज्ञान की भाषा विशेष रूप से ज्ञान की पुष्टि हेतु प्रयुक्त होने वाली तथ्यपरक संदर्भ भाषा होती है। यह प्रत्यक्ष और क्या तथा कैसे पर केंद्रित होती है। यह अपनी परिभाषा शब्दावली होने से अभिधात्मक होती है।

विज्ञान की भाषा विषयपरक अर्थात शाखा विशेष यथा; भौतिकी, रासायनिकी, वाणिज्यिकी, जैविकी, वैज्ञानिकी, अभियांत्रिकी, प्रौद्योगिकी आदि किसी एक विशेष से संबंधित होने से वर्णनात्मक होती है। 'सुनामी' के वर्णन में प्रयुक्त भाषा में भौगोलिकी, सागर विज्ञान, भौतिकी आदि बहु-विधि विषयों की समावेशित जानकारी पूर्ण होगी, अतः इसके अनुवाद में केवल स्रोतभाषा या लक्ष्यभाषा का ज्ञान पर्याप्त होगा अपितु ज्ञान की शाखा विशेष की जानकारी भी अपरिहार्य होती है। संकल्पनात्मक एवं व्यवहारपरक प्रश्नों के उत्तरों की अपूर्ण जानकारी के अभाव में अनुवाद बोझिल, कृत्रिम और भ्रामक हो सकता है। संक्षिप्तियाँ और प्रतीक तथा संकेत वैज्ञानिक साहित्य में व्यापक रूप से प्रयुक्त होते हैं, इनके विशेषार्थ होते हैं तथा अलग-अलग संक्रियाओं के बोधक होते हैं, इनका अनुवाद काफी कठिन होता है। आरेख तथा समीकरण भी कम जटिल नहीं होते हैं। इनके लिए पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग होता है।

वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद में लक्ष्यभाषा के प्रयोक्ता वर्ग की रुचि, स्तर, यथा-शोधार्थी, स्कूल, कॉलेज अथवा शिशु-वर्ग आदि के अनुरूप भाषा-शैली में विज्ञान की गूढ़-संकल्पना तथा उभरते प्रश्नों के उत्तरों से युक्त अनूदित पाठ का निर्माण करना एक बड़ी बाधा भारतीय विज्ञान साहित्य परिदृश्य में पाई गई है। ऐसे में आवश्यकता है ऐसे अनुवादकों की जो न केवल स्रोतभाषा और लक्ष्यभाषा में निष्णात हों अपितु विषय-ज्ञान क्षेत्र से भी सुपरिचित हों तभी सार्थक साहित्य का निर्माण हो सकता है।

3.6 सारांश

यह निर्विवाद सत्य है कि अनुवाद कर्म एक श्रम-साध्य उद्यम है। अनुवाद में सीमाएँ एवं अननुवाद्यता सदैव रहती है। अनुवाद करते हुए अनुवादक को प्रयुक्तिपरक एवं भाषिक सामाजिक और सांस्कृतिक भेदों के कारण उत्पन्न अनेक सीमाएँ दिखाई देती हैं। अतः अनुवादक का यह परम दायित्व बनता है कि भिन्न प्रकृति के मध्य संतुलन बनाए रखने के लिए वह इन सीमाओं के संबंध में चिन्तन-मनन करें एवं उसका उचित समाधान खोजकर अनुवाद को सृजनशील बनाए रखे। इस इकाई द्वारा हमने जाना है कि -

- अनुवाद की सीमा से अभिप्राय अनुवाद न हो पाने वाली अभिव्यक्तियों से है।
- अनुवादक जब सीमा या समाधान में स्वयं को असमर्थ पाता है तो वह स्थिति अननुवाद्यता की स्थिति कहलाती है।
- साहित्य के संदर्भ में समाज-संस्कृति-मूलभाव एवं शैली के स्तर पर आने वाली सीमा का सामना करना पड़ता है।
- लोकोक्तियों - मुहावरे का अनुवाद अनुसृजन की कला के समान होता है।
- आंचलिकता की सीमा भी अपना विशिष्ट स्थान रखती है।

3.7 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिक से अधिक पाँच वाक्यों में दीजिए।

   (क) अनुवाद की सीमाओं का क्या अर्थ है?

   (ख) अननुवाद्यता की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

   (ग) काव्य के क्षेत्र में अनुवादक को प्रायः किस प्रकार की सीमाओं का सामना करना पड़ता है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षेप में (लगभग 100-125 शब्दों में) उत्तर दीजिए।

   (क) सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों का अनुवाद कब अन-अननुवाद्यता के स्तर पर पहुँच जाता है?

   (ख) लोकोक्ति एवं मुहावरों के अनुवाद में आने वाली सीमाओं का उल्लेख उदाहरण सहित कीजिए।

   (ग) अनुवाद की देशीय अथवा स्थानीयपरक समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

3.8 शब्दावली

अननुवाद्यता, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, एकार्थी, प्रत्यायित, संपात, संवर्गबाह्य, अर्थवत्ता, उपभोज्य संस्कृति, पारिस्थितिकीय संस्कृति।

3.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- सुरेश कुमार, अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा, नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन।
- कृष्ण कुमार गोस्वामी, 2008, अनुवाद विज्ञान की भूमिका, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन।
- पूरनचंद टंडन, अनुवाद साधना, दिल्ली : अभिव्यक्ति प्रकाशन।
- पूरनचंद टंडन एवं डॉ हरीश कुमार सेठी, अनुवाद के विविध आयाम, नई दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन।
- नगेंद्र (सं.), अनुवाद विज्ञान सिद्धांत एवं अनुप्रयोग, 1993, दिल्ली : हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय।
- रीतारानी पालीवाल, अनुवाद प्रक्रिया, दिल्ली : साहित्य निधि।
- कैलाश चंद्र भाटिया, अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग, नई दिल्ली : तक्षशिला प्रकाशन।
- सुरेश सिंहल, सृजनात्मक साहित्य का अनुवाद : स्वरूप एवं समस्याएँ, नई दिल्ली : सार्थक प्रकाशन।
- सुरेश सिंहल, अनुवाद : संवेदना और सरोकार, दिल्ली : संजय प्रकाशन।
- Bassenet, Susan, (2002) Translation Studies, Delhi : Routledge.
- Catford JC, (1965) A Linguistic Theory of Translation, London : OUP.